दिव्य दृष्टि

(निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना)

दिव्य दृष्टि

लालदेव कामत



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

DIVYA DRISHTI (दिव्य दृष्टि)
Collection of Maithili Research Papers Criticism by Sh. Laldeo Kamat

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

दाम : 300/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-93135-33-9

समर्पण

अग्रज भाय स्व० सुभक लाल कामत जीकेँ श्रद्धांजलि रुपेँ समर्पित अछि ई मैथिली पोथी,जिनकर स्मृतिमे ६ठम "सगर राति दीप जरय" कथा साहित्य गोष्ठी हटनी पुस्तकालय में आयोजन भेल रहय।



ऊँ शांति!! सत्-सत् नमन!!

भवितव्य

प्रसिद्ध समाजकर्मी श्री लाल देब कामत जी बड़ जतनसँ आजादीक अमृत महोत्सव वर्षमे अमर स्वाधीनता सेनानी सभकेँ स्मरण केलाह अछि। समाजसेवी आ स्वतंत्रता सेनानी बाबू अनन्त लाल कामतजी, समाजवादी जगदीशबाबू आओर भूतपूर्व राज्यपाल धनिक लाल मण्डलजी आदिक जीवनी लिखकय, राष्ट्रकवि दिनकरजी, कथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु आदि लेखक-कविगणक बिसरल भुलल कृर्तिकेँ उजागर करैत अनेको आधुनिक लेखकीय कलम वीरक आ समकालीन लेखकक विषयमे हुनकर रचनाक मादे 'दिव्य दृष्टि' पोथी माध्यमसँ पाठकक समक्ष अनलैन अछि। हिनक वृहद् मैथिली पोथीमे पान, माछ, मौध आ मखानक उत्पादन सन्दर्भमे विशेष जनतब पाबि मिथिला धन्य-धन्य भेल अछि। आनो-आन सारगर्भित तथ्य पढ़ैत ऐ पुस्तकमे हजारो व्यक्तिक नाओं, स्थानक नाओं आ वस्तुक शुभसंज्ञा देखएमे आएल हन। एहिक उपयोगिता विद्यार्थीगणकेँ अध्ययन लेल वेश सहायक हेतैन। खाश कय शोधकर्त्ता शोधार्थी, अन्वेषक, गवेषक आ गवेषिका लोकनिकेँ। एहि तरहेँ प्रबन्ध-निबन्ध समालोचनाक पोथी श्री लाल देव कामतजी आरो अहिना अनवरत लिखैत रहता से आश अछि। हिनक लेखन क्रम चारि दशक पूर्वसँ चलैत आबि रहल छैन। फेसबुक पेज आ वाइट्सएप ग्रूपमे सेहो अपन मौलिक साहित्यिक रचना दैत रहै छथि,कए बेर हमरो पढ़ैक मौका भेटि जाइत अछि। पढ़ि हमरा खूब नीक लगैत रहैए। कतेको पत्र-पत्रिकामे आर्टिकल्स छपैत रहै छैन। हम करवट पत्रिकामे 'कोसीक त्रासदी' आ स्व. रामफल चौधरीजीक बारेमे आलेख लिखने छेलौं। पूर्वमे हम मैथिली कार्यक्रममे दरभंगा रेडियोसँ वार्ता 'संयुक्त राष्ट्र संघ' सन्दर्भमे केने रही। सरौती कालेजक प्रिंसिपलसँ ओकालत पेशामे एलापर मातृभाषा लिखब-पढ़ब पाछू छुटि गेल। निर्मलीमे डॉ. उमेश मण्डलजी अपन आ अपन पिताजीक लिखल मैथिली भाषाक पोथी देने रहैथ, से कहियोकाल अवकाश पाबि पढ़ैत रहै छी। लालदेवजीकेँ चारि-पाँच तरहक मैथिली पुस्तिका वेश अहगरसँ पाबि अपना डेरापर आएल बहुतरास मुव्वकिल आ सर-कुटुमक बीच बिलहल। माइयक भाषाक प्रति हमरो अनुराग कम

नहि अछि।

निर्मलीक पावन धरतीपर भारतक प्रधानमंत्री आ कविवर श्रीमान् अटल बिहारी वाजपेयीजीक आगमन भेल रहैन। ओ समृद्धशाली मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल करबाक हमरा सभक चीरप्रतिक्षित माँग-पत्रपर सहानुभूति पूर्वक विचार करबाक सद्इच्छा पुर्वक घोषणा धरि केने छलाह। मैथिली आब बोली वाणी नहि, एकटा स्थापित भाषा आ साहित्यक लेल जानल जाइत अछि। एहि भाषामे लालदेव कामतजी प्रायः अनेको पुस्तक, अनेको विधामे लिखि चुकल छैथ, से जानि अति प्रसन्नत हएब स्वभाविक। हिनक विलक्षण पोथी सभ पल्लवी प्रकाशन, निर्मली, सुपौलसँ होइत रहलैन अछि से आरो आह्लादकारी बात थिक। मंगल कामनाक संग हम हृदयसँ बधाइ दइ छिऐन।

- सूर्य नारायण कामत

पूर्व सदस्य- बिहार राज्य अति पिछड़ा वर्ग आयोग, पटना ।

(सन्देश)

मैथिली साहित्यकार लालदेव कामतजी की अद्भुत समीक्षा-शैली

फुलपरास विधानसभा क्षेत्र, मधुबनी, बिहारक वरिष्ठ लेखक और कवि श्री लालदेव कामत सर ने मैथिली भाषामे तीन पुस्तको की समीक्षा सहित मेरी भी समीक्षा कर डाले हैं, समीक्षा' बहुत कौतुक व अच्छा' है, श्री लालदेव सरजी के प्रति हृदयश: आभार प्रकट करता हूँ। समीक्षा यह है-

'गणित डायरी' (1998)क युवा लेखक श्री सदानन्द पाल दू दशक धरि अहर्निस भऽ 67 टा पोथी पत्रिकाक अध्ययन कए हिंदी साहित्य संसारक अक्षय भण्डारकेँ अपन नव पोथी पूर्वांचल की लोकगाथा गोपीचन्द अनमोल कृतिसँ भरला अछि। लोक आस्थाक प्रतीक सारंगि केर उन्नायक गोपीचन्दपर लेखककेँ परिवारीक सदस्य सँ सेहो खूब खुराक भेटलैन, पोथीमे पूर्वी क्षेत्र, साहित्य आकादमीक क्षेत्रिय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेशजीक लिखल भूमिकामे प्रेमार्पण झलकै छै आ पोथीमे शामिल 8 टा पाठमे पाठक लेल नीक उर्जा स्रोत भेटै छै, बावजूद पालजी आग्रह वश लेखकीय निवेदनमे पाठक लेल अपन गप कहैत समीक्षाक हेतू सेहो एकटा उदगार व्यक्त करैत भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयीजीक पातींसँ–

'आहुति बाँकी, यज्ञ अधूरा
सपनों के विघ्नों ने घेरा
अन्तिम जय का वज्र बनाने
नव दधीचि हड्डियां गलाए
आओ फिर से दीया जलाएं।'

भाव धाराकेँ प्रवाहित केलाह अछि। गोपीचन ऊर्फ गोपीचन्दपर विस्तृत शोध लेखन हेतु संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार लेखककेँ फेलोशिप (2007-

08) प्रदान केने छइ। आओर गोपीचन्द पर नव प्रतिमान लैत पैघ कविताक पांडुलिपि प्रकाशन अनुदान स्वीकृति (वर्ष 2015) इस्वीमे मन्त्रीमण्डल सचिवालय (राजभाषा विभाग) बिहार सरकार धरि उद्यत भेल रहैए प्रस्तुत पोथीक पाठमे पाठकर्कें 152 टा दोहा तुकबन्दी भेटत। संगहि डेढ़ साए शब्दक अर्थ पन्नाक (कविताक) क्रमांक 152 गोट बुझाएल गेल छै, जेकर मिलान करैत सुलभ ढंगे पाठक वर्ग असहज होइसँ बाँचत। किताबमे नव आयाम जे जोड़ल गेल छै ओ गीतांजलि प्रणेता विश्वकवि रवीन्द्रनाथ नाथ ठाकुरजीक दृष्टिमे (बाउल गान) जेकर गीतांजलिमे प्रकाशित हिन्दी अनुदित गीतक भाव देल गेल छइ। टिशनभासी लोकसभ लग जे सारँगी तान केर महत्व छइ। पूर्वोत्तर राज्यमे, सएह नेपालमे धुन्ना आ बंगालमे बाउल गान पूर्वांचल पट्टीमे अभिहित अछि।

अइ पोथीक लेखक अपन बाबा स्मृतिशेष योगेश्वर प्रसादजीकेँ सादर समर्पित केने छैथ जे महर्षि मेहीँ बाबाक शिष्य छला आ स्वाधीनता सेनानी सेहो रहल छला। लेखक श्री पाल साहब नव युवाकेँ वहिक्रममे सत्संग-योग (चारिभाग) मे महर्षि मेहीँ पदावलीक समीक्षा लिख चुकल छैथ, जे पद उक्त पोथीमे द्रष्टव्य भेटत। संगहि लोकगीतकार रामश्रेष्ठ दिवानाक फक्कड़ योगी’गोपीचन्द’क मादे पूर्वांचली 17 गोट पद पंक्तिबद्ध भेल छै, आओर दोसर कवयित्री स्वर्णलता ‘विश्वफूल’ लेल अइ तरहेँ पाँति अछि–

‘शायर की बिहार सौंपकर तुझे
तान छेड़ेगी उल्फ़त की गलीमे तेरी
अपने दर्द बयाँ को धुन-धुनकर
मेरी सजनी की अटरियामे छुम छुमकर।’

अइ तरहेँ पदमे लेखकक बहिन सुप्रसिद्ध कवयित्री स्वर्णलता ‘विश्वफूल’ केर तँ तीन गोट लोकगाथा-काव्य अवलोकन करबामे आओत। दोसर बहिन अर्चना कुमारी जे केंद्रीय सूचना आयोगमे बाद दायर करएवाली पहिल महिला थिकीह, सेहो अइ पोथी लेल काज केने छैथ।

गद्यमे पूर्व डाककर्मी श्रुति लेखक काली प्रसाद पालजीक रचना धार्मिकताक सेहो दर्शन पएब जे लेखक केर अनुवांशिक पिता तँ छथिए जे लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड होल्डर सेहो छैथ। हुनका अहमदाबादमे किशोरी गोस्वामीजी आ

सुखसागर गोस्वामीजी गाथा सुनने रहैन।

भारतक प्राचीन सभ्यता आ विविध संस्कृतिक 5000 बरख पुरान इतिहास रहलै। जाहिमे मानए पड़त जे कतेको धर्मक सम्प्रदाय आ जाति-उपजाति एक संग समाजमे अइ। समन्यवय करैत ऋतु मौसम मिज़ाज आ जलवायु विविधाकेँ जीबैत भौगैत 21वीं सदीमे एकताबद्ध छइ। तेकर मूलतः कारण छै मिथिलांचलक लोकजीवन विशेष कऽ कोशी नदी कातक निवासी जे लोकगाथाकेँ संयोगने अछि, से छी माँ शारदे वीणासँ समकक्ष वाद्य यंत्र शारंगी जे धोना बजाबय वाला जोगी अपना घरसँ त्रिया लटारहमसँ फराक भए गुरु गोरखनाथ आ भरथरी हरि आओर गोपीचन्द केर कर्म योगक दर्शन गामेगाम प्रदर्शन करैत जनभाषाक लोक गाथा गाबि जीयाकेँ रखने छइ। अइपर वृहत गवेषणात्मक अध्ययन आगू हुअए तइले जीनियस सदानन्दजी अपन अभिक्रम सँ डेग आगू बढ़ा देलैन अछि।

मधुबनी पेंटिंगसँ गुदरी बाबाजीक कलाकृति देखैत बनत आ सरहवादक जन्मभूमि सहरसाक माटि-पानि जे रसल बसल गोपीचन्द नाच, गोपीचन्द गाथा, लोकगीत आ गोपीचन नाथ उर्फ़ राजा गोविन्द चन्द्र पाल केर लोक कथा सुनल जाइछ से मैथिली आ अंगिका मिश्रित अपभ्रंश वाणी छइ। पूर्वांचल केर मानचित्र बनल अइ पोथीमे अछि, जेतए पूर्वांचली लोकभाषा कतेको राज्यक मिजहरसँ बनैत बाजल जाइ छै, तेकर प्रमाणिकता तँ ताकए पड़त। अइ पोथीमे समस्त हिंदीक स्थापित साहित्यकारक सरोकारकेँ चिन्हेबामे लेखक सफल भेला अछि। तँए ई पोथी पुस्तकालय हेतु संग्रहणीय थिक। बहुत रास राज्य केर परिभ्रमण करैत लेखक परिपक्व छैथ आ अपन अनुभव केर सहकार परोसलैन अछि। पोथीक अनेको संस्करण सालेसाल हुअए से आशा करैत मंगल कामना करैत छी। ❑

- डॉ. सदानन्द पॉल

(Sadanand Paul) शिक्षक

मणि भूषण राजूजीक सन्देश

जन्मदिन विशेष- श्री लालदेव कामत, नौआबाखर, घोघरडीहासँ पत्रकार,समीक्षक संगे लेखक थिकाह। श्री लालदेव कामतजी मिथिला-मैथिली हेतु हृदयसँ समर्पित लोकमे एक छैथ। समसामयिक हर घटनापर बारीकीसँ नजैर राखि सोशल मीडिया आ सम्पर्क मीडियाक माध्यमसँ अपन विचार स्वतंत्र रूपसँ सतत रखैत रहै छैथ।

सह संपादक–कोसी सन्देश (मैथिली पत्रिकाक) छथि आओर हिनका द्वारा रचित विभृति (भाजपासँ सम्बन्धित) मैथिली पोथी छी।

हमसब हिनका एकटा सम्पूर्ण समाजसेवीक रूपमे जानइ छी। फुलपरास विधानसभासँ पूर्व विधायक प्रत्याशी (2005 प्रथम) रहि चुकल छैथ। वर्तमानमे जिला अति पिछड़ा मोर्चा, झंझारपुर भाजपामे महामंत्री छथि आ सतत बाबूजीक पुस्तकालय हेतु हिनक सहयोग भेटैत रहैत अछि। सम्पूर्ण कहबाक तात्पर्य ई अछि कि मिथिलामे सम्पूर्ण परिवार एहेन बहुत कम छथि जे मैथिलीसेवी होइथ। लालदेव कामतजी सपरिवार मैथिलीसेवी छैथ। हिनक अनुज महाकान्त प्रसाद (+2 वाटसन हाई स्कूल मधुबनी), जेष्ठ सुपुत्र सुभाष कुमार कामत, माझिल सुपुत्र कैलाश कुमार आनन्द सेहो हृदयसँ समर्पित मिथिला–मैथिलीक अभियानी छथि आ मैथिली साहित्यक एकटा उभरैत सितारा छैथ।

आइ जन्मदिनक सुअवसरपर श्री लालदेव कामतजी केर समस्त मैथिल मञ्च परिवारक तरफसँ ढाकी भरि बधाइ आ शुभकामना। माँ भगवती अहाँकेँ दीर्घायु देथि आ अहाँ हमरा सभकेँ सतत मार्गदर्शन करैत रही यएह इच्छा अछि हमर सभकेँ।

- मणि भूषण राजू

Maithil Manch. Donate Us

8826566136

manchmaithil@gmail.com

दू आखर

दिव्य दृष्टि मैथिलीमे हमर पाँचम पोथी छी। अइसँ पूर्व चारि प्रकाशित पुस्तिकाक रूपैँ निकैल चुकल अछि। जइमे एकटाकैँ आइ एस बी एन प्राप्त नहियोँ रहने कापीराइट हमर थिक। हमरा अपन मौलिक रचनाक कमी नहि अछि, परञ्च टाकाक अभाबे सभ पाण्डुलिपि परता पड़ल अछि। तैयो चाहब जे निबन्धक, आलोचना'क आ प्रबन्धन विषयपर पृथक-पृथक पोथी प्रकाशित हुअए। संस्मरण, लघुकथा, बीहैन कथा आ आत्मकथा सेहो कोनो प्रकाशक अपना खर्चपर छापय तँ टंकित मैटर तैयारे अछि। वर्तमानमे उपन्यास लेखन काज लगिचाएल अछि। प्राय: नव कविता आ प्रगीत'क अनेक पाठक फेसबुक पेज पढ़ि प्रशंसा केलैन अछि। मिथिलासँ बाहर राज्यक-देशक यात्रा प्रसंग, मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद यन्त्रनालयमे देने छिऐक। कदाचित नगदमे मैथिली पोथी पाठक हाथे बिका जाएत तँ, ओही कैंचासँ अप्रकाशित कृति नौआबाखर- देवनापट्टीक गरज तथा नौआबाखर केर डायरी ई दुनू निश्तुकि छपाए कऽ रहब। प्रस्तुत अइ पोथीक पहिल खण्डमे थोड़ेक चुनि पाठकैँ 'दिव्य दृष्टि' मैथिलीमे हमर पाँचम परियास पोथी बाबत छी। पाठकक बीच आनबाक लेल पल्लवी प्रकाशन निर्मलीक व्यवस्थापक आ मैथिली कर्मी डॉ. उमेश मण्डल सहित दिल्ली स्थित अलवर्ग प्रोपराइटर मैथिली सेवी कुसूम कान्तकैँ धन्यवाद दइसँ अपनाकैँ केना रोकि सकब! हम साभार व्यक्त करैत छिऐन प्रिंट आ इलेक्ट्रॉनिक मीडियाक सम्पादक/मैनेजर महोदय सभक प्रति, जे समय-समयपर सद्य: प्रकाशित अइ दिव्यदृष्टिमे संग्रहित किछु आलेख; पोथी समीक्षा अपन पत्र-पत्रिकामे प्रमुखताक संग स्थान देलैन हेन।

अस्तु, इन्टरनेट माध्यमसँ हमरा प्रति जन्मदिनपर चर्चा करैत शुभ कामना, सन्देश प्रेषित केनिहार मैथिली-हिन्दी ले अगुआ बनल साहित्य आन्दोलनकैँ जाज्वलमान नक्षत्र आ अभिभावक महोदय केर स्वागत करैत छिऐन। मैथिली लेखक-पाठकसँ निहोरा जे कतिपय मुद्रण त्रुटि सुधारिकऽ पढ़ैथ आओर प्रतिक्रिया व्यक्त करैथ।   ..जय मैथिली! जय साहित्य!!

- लालदेव कामत

हटनीश्वर महादेव स्थान- हटनी

2 अप्रैल 2022

अनुक्रम

अनन्त बाबू अमर रहे!

अपना काने सुनने रहिऐ, आँखिये देखनौं रहिऐन- एक खद्धरधारी बाबाकेँ सभ करैथ प्रणाम। मुहसँ सेहो बाजैथ- 'गोर लगैत छी महात्माजी!'

हम हुनका बारेमे विस्तृत जनतब हुनक पारिवारिक सूत्रसँ कहियो काल लिअ लगलौं। बादमे हुनका परोक्ष भेलासन्ता अनन्त सेवा संस्था आओर अनन्त जीवन ज्योति संस्थानक सूचना पाबि जयन्ति कार्यक्रममे पहुँच कऽ विद्वान वक्ता लोकनिक अवगत होइत, तथ्यसँ सेहो मानसिक खुराक पाबि। हुनक जन्मोत्सवपर अपन रचल सोहर गायन प्रस्तुत कऽ एक साल सेहो स्रोताजनकेँ मैकसँ सुनौने छिऐन। तेकर विशद् चर्चा एतय सम्भव नहि अछि, तेँ मूल पोथी पाठक पढ़ि सकै छी। मिथिलाक मधुबनी जिलाक हृदयस्थली कहल जाइ छइ। अइ जिलाक पच्छिम क्षेत्र साम्यवादी आन्दोलन आ पूर्बी भाग समाजबादीक प्रयोगके धरती कहल गेल छइ। झंझारपुर लोकसभा क्षेत्रक प्रसिद्ध गाम-गड़वामे बाबू अनन्त लाल कामति जीक जन्म दि. 19 जनवरी 1911 ई.क भेलैन। हुनक माता रहथिन गजनी देवी आ पिता रहथि हरिनन्दन कामति। ओइ समय केर शिक्षित व्यक्ति श्री अनन्त लाल बाबू नवजुवक वयस क्रममे देशप्रेमी भऽ गेला। हुनक प्राथमिक शिक्षा परोसी गाम इनरबा आ हुलासूपट्टी विद्यालयसँ सम्पन्न भेल रहैन। ओ 1927 इस्वीमे मीडिल पास-निर्मलीसँ कएने छला। प्रतंत्र भारतकेँ गुलामीसँ त्राण दियेबाक लेल ब्रिटिश शासन केर विरूद्ध शंखनाद भेले रहए। देशक आजादीक धमक पाबिते 1930 इस्वीमे ओ गाँधीजीक नरम दलमे शामिल भऽ गेला। 1932 इस्वीमे विदेशी वस्त्रक वहिष्कार आन्दोलन केलैन। सन 1934 इस्वीमे प्रलयंकारी बाढ़ि पानिक एवम् बड़का भूमकममे देशरत्न डॉ. राजेन्द्र बाबूक संग भुकम्प पीड़ितक सहायतार्थ राहत पहुँचेबामे सराहनीय भूमिकाक निर्वहन केलैन। 1935 इस्वीमे जिला काँग्रेस कमेटी दरभंगा क सदस्य चुनेला। 1940 इस्वीमे राष्ट्रीय काँग्रेस'क 53 वाँ रामगढ़

(हजारीबाग) अधिवेशनमे बतौर जिलाक प्रतिनिधिक रूपमे भाग लेलैन। 1941 इस्वीमे दरिभंगा जिला परिषदक वाइस चेयरमैन बाबू खुशी लाल कामतजीक संग अभिन्न अंग बनि, 1942 इस्वीमे महेश्वर लाल व्यास दासजीक संग पुरैत देवनाथपट्टी-नौआबाखरमे जातीय महासभा आयोजन केलैन। 7 अगस्त 1942 इस्वीकेँ पूज्य बापू महात्मा गाँधीजीक अध्यक्षतामे मुम्बईक राष्ट्रीय कार्यकारिणीक बैसक केर पारीत प्रस्ताब अनुसारे 'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो' आन्दोलनक जनतब पाबिते ओ आओर सक्रिय रूपसँ अभियानमे लागि गेला। झंझारपुरमे छात्र तथा आम लोककेँ संगठित कऽ ओतुका थानापर तिरंगा फहरा देलैन।

लोकक मनमे देशभक्तिक भावना जगाबैत 17 अगस्त 1942 इस्वीकेँ फुलपरास थाना आ अवर निबन्धन कार्यालयक कागजातकेँ नष्ट कऽ' देलैन। आरो संगीक साथ रेलक पटरी आ टेलीफोन सेवाकेँ क्षति पहुँचेला। अनन्त लाल कामत एवम् हुनक आन साथीक खिलाप मोकदमा दायर भेलइ। ओ आज़ादीक अलख जगाबैत नउ मास नेपालमे शरणार्थी मांछी बनल रहला। जखन ओ अपन पैतृक गाम आपस एलाह तँ गामेक गाछीमे रहैथ। से गौंआँ एक साफीजी पुलिसकेँ बता देलकैक जे ओ तँ आमगाछपर चढ़ल रातिभरि नुकाएल रहैत अछि। अंग्रेजक पुलिस गिरफ्तार करैत लऽ जा लागल, तँ हुनक दादीजी आध मन चानीक गहना कोतबालक हाथ छोड़बैले पठेलखिन।

परञ्च तैयो घोघरडीहा राज कचहरीसँ आरो सिपाही सभ (गोरा पल्टन) आबि चाँदी सहित हुनका लऽ गेलैन। जहलसँ सात मास बाद 1943 इस्वीमे जमानतपर रीहा भेला। फेरोसँ स्वतंत्रता आन्दोलनमे जुटि गेला। 26 जनवरी 1945 इस्वीकेँ जागेश्वरस्थान (हुलासपट्टी)मे अपना सहयोगी गरम दलक स्व. रसीक लाल यादव सभक संग तिरंगा ध्वज फहरेबाक जुर्ममे गिरफ्तार कऽ लेल गेला। देशक आजादिक बाद जेलसँ छुटि कऽ घर सुरक्षित आबि सकलाह। 1948 इस्वीमे जयप्रकाश नारायणजीक नेतृत्वमे समाजवादी पार्टीमे मिजहर' होइत रचनात्मक काज करय लगलाह। वएह पार्टी बादमे शोसलिस्ट पार्टी कहाओल। गामक रूग्न व्यक्ति सबहक इलाज लेल सेहो चिन्तित रहै छला। होम्यो मेडिकल कॉलेज और चिकित्सालय, लहेरियासरायसँ दिनांक

29/10/1949 इस्वीकेँ एचएमडीएस सर्टिफिकेट हुनका प्राप्त भेल रहैन। सुलभ सस्ता उपचारमे होम्योपैथिक ईलाजकेँ बढ़ावा दैत प्रचार- प्रसार केलैन आ अपना परिवारसँ डॉ. राम नारायण कामत जीकेँ आगू बढ़ेला। अइ प्रजा शोसलिस्ट पीर्टीसँ ओ 1967 इस्वीमे फुलपरास विधानसभा क्षेत्रसँ विधायक लेल चुनाव लड़ल छला। चुनाव हारैसँ पहिले ओ सन्त विनोबा भावेजीक भूदान आन्दोलनमे भूमिहीनकेँ बेजमीनक कलंक मेटेबा लेल अगुआ बनल रहला। साँगी पंचायतक जनता हुनका निर्विरोध सरपंच बनेलैन, तँ 21/6/1961 इस्वीमे मुजफ्फरपुरसँ सप्ताह दिनक आवासीय प्रशिक्षण प्राप्त कऽ गाम-गाममे न्याय करय लगला। श्रीमती इन्दिरा गाँधीजीक प्रधानमंत्रीत्व कालमे पूर्वी पाकिस्तानसँ बंगला देश बनलापर जहन् ओतए स्वाधिनता सेनानीगणकेँ सम्मान पेंशनक घोषणा भेल, तँ भारतोमे ताम्रपत्र धारी बनेबा ले बहुतो स्वाधिनता सेनानीकेँ सम्मान पेंशन देबाक काज भेल रहए। हिनको तइ मादे आवेदन पत्र विधायक मा. देव नारायण गुरमैता आ सांसद मा. योगेन्द्र झाजी दि. 22/7/1962 इस्वीक अनुशंसा कऽ अग्रसारित केने रहैन। सदस्य विधानसभा मा. सूर्यनारायण सिंह हिनका बारेमे व्यक्तिगत रूपें पत्र लिखैत कहने छैथ, जे कामतजी 1942 इस्वी केँ भारत छोड़ो आन्दोलनमे 7-8 मास जहलमे आ पूर्वमे भूमिगत हमरा संगै रहए। दि. 10/9/1972 इस्वीकेँ हिनका पत्र पठाबैत बिहार विधानसभा एवम् स्व. से.सा. समिति पटना दिशसँ मा. हरिनाथ मिश्र सुचित केलकैन जे हमरो समितिसँ अपनेकेँ लाभ भेटत। दि010/5/1973 (वृहस्पतिवार) आर्यावर्त अखबारमे स्वतंत्रता सेनानी सम्मान पेंशन विषयमे प्रमुखतासँ समाचार छपल रहइ। जाहिमे हिनको नाम-पता स्पष्ट लिखल रहैन। अइ सन्दर्भमे हुनका रजि. पत्र सं. 14 डी 136383 दि., 24/5/1973 गृह मंत्रालय भारत सरकार केर लेखा विभागक जनतब देल गेल छलन्हि। दि. 17/10/1961 इस्वीकेँ घोघरडीहा प्रखण्डसँ झंझारपुर शाखा -बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक लेल परामर्शदात्री पर्षदक बतौर सदस्य निर्वाचित भेल छला। गुदरीक लाल बिहारक भुतपूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत कर्पूरी ठाकुरजी सँ नीक सम्बन्ध रहैन जहन हुनक पत्नीक देहांत भऽ गेलैन, तँ अनन्त बाबू एक सान्तवना-पत्र पटना पठेलैन। तहिक प्रत्युत्तरमे ठाकुरजी

हुनका अपन भाई सम्बोधित करैत, एहन सहानुभूति लेल 8/8/1984 इस्वीमे एक पत्रसँ उदगार व्यक्त केने रहैन। जे पत्र स्वतन्त्रता सेनानी सह अध्यक्ष, बिहार प्रान्तिय कैवर्त्त (केवट) महासभा ग्राम गड़वाक पतापर पहुँचल रहैन। अनेक प्रेरक संस्मरण हुनका उपलब्धिमे जरमिझर छैन। दि015/6/2002 इस्वीकेँ अइ महा मानव केँ घरेपर अकास्मिक निधन भऽ गेलैन। अस्तु, मेटाएल पत्तापर हमरो दिशसँ विनम्र श्रद्धांजलि हुनका लग पहुँच जाए, सयह ईष्टसँ प्रार्थना अछि। जिय हिन्द! ! जय जगत। ❑

अनन्त बाबूकेँ सभ करै छैन प्रणाम्

स्वतंत्रताक अमर सेनानी स्व.अनन्त लाल कामतजीक पुण्य स्मरण होइत एकटा चित्र मानस पटलपर अबैत अछि। स्वाधिनताक गाँधी सन मुखाकृतिक आभा आ मोटगर रंगहीन खादीक कमीज-धोती आ चेशमा पहिरने चरखाना गमछा कान्हपर सजल एक माहत्माजीसँ गड़वा गाममे पहिल बेर भेँट करै छी; तँ नाम-परिचय जनला आ पुछैत बजला केतेकमे पढ़ै छी बाऊ। हमरा मुहसँ जे शब्द बहराएल तँ फेर प्रश्न केलैन। पीजी. डीआरडी. करैत एना पाहुन जगदीश कामतजीक संग केतए बौआ ढहना रहल छी। हमर उत्तर सुनि जे इग्नुसँ घरे बैसल पत्राचार कोर्स कऽ रहलौं अछि आ परीक्षा लेल तीन बेरक अवसर देल गेलै, से मुजफ्फरपुर डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालयक लाइब्रेरीमे जा परीक्षा देलौं। ओ आजादीक संग्रामक आ रचनात्मक कार्यक्रमक संग-संग जातीय महासभाक काजक चर्च करैत भाव विभोर होइत रोदन करए लगला...।

हुनक प्रसन्नताक नोरसँ भसियाइत ई समाज मझधारसँ आखिर कहिया धरि कतबाह लागत...। हुनका बारेमे स्व. राम नारायण मण्डलजीक तर्क भेलै रहैन जे ‘दू अध्यायमे आजादीसँ पूर्व आ बादक समय काल खण्डमे कार्यक लेखा जोखा होइक।’ प्रख्यात समाजवादी चिन्तक, विचारक, निरपेक्ष, समाजसेवी, शिक्षा प्रेमी, भारत सरकार, द्वारा ताम्रपत्रसँ सम्मानित स्वतंत्रता सेनानी बाबू अनन्त लाल कामतजीक जन्म स्व. हरिनन्दन कामत एवम् श्रीमती खजनी देवीजीक घर 111 वर्ष पूर्व 19 जनवरी केँ घोघरडीहा प्रखण्डक गड़वा गाममे अति पिछड़ा वर्ग केवट जातिमे भेल रहैन। हुनकर बाल विवाह सूर्यकला देवीक संग भेलैन। जइसँ चारि पुत्र एक पुत्री भेलैन।। ओ सनातन हिन्दू धर्मकेँ मानैत वैष्णव छला। केवट समाज अपन इतिहास जानबाक लालसा जरूर रखैत होएत। बिहार आ नेपालक मिथिला प्रक्षेत्रमे लगधक एक करोड़ आबादीबला कियोट केर केवर्त आ केउट (केवट) जाति नामसँ 1931 इस्वीमे ब्रिटिश हुकूमत सर्वेक्षण करेने रहइ। तहीमे निषाद-मल्लाहकेँ पृथक रूपेँ संख्याँ बल

देखाएल गेलै जे वर्त्तमान कालमे गोंढ़ि सहनी समाज कहबैत अछि। ओ जलचर आ हमसभ थलचर (कृषिकार्य) रूपेँ, अलगे-अलग शादी-विवाहक तत्कालिन सामाजिक संस्कृतिसँ फजगजमे पड़ल छी। ओना मैथिली पंजी प्रथा अनुसारे कूर्मी जातिक अंगक रूपमे केवट, धानुक आ अमातक गणना भेल अछि। मुदा वास्तविकता किछु औरे छइ। गेटे कहने छैथ' राष्ट्रकवि वएह हेता जे देशक सुच्चा अपन जातिक इतिहासक सभ प्रमुख घटनाकेँ पारस्परिक सम्बन्धक सन्धान पाबि गेल होअए। जिनका इहो ज्ञात भऽ सकल होइ जे हुनक जातिय इतिहासमे कोन-कोन नमहर घटना घटित भेल छइ। 'तेकर परिणाम की बहरेलै हेन? हरेक जातिक अध्यातमिक विशेषता होइछ, कोनो संस्कृतिक वैशिष्ट्य होइछ संसार आ जीवनकेँ देखबाक दिव्य दृष्टि होइत अछि। जे कवि अइ दृष्टि-बोधकेँ अभिव्यक्ति दऽ सकए, सएह राष्ट्रक राष्ट्रकवि कहेबा जोकर होइ छै। केवट जातिमे आखिर राष्ट्रकविमे नामीत के भेला अछि? जखन कि बहुतो काव्य रचनाकारक किताब प्रकाशित भऽ रहल छइ। अइले राष्ट्रीय राजधानीमे वृहद, विर्मशक आवश्यकता समय केर मांग छी'। ...अनन्त बाबू आ हुनक संगी मास्टर साहेब आनन्द शरणजी अपना जातिमे राष्ट्रकविक निखार परखए सेहो चलल छला। स्व. शरणजीक स्टेचू बनिकऽ सुन्दर बिराजीतमे सेहो राजस्थानसँ आबि गेल छै, जे स्थापित भऽ अपन लोकक बाट जोहैत अछि।

केवट समुदायमे अन्तर्जातीय बिआह- शादी'क आरम्भ तँ राजनीतिक जागरण केनिहार नेतागण 90केर दशकमे शूरू करेला। केवट पुत्र कऽ प्रतीक रूपेँ किछु अविवाहित युवक नाई, धानुक, अमात, शहनी, धोबी, कोयरी, ब्राह्मण, वैश्य आदिमे प्रेम विवाह भेल। उपरोक्त जातिमे केवट केर बेटी सेहो रजामन्दीसँ बिआह केने अछि। परञ्च जाति नै बदलल, मात्रे ओकर धर्म परिवर्तन भेलइ। हिन्दू केवट घरमे मुसलमान आ ब्राह्मणक लड़की एली तँ अपन संस्कृति संग आनि प्रभावित केली जे परम्पराकेँ तोड़ैत रहली। केवट पुत्री जाहि समाज (जातिमे) मे गेली तँ अपन खानदानी रेवाज, रहन-सहन कऽ प्रभाव ओतए पसारैत गंगा- यमुनी धरोहर अपन संस्कारसँ बढ़ेली। एहेनमे अइ पढ़ल-लिखल जागरूक लोकक प्रति संविधानकेँ पैघौत भेल। आधुनिकतामे लोकपर पछिमी सभ्यता हाबी होइत जाइए। ❑

संस्कृतक विद्वान डॉ. रविन्द्र नारायण चौरसिया केर पोथी

ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालयक लोक सूचना अधिकारी रूपमे बिहार सरकार आ अनेक गैरसरकारी संस्थानसँ सम्मानित डॉ. रविन्द्र नारायण चौरसियाजीक जन्म 2 जनवरी 1970 इस्वीकेँ श्री सूर्य नारायण चौरसियाजी आ श्रीमती कपुरी देवीजीक घर भेलैन। सी. एम. कॉलेज दरभंगाक संस्कृत विभागाध्यक्ष आ एन.एस.एस. तथा रेड रिबन क्लब मिथिला विश्वविद्यालयक कार्यक्रम समन्वयक छैथ। हिनक दर्जनसँ बेसी शोध आलेख प्रकाशित भेल छैन। ई अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन आ अ.भा. दर्शन परिषदक संगहि इण्डियन सोसाइटी फॉर गाँधियन स्टडीज केर आजीवन सदस्य छैथ। हिनक श्लोक प्रकाशन लक्ष्मीसागर-दरभंगासँ 2011 इस्वीमे पहिल हिन्दी पोथी 'पञ्चकन्या' प्रकाशित भेल अछि। जे अपन शासु-श्वसुर परमादरणीय कल्याणीजी आ बालेश्वर चौरसियाजीकेँ समर्पण कएने छैथ। 128 पृष्ठक अइ ग्रन्थक दाम 250 टाका निर्धारित रखने छइ। महिलाकेँ आदरणीया आ पूजनीय कहल गेल हेन। स्त्रीकेँ पुरुषक सहायिका सेहो कहल जाइ छइ। प्रस्तुत कृति नारी विमर्श एवम् महिला सशक्तिकरणक अइ युगमे पञ्चकन्याक प्राचीन चरित्रक आधुनिक प्रासंगिकताक बोध करबैत अछि। आर्षकाव्य-रामायण तथा महाभारतमे भारतीय वांग्मय केर विचारणीय अवधारणा थिक। कन्या कमणीया होइछ से के लऽ जा सकैछ? एहेन चिन्ता निठाहे माए-बाबूक मनमे रहै छइ।

कन्या कमणीया भवति क्व इयं नेतव्येति

कन्याकेँ वैदिकमे दुहिता शब्द देल गेलइ। श्रुतिमे ब्रह्मांडकेँ पञ्चमण्डल युक्त कहल गेलइ। जेना-स्वयं भुमण्डल, सोममण्डल, आदित्य मण्डल, चन्द्रमण्डल आ पृथ्वीमण्डल।

सोमेनादित्या वलिनां। शब्द, स्पर्श, रूप, रस आ गन्ध ई पञ्चतन मात्रा छी। शब्दसँ आकाशक सम्बन्ध, स्पर्शसँ वायु, रूप अग्निसँ युक्त, रस-जलसँ

आ गन्ध-पृथ्वीसँ सम्बद्ध छइ। हिन्दू धर्मग्रन्थ रामायण आ महाभारतमे पञ्चनारीक चरित्र विश्लेषण जे कएल गेल अछि से आध्यात्मिकता आ मनोवैज्ञानिकता केर आधारपर भेल छइ। आधुनिक भाव बोध आ चिन्तन पद्धतिक आभामे एकर आन्तरिक आओर वाह्य चरित्रक पल्लवन परम प्रेक्षणीय होएत। रामायणकेँ सूर्यक भवति महाकाव्य अइ लेल कहल जाइ छै; किएक तँ अइमे सूर्यवंशी श्रीराम केर गाथा वर्णित छैन। नारीक तीन पात्र अहिल्या, तारा आ मंदोदरी रामायणकालिन थिकीह। महाभारतकेँ अग्निक कहल गेलै; किएक तँ एकर नायिका कृष्णाद्रोपदी अग्नि संभूता छैथ। अइकेँ तँए अस्ति काव्य कहल गेल हेन। सद्य प्रकाशित अइ ‘पञ्चकन्या’ पोथीमे द्वयपात्र कुन्ती आ द्रोपदी महाभारत कालीन थिकीह। साधना-इच्छा, ज्ञान तथा क्रियाक रूपमे प्रात:स्मरणीया अहिल्या, तारा, मन्दोदरी, कुन्ती आ द्रौपदीसन पञ्चकन्याकेँ पञ्चनारि सेहो कहि सकै छी; कारण पाँचोँ विवाहिता छैथ। उपरोक्त पाँचो कन्याकेँ मर्यादापुरुषोत्तम प्रभू श्रीराम आ श्रीकृष्ण चन्द भगवानक असीम कृपा भेटलैन।

दैवि अहल्या, द्रौपदि, तारा, कुन्ती, मन्दोदरि धन्या.!

प्रभू की परम अनुग्रह भाजन पावन ये पाँचो कन्या!!

अइ आदर्श पाँचोक महिमा मण्डित नाममात्र उच्चारण वा स्मरण केलासँ महापापक दोषमुक्त होइत अछि।

उपरोक्त पाँचो देवीकेँ परपुरुष कलंकित करैमे अपन वासनाक आगि आ बिनु इच्छाक फरेबपूर्वक स्त्रीत्व नष्ट करबाक धृष्टताक कारणेँ बलात् भोगी महिला जानल जाइत अछि। तँए हिनका सभकेँ मन पवित्र रहने, कर्म अपवित्र नहि मानल गेल छैन। सदा आदर्श नारी रूपेँ समाजेक गिनती होइ, तइले अत्यन्त सुचिता छथिन। कायर पुरुषक भुक्तभोगीक सन्तान वंश पंचकन्याक नाम जपैत प्रभाति गबैत अछि। ❑

हमर आदर्श स्मृति शेष सूर्य नारायण चौधरी

साहित्यकार-पत्रकार आ राजनेताक रूपमे प्रख्यात सूर्य नारायण चौधरीजीक जन्म 12 जनवरी 1933 इस्वीकेँ मधुबनी जिलाक मिर्जापुर (राजनगर) गाममे स्व. रामलखन चौधरीक घर भेल छेलैन। 1950-54 धरि ओ सी. एम. कॉलेजक स्नातकक छात्र रहला। नित्य दिन गामेसँ नोकर खाइक पहुँचबैत रहइ। हिनका बाबाकेँ राजघराना दरभंगासँ सम्पर्क रहै आ पिताजी बादमे घरे लगक महन्तजीक खजांची रहि अपनो दू मौजेक जगह जमीनसँ खेती पैदावार करबैथ। चौधरीजीक पहिल वर्ष गाँठपर बिहारक बड़का भूमकम भेलै जइमे हिनक पैतृक खपरैल भीतघर ध्वस्त भऽ गेलइ। चौधरीजीक बाल-विवाह मरनैया गाममे बरतनि संग भेलैन। जइसँ दू पुत्री आ एक पुत्र भेलैन। बड़की पुत्री रुग्न वीणाक बिआह ललमनियाँ भेलै जे मलहनमा (नेपाल)मे रहै छै आ पुत्र रामबाबूक उर्फ विनोद कुमार चौधरीक बिआह विराटनगरमे खड़ौआ निवासी डॉ. रामजी व्यासक बहिन लक्ष्मीसँ भेलैन। छोट पुत्री निलम प्रभाक बिआह डॉ. अखिलेश मण्डलजीक (मेहंदी गाम) संग भेलैन। जे वर्तमान कटिहारमे रहै छैथ ओ गरभाइत कैवर्त्त समाज छथिन। चौधरीजी मगध विश्वविद्यालयसँ आगूक शिक्षा प्राप्त करैत रेलबेमे नौकरी करए लगला। आ केतेको ट्रेड यूनियन आन्दोलनमे सक्रिय रहि समाजसेवाक अभिप्रायसँ नौकरी छोड़ि देलैन। बेटाकेँ रेलबेमे नौकरी धरेलैथ जे पटना जं.मे 10 वर्षक बाद नौकरी छोड़ि समता पार्टीमे सक्रिय भेलै। आ दू बेर बाबूबरही तथा मधुबनीसँ निर्दलीय चुनाव विधानसभाक लड़लै। पुत्रवधू सेहो जिला परिषदक चुनावमे कम मतक अन्तरसँ हारि गेली। मुख्य विषय दिस अबै छी आब-

समाजवादी नेता सूरज नारायण सिंहजीक नेतृत्वमे संचालित अनेक भूमि आन्दोलनमे ओ सक्रिय रहला। छात्र संगठनमे सेहो समितिक समाजवादी नेतृत्व स्थापित करैत प्रभावकारी भूमिका निभावैथ। सोशलिस्ट पार्टीक प्रचारात्मक एवम् आन्दोलनात्मक काजमे अगुआ रहैथ। बिहार आन्दोलनमे

सक्रिय रहि फणीश्वरनाथ रेणुक संग मिलकए नुक्कड़ कवि सम्मेलन, नाटक आ चित्र प्रदर्शनिक आयोजन पटनामे करैथ। आपातकालमे गामक खेत बेचिकए प्रेस खोललैन। आ गुप्त साहित्यक प्रकाशन, तेकर वितरण सेहो करै छला। जिविका निर्वहन लेल किछु दिन लेल फेरसँ दानापुरमे रेलबेक नौकरी धेलैथ। सूर्य नारायण बाबू बिहारक एक पैघ मेधावी, परिश्रमी आ दूरदृष्टी रखनिहार रचनाकार रहैथ। बिहारक अतिपिछड़ी ऐनेक्सर-1 केवट जातिसँ रहैथ, अइ पृष्ठभूमिसँ कोनो व्यक्ति लेखनमे एतेक नमहर मूल्यक नहि भेल रहैथ। 1969 इस्वीमे रेणुजीक सहयोगे रचना नामक साहित्यक संस्थाक स्थापना केलैन। जेकर ओ सचिव रहैथ।

1981 इस्वीमे कर्पूरी ठाकुरजीक प्रेरणासँ श्री लालू प्रसाद आ सच्चिदानन्दजीक संग राजगृहमे साहित्यकार, बुद्धिजीवी आ राजनीतिज्ञ सभक एकटा मञ्च बना सम्पूर्ण क्रान्ति एवम् कौमी एकता सम्मेलन केलैन। चौधरीजी भारतक सभटा राज्यक यात्रा करैत सम्बन्धित क्षेत्रक लोक जीवनक वृहत अध्ययन केलैन। यात्रा संस्मरण ‘पूर्वांचल की यात्रा’ खूब लोकप्रिय हिन्दी पोथी भेलैन। तइसँ पूर्व समय की यात्रा-परिचय प्रकाशन हापुरसँ प्रकाशित भेल रहए जइपर पुस्तक समीक्षा पाटलिपुत्र टाइम्सक पृष्ठ 4पर 12 जुलाई 1987 इस्वीकेँ डॉ. अमर कुमार सिंह छपबौने रहैथ। चौधरीजी प्रमुख राजनीतिक पत्रिका ‘दिनमान'मे स्थायी रूपेँ 5 धारावाहिक आलेख लिखने छैथ, जे इंटरव्यू, यात्रावृत्तांत रूपेँ छपैत रहलै।

1968 इस्वीमे रेल हड़तालमे जहल गेला आ प्रेसविल विरोधी आन्दोलन एवम् मण्डल आयोगक सिफारिश लागू करेबा लेल आयोजित प्रर्दशनी खातिर अपन गिरफ्तारी देलैन। 1985 इस्वीमे मधुबनी विधानसभासँ चुनाव लोकदल टिकटपर लड़लैथ आ अइ दलक प्रांतीय कार्य समितिमे 1986 इस्वीमे सेहो मनोनीत कर्पूरीजी द्वारा 1989 इस्वीमे भेला। आकाशवाणी आ दूरदर्शनक घेराव कार्यक्रममे हुनका पुलिस बर्बर रूपेँ पिटने रहइ। ओ बहुत वर्ष धरि कॉफी हाउसक अभिन्न हिस्सा बनल रहला।

'बिहार की अस्मिता' पुस्तक शहदरा दिल्लीसँ 1991 इस्वीमे साहित्य

केन्द्र प्रकाशनसँ बहराएल छै जे ओ अपन अधिकार लेल संघर्ष करैबला तमाम बंचितकेँ समर्पित केने छैथ। एकर दोसरो संस्करणक छपाइ केलक, हिनक प्रकाश्यकृतिमे पूर्वांचल की यात्रा, समकालीन परिवेश की काली यादे व एकटा काव्य पुस्तिका छइ। 7 मई 1990 इस्वीकेँ बिहार विधानसभा क्षेत्रसँ एमएलसी जनता दल बनेलकैन परञ्च 14 अप्रैल 1991 इस्वीकेँ अचानक दिल्लीक बत्तरा होस्पीटलमे हृदयगति सदा लेल रूकि गेलैन। हुनकर असामायिक निधनसँ दू दिन धरि पटना दिल्ली दलमलित रहल, किएक तँ ओ सामाजिक न्याय केर लड़ाइ लड़ैबला एक सामाजिक योद्धा रहैथ। एक समय केर प्रतिबद्ध बौद्धिक चौधरीजीक परिवारमे अनुकम्पा नहि भेटलै, जखन कि ओइ समयमे बहुतो राजनेताक वंशज ई सुख पाबैमे अगूएलै। आइ एकटा अदद स्मारक लेल हुनका चाहैबलाक बीच जबरदस्त अभाव खटैक रहल अछि। एहेन प्रखर विद्वान मनीषी मिथिलांचलक एकटा आदर्श छला। शत्-शत् नमन! ❑

(14 अप्रैल 2022 इस्वीमे मै. पु. प्र. अखबारमे प्रकाशित)

सकल समाजक चहेता रामसकल

ओइदिन भोरखन मोबाइल बेल बजिते हमरा बकौर लागि गेल छल। एक घन्टा बाद रसुआर (कियोटापट्टी,) जिला सुपौलसँ अनेको समाद शोक सन्देश आएल, जे स्व. रघुनाथ कामतजी आ श्रीमती मो. अशेसरि देवीजीक 61 वर्षीय जेष्टपुत्र श्री सकलदेव कामत उर्फ राम सकल कामतजीक आकस्मिक निधन भऽ गेलैन। हुनक नेत्र शल्यक्रिया गत सप्ताह निर्मली-बालाजी क्लिनिकमे भेल रहैन। तरदुत पारिवारिक सदस्य लोकनि करिते रहै, कने पान ओ नुका कए अवश्य खाथि से भगवान भरोसे कहियोकाल मीठगर चाह सेहो पीबैसँ नहि छुटैथ। अइ लेल हुनक चारू भाँय आ सभ धीयापुता मनाहियो धरि करैत रहइ। हुनक गामसमाजमे पहिले बड़ गुटबाजी रहै, तहिक हिनकापर कोनुटा असैर नहि रहनि। हमरा सोझा ओझाजीसँ हुनक मित्र मण्डली केतेको बेर वार्तामे ई कहैत मुश्की दैथ, जे किनकर उपराग किनका आइ देलिऐक। तँ ओ बजथिन यौ समांग हम जे हटनी नौआबाखैर (देवनाथपट्टी,) आलापुर मातृक आ सासुर गेलौं, तँ किछु संस्कार सीखिकऽ एलौं। से एतए सदा लेल कृषक हितमे प्रयोग करैत रहब। चाहे कियो हमरा रखबारे ने कहि दिअ। ओ केकरो फसिल किनको पालतू पशु किएक नहि चरि उपटेने होइ, तेकर दशा करैत सामाजिक नियंत्रण करैत रहैथ। एकटा मररजी आ किसान मजदूर हुनका निजी मन्दिर लग बीड़ी-सलाय दोकनदारसँ किनैत रहैथ। जिनका अपना केटलीसँ चाह दोसर गोटे जे चाह नइ पीबै छला, हुनका बिनु कथेक पान आग्रह करैत दैत काल फरिकक गप्प केर उत्तर धरि अइ तरहेँ देने छलखिन- हे होव हमरा लेखे समाज सभसँ बड़ौ। बाऊ (नेताजी)केँ ने राजनीति समाजनीति रहै छै, हम ओइ सभ विचारसँ आगू छी। बाबूजीकेँ स्वर्गबासी भेला सन्ता 45 सदस्यक संयुक्त परिवार संचालित केनिहार ओ स्तम्भ आब चाभी बिनू बतौने कमलजीकेँ सुमझबैत इश्वरकेँ प्यारा भऽ गेला। हमरा विपणतापर हुनका हरसमेत दरेग रहैत छेलइ। से सभ नव पुरान कुटुम्बकेँ

बुझहल छैन। श्रद्धांजली अर्पित करैत बहुतो गोटे शामिल भेला जइमे रायगंजसँ श्री तन्मयजीक सेहो गरिमामयी उपस्थिति भेलैन। हुनकर आखिरी गप्प जे हमरा ओइ दिन भेल से हुनका लेल खादी धोती हम आयरन कराकऽ रखने छी। ओ तँ अपन पारी पुरा देलैन, हम......हमरा ओ 1974 इस्वीमे दू टाका नवकी ललका कथीक खुशीमे पारितोषिक देलैन से किछु नइ बुझिमे आइ धरि आएल। हमरा हर भोँटमे पीठपर हुनक आह्लादित धप्पा पड़ैत रहल अछि। से आब बहनोइ टुगर सेहो भेलौं। अश्रूपूर्ण नयनसँ भावसहित सपरिवार विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करैत छिऐन।

हुनक खानदानी चर्चा : भैरो कामतजीकेँ चारि बेटा छलन्हि, यथा- घोघन ओ बबुआ ओ तालेबर आ झोटन उर्फ भोटन। घोघनजीकेँ दू सन्तानमे हिराय एवम् गोपी रहैथ। गोपीजीकेँ एकमात्र सुपुत्र छलथिन- रघुनाथ नेताजी। हुनका पाँच गोट पुत्र भेलैन क्रमश: राम सकल ओ अर्जुन ओ कमल ओ शिब तथा उमेश। ❑

स्व.हरिनन्दन कामतजीक गाम मंगरौनी

मधुबनी जिला मुख्यालय सँ 3 किलोमीटर उत्तर भाग घना बस्ती अवस्थित छै मंगरौनी। एही आदर्श ग्रामक खतियानमे 250 परिवार केवट (कउट) अमात 50, धानुक 145, मल्लाह 7, नाइ 25, कुर्मी4, बड़इ100, कायस्थ एक घर, सोइत ब्राह्मण 5, ब्राह्मण 60(भलमानुष) केर अतिरिक 100 गृहस्थ ब्राह्मण बसिन्दा रहैथ। अइठाम तप करबाक उद्देश्यसँ आबि सघन गाम भेलै आ किछु लोक अन्तय उपटिकए जा बसला। अध्यात्म क्षेत्रमे स्वर्गीय मदन उपाध्याय तांत्रिक मछिंद्रनाथ जे बाबा गोरखनाथ केर समकालीन छला, हुनके काका पं. गोकुलनाथ उपाध्याय कर्मकाण्ड धार्मिक दृष्टिकोण रखने मिथिलामे प्रसिद्धि प्राप्त केने रहैथ। वर्तमानमे आधा गांव हुनके वंशज बसल छैन। अइ गामक दक्षिण मंगल बोनी रहै जइठाम मौधक बहुतायत उपलब्धि होइत रहै तँए अइ गामक लोक कालान्तरमे मधुबनी नाम उच्चारण करए लगलै। गामक सटले दक्षिणसँ एकादश शिवदर्शन लेल मुख्यतः दूर-दूर धरिक भक्त लोकनिक आगमन होइत रहै छइ। 1957 इस्वीमे पण्डित श्री मुन्नीश्वर झा धर्माचार्य तांत्रिक द्वारा सेबैत पण्डित श्री जय ना. झा ज्योतिषाचार्य कुटी स्थापित केलैन। जे श्री श्री 108 गौरीशंकर राधेश्याम स्थान (देवसभा) कहबैत अछि। धर्मानुरागी-यात्रीकेँ गरमीमे स्वर्गीय मेथरा राउत मधुबनी दाताक बिजली पंखा उपलब्ध छइ। एकादश रुद्र तीर्थ स्थल क्षेत्रमे शुमार भऽ गेल छइ। चौक केर लग मुख्य दर्शनम पापनाशनाय पैघ घांटा लागल दृष्टिगोचर भेल। दहिन भागसँ बसहा आ बामकात सँ शेर पाथर केर बनल छै जे बड़ मनमोहक दृश्य उपस्थित केने अछि। अइ सिंहद्वारक बगलमे आध्यात्म, चिन्तन-पूजन विशाल भवन बीच सभाकक्ष केर प्रवेश मध्यमे त्रिशुल प्रतीक सेहो दर्शनार्थीकेँ आकर्षित करैत अछि। अइ गामक दक्षिणबारि टोलमे बुढ़ी माए स्थान 700 बरस पुरान छइ, मन्दिरक पुनर्निर्माण काज भेलइ। दुर्गाजीक दर्शन लेल परोपट्टाक लोक एतए आबि आशीष मांगैत देखाइत अछि। 200 वर्षसँ पूवारि

टोलमे दुर्गा पूजा दरभंगा महाराजा कालसँ होइत अबैत अछि। पश्चिम टोलमे दुर्गाजीक पूजा प्रधान छइ, एतए खेल-तमाशा नहि लागै छइ। एकर लग सटले पुरान मन्दिर 300 वर्षक छै जे 11 लाख टाका लागतसँ टोलबैयाक आर्थिक मदैतसँ काज सुसम्पन्न भेलइ। एतुका पाखरिक गाछ यात्री लेल आश्रय स्थल रूपैँ विख्यात भेल छइ। अइ मन्दिरक कनेकबे उत्तर भाग माँ काली (श्यामा माइ) मन्दिर आ पैघ पोखैर छइ, तेकर पछबरिया मुहारमे महारानी काम सुन्दरीक नामसँ उत्कर्मित मध्य विद्यालय चलै छइ। महारपर शानदार घाट आ गोल चबूतरा आजादी पुर्वहिक बनल छै जल चबूतराक निर्माण काज तत्कालीन महाराजा कामेश्वर सिंह दोसर बिआह एतए केलैन अपन मनमर्जीसँ एक गरीबक बेटीसँ। हुनके डीहकेँ तँ बनबौलैन उत्कृष्टता आ भूमिकेँ रमणीय बनेबाक परम उद्देश्यमे केने रहैथ। अइ स्थानकेँ राज नगरसँ जोड़िकए विस्तृत अध्ययन करबाक खगौट बुझाइत अछि। अइ गामक नेयायिक सन्दर्भत: चर्चा दोसर पाठमे करब। अइ ग्रामक स्वनामधन्य स्वर्गीय हरिनन्दन कामतजी कोलकातामे खटि 3 कट्ठा जमीन मधुबनी लहरियागंज बाधमे उपार्जन केलैथ जे 1976 इस्वीमे अखिल भारत कैवर्त कल्याण समितिक छात्रावास लेल सम्पूर्ण रकबा दान-पत्र दस्तावेज बनाकऽ दैत अति पिछड़ल समाजक छात्र (केवट) केँ पहिल बेर मधुबनी जिला मुख्यालयमे उपलब्ध केलैन। अइ छात्रावासक निर्माण 3 कमरा 1980 इस्वीमे भेल, जिर्णोद्धार लेल केतेको माननीय राजनेताक ऐच्छिक कोषक सहयोग भेटैत रहलै। फेर दोसरो दाता कियो एहेन अवदानक लेल अइ गाममे आगू आबि स्वर्गीय कामतजीक सहचर बनि अपन नाम जगजियार करैथ से आश जगैतसन भऽ रहल हेन। अइ गामक अपन पैतृक एल. एन. झा सन विभूति कहै छथिन, आ से 5 टा आई. ए. एस. आई. पी. एस. आफिसर एतुका बेटा बनला। श्री विनोद कुमार बिहार राज्य प्रशासनिक सेवा निवृत्त सेहो अइठामक रहबासी थिकाह। अइ गामक माँटिक हम चन्दन बन्दन आओर अभिनन्दन करै छी। ❑

स्वाधिनता सेनानीकेँ शत् शत् नमन!

भारत छोड़ू आन्दोलन केर युवा क्रान्तिकारी रहैथ- अमर शहीद रामफल मण्डलजी। हुनक जनम बिहार राज्य केर सीतामढ़ी जिला अन्तर्गत प्रसिद्ध बाजपट्टी थानाक मधुरापुर गाममे 6 अगस्त 1924 इस्वीमे भेल छलन्हि। हुनक माय गरबी मण्डल आ बाबूजी- गोखुल मण्डल रहथिन। हुनक 16 सालक उमेरमे रुन्नीसैदपुर प्रखण्डक गंगबारा गामक अमीन मण्डलजी क बेटीक संग बिआह भेल रहैन। जइसँ हुनका एक पुत्र रत्न दि. 15/9/ 1942 इस्वीकेँ भाइक सासुर नेपालक एक गाम लछमिनियामे भेल छेलैन, परञ्च ओ शिशु 7 मासक बाद रुग्न भऽ काल कल्वित भऽ गेलइ। ओइ समय मण्डलजी जहलमे रहैथ।

ओ चारि भाँइ छला, यथा- रामशरण, महंथ, आ अपने तहन मिसरी। सब भाय खेती करै छला आ पशु पालन करैत खूब नीकसँ सम्पन्न होइत, पशुक खरीद-बिक्री सेहो करैथ। बाबूजी किरानाक दोकान करैथ। मण्डलजीक प्राथमिक शिक्षा परोसी गामसँ ढबारामे भेल रहए। 14 सालक उमेरमे मिडिल पास केने छला। बालपन अवस्थामे अखराहापर खलीफा सेहो बनल रहैथ। लाठी भाँजैक कलामे निपुण छला। अपना लाठीक मादे ओ सबकेँ इयह कहै छला जे अंग्रेजकेँ अइ लाठीसँ मारि भारतसँ भगाएब। लाठीए हमर बन्दूक थिक। ब्रिटिश शासनसँ उबि कए लोकसब हुकूमतक खिलाफ गामो-घरमे बोलचाल शुरू कऽ देने छेलइ। हुनका गामक कचहरीपर प्रमुख आन्दोलनकरी लोकनि जेनाकि-विन्देश्वरी प्रसादजीकेँ नेतृत्वमे बैसार भेल रहइ। ओहीमे गामक नायक रूपेँ रामफल मण्डल चयनित भेल रहैथ। ओइ गाममे गुप्त कार्यालय आजाद हिन्द फौजक रहइ। तइमे लाठी चलौनाई, बंम बनौनाई आ गुरिल्ला युद्ध'क प्रशिक्षण देल जाइ छलइ। अजादीक आन्दोलनमे बिहार'क भूमिका अति महत्वपूर्ण रहल छइ। देवघर विद्रोह (1857) 'दानापुर विद्रोह ((1857), बिरसा मुंडा-खुँटी (1900), चम्पारण सत्याग्रह (1918-19)आ

करू वा मरू आन्दोलन (1942)तँ बिहार अग्रणी भूमिका निभेनाइ छइ। पहिले दि. 13/6/1857ई. रोहणी, देवघर- झारखण्डमे तीन देशी सैनिककेँ विद्रोह केलापर फाँसी घिचल गेलइ। तहिया बंगाल प्रदेशकेँ भीतर बिहार, आसाम, पच्छिम बंगाल आ उड़िसा रहइ। महात्मा गाँधीजीकेँ अगुआइमे अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी'क अधिवेशन सभापति अब्दुल कलाम आजाद द्वारा जे भेल रहै, तइमे एकटा प्रस्ताब छलै "अंग्रेज भारत छोड़।" अइ अगस्त क्रान्तिक धधरा समुच्चा देशमे पसरलइ। भला कहूं तँ बिहार'क सीतामढ़ी केना पाछू रहैत? 9 तारीखसँ 19 धरि अगस्तक 1942 केर समय बड़ दुखदाई कहल जा सकैत अछि। अंग्रेजी सिपाही आबि बहु-बेटीक इज्जतपर धावा करैत जाइ। खादी भण्डार, बाबा नरसिंह दास आओर रामनन्दन सिंह, मोहन सिंहक घर जरा देलक। पुपरीक दरोगा अर्जुन सिंह उत्पादत मचाबय ले 24/8/1942 इस्वीमे बाजपट्टी अबैबला छेलै, से पता चैलते आन्दोलनकारी सभ गुप्त बैठार बनगाममे आयोजन केलैथ। ओइठाम रामफल मण्डलकेँ शपथ देल गेलैन दारोगाकेँ सबक सिखेबा ले। अइ बातक तथ्यकेँ मुखबीर कियो दरोगाकेँ हँसेरीक तैयारी बाली बात बुझा देलकैक।से ओ कन्निकाटि पेरा बदैल लेलक। ता जुमि गेल एस डी ओ दीप नारायण सिंह, चपरासी दरबेसी सिंह आ पुलिस इन्स्पेक्टर राममूर्ति झा, हवलदार श्याम लाल सिंह। अइ मौकापर सभक बीच सीटी सुनिते फरसासँ गरदैन काटय लागला रामफल मण्डलजी।खूनक फव्बारा देखतहि जीप छोड़ि चालक आदित्य राम पड़ाएल आ जाकए हत्याक आरोप लगबैत मोकदमा दायर केलक। चालक केर वयानपर अमर शहीद स्वतंत्रता सेनानी रामफल मण्डल, बाबा नरसिंह दास, कपिल देव सिंह आ हरिहर प्रसाद समेत 4000 लोकक खिलाफ हथियार राखैक मोकदमा चलय लगलइ। रामफल मण्डलक घरकेँ आगि लगाकर डाहि देलकै आ हुनकर खेती सेहो ज़ोति उपटा देलकैक। तैपर सँ एलान केने रहै जे कियो पकड़तै तकरा 5000 टाका इनामो भेटतैक। तइ लालचसँ हनुमाननगर नेपाल भायक सासुरसँ गाम एलापर कानाफुसि हुअ लागलै। किछु हितेसर लोक कहलकनि फेरो ओतहि चलि जाकए रहू। इण्डियामे अहाँ ऊपर खतरा अछि। ओ नहि मानलैन आ बाजला-हौ औरो अंगरेजबा सबकेँ काटबैक.,....! हुनक मिता दफेदार शिवधारी कुंवर

छलसँ नशा खुआ देलकै आ नीक-नीक गप्पमे ओझरेने रहलइ। रसे-रसे जहन अन्हार हुअ लगलैक तँ बेहोश हालतमे हाथ-गोड़ झीझीर कड़ीसँ बान्हि गिरफ्तारी केलकैक। तिरहुत कमिश्नरी केर मुज्जफरपुर जिला आब 1972 इस्वीक बाद सीतामढ़ी जिला जहलमे कस्टडीमे राखल गेला। गामक बहु-बेटीक इज्जतसँ खैलैत, चन्द तरहक अत्याचार करैत, बुझावन सिंह'क संग बहुतो लोकक गिरफ्तारी केलक संगहि जानकी सिंह केर दरवाजापर पहुँच कए पुलिस गोली मारि देलकैक। प्रदीप सिंहकेँ कालापानिक सजा भेल। बहुतो लोक डरे नेपाल चलि गेलइ।

15 जुलाई 1943 इस्वीकेँ काँग्रेस कमेटी-बिहार राज्य केर बैसकमे रामफल मण्डलजी एवम् आन दोसरोक सम्बन्धमे एस.डी.ओ. इन्सपेक्टर आ आनो पुलिसकर्मी गणकेँ हत्याक आरोपपर विशेष चर्चा भेलइ। कमिटीक आग्रहपर महात्मा गाँधीजी रामफल मण्डल आ आन आरोपीकेँ बँचेबाक पक्षमे क्रान्तिकारिगणक मोकदमा लड़ैबला देशक जानल-मानल बंगालक ओकील सीआर दास आओर पीआर दास दूनु भायकेँ पठौलैन। रामफल मण्डल सहित आन आरोपिक विरूद्ध 473/1942 केर तहत नालीश दायर भेल छेलइ। ओकील महोदय अपना जनैत रामफल मण्डलकेँ खूब नीकसँ सुझाउ देलैन जे अदालतमे जज केर समक्ष अहाँ ई कहबैक जे हम हत्या किनकहु नइ कएल। तीन-चारि हजार लोकमे सँ के मारलकै, से नइ जनै छी। दिनांक 12 अगस्त 1943 इस्वीमे भागलपुरमे जज सी आर सेनी केर कोर्टमे पहिले बहस भेलइ। जहन जज महोदय रामफल मण्डलसँ पुछलखीन-की तों एसडीओ हरदीप नारायण सिंहकेँ खुनी छेँ? तँ ओ गच्छलैन हँ हजूर! पहिले फरसासँ हमही मारलौं। आन लोक सभ हत्या करैसँ इनकार कऽ गेला। बहसक बाद डेरापर ओकिल साहैब रामफल मण्डलपर बिगरैत डांटलक आ बाजला अन्तिम बहसमे जँ फुसि नै बाजबह तँ तोँ बुझह! रामफल मण्डल कहला- साहब! आब नै गड़बरेतैक। तेसर बहसक दौरान जज महोदय फेर पुछलकैन ! एसडीओ केर खून अहीं तँ नहि कएल! हँ हजूर! एस डी ओ कएँ पहिले फरसा हमही मारलौं अछि। अइ तरहेँ एकतारे तीनदिन धरि बहस चलैत रहलैक, परञ्च रामफल मरड़ अधिवक्ता केर लाख समझेलापर फुसि नइ बाजला। भरिसक ओ सरदार

भगतसिंह'क फाँसीक समय देल गेल वाक्-कैँ आत्मसात कए लेने रहैथ- "विचारक शानपर ईनकिलाबक धार तेजगर होइत अछि।" से जज सीआर सेनी रामफलकैँ सजा सुनौलक। फाँसी दइसँ किछु मीनट पहिले जेलर पुछलकै- अपनेक अन्तिम इच्छा की य? ओ उत्तर देलैन -हमर इच्छा यएह अछि जे -अंगरेज हमरा देशसँ बहरा जाए। आ भारत माताकैँ गुलामिक जींजीरसँ सदा मुक्त कए सम्पूर्ण भारतवर्षकैँ स्वतंत्र कए देल करए। भादव मासक पहिल मलेमास दिन ऐतवार 23अगस्त 1943 केर मनहुस भोरकैँ भागलपुर जेलमे 19 साल 17 दिनक वहि क्रममे ओइ गोरनार औंठिया केश बला भारत सपूतकैँ फाँसी पड़ि गेलैन। ओ हौंइसते-हौंइसते फाँसीक फन्दाकैँ गाड़ा लगबैत आ आजाद भारतक निर्माणमे अपन नाम कऽ गेला। अइ महत्त्वपूर्ण जोगदान लेल भारतक नव पीढ़ी हरसमेत मोन राखत। वन्देमातरम्-जयहिन्द!!❑

साहित्य रत्न अनुप लाल मण्डल

कटिहार जिलाक मौजा समेली, टोला चकला मौलानगरमे एक किसान श्री लम्बू मरड़जीक ओइठाम दि. 11/10/1896 इस्वीमे 'पाथरपर दुईब जनमल तेकर शोर भेलइ। ओइ दिन शिशु रूपेँ अनुप लाल बाबूक जन्म भेल छेलैन। तइसँ पहिले हिनक बहिनक जन्म भेल रहै, जे मरि चुकल छेलइ। बाल अवस्थामे बपखौका भऽ गेला। हिनक पालन पोषण बाबा केलखिन आ काका उधो मण्डल अपनेसँ गामक पाठशालामे शिक्षा-दीक्षा शुरू केलैन। 1907 इस्वीमे निम्न प्राथमिक परीक्षा पास कए उच्च प्राथमिक विद्यालय, खैरामे दाखिला लैत 1910 इस्वीमे अपर प्राइमरी परीक्षा पास केलैन। करीब 17 सालक उमेरमे अपना गामक प्राथमिक विद्यालयमे सहायक शिक्षकक नोकरी करए लगला। ओइ साल राजकीय गुरु ट्रेनिंग स्कूल, सब्दलपुर, पूर्णियासँ शिक्षक प्रशिक्षणमे नाम लिखेलैन आ शिक्षक पद 1914 इस्वीमे परीक्षोतीर्ण भेला। आब ओ उच्च प्राथमिक विद्यालय लक्ष्मीपुर काठगोला (कटिहार)मे प्रधान शिक्षकक रूपमे नियुक्त कएल गेला। तेकर बाद 1917 इस्वीमे शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय फारबिसगंजमे हिन्दी शिक्षक पदपर योगदान केलैन अही बीच ओ भागलपुर ट्रेनिंग स्कूलसँ सेहो ट्रेन्ड भेला। पड़ोसी गाम मलहरियाक मध्य विद्यालयमे हिन्दी पण्डित पदपर नियुक्ति भेलासँ लोकमानस बीच पण्डितजी नव नामसँ आह्लादित होइत रहला। नोकरी छोड़ि बनारसमे कालिन कताई बुनाई कऽ अल्प प्रशिक्षण लैत एकटा स्कूलक स्थापना मलहरियामे करैत करघा उद्योगसँ लोकक आर्थिक उन्नति करए लगला, परञ्च अर्थाभावमे फेर अपना हिन्दी शिक्षक रूपमे नोकरी करए बेली इंग्लिश हायस्कूल बाढ़ (पटना) जाए पड़लैन। यएह विद्यालय कऽ परिवर्तित नाम अनुग्रह नारायण सिंह उच्च विद्यालय भऽ गेलै अछि। सन् 1924 इस्वीमे अइ मास्टरीकेँ छोड़ि अनुप लाल मण्डलजी घोष एकेडमी, पटनामे 25 टाका मासिकपर हिन्दी शिक्षक रूपेँ नियुक्त भेला। एतए चारि सालधरि सेवा देलैथ। सन् 1925 आ

26 इस्वीमे पटना सीटी जिला स्कूलसँ वार्षिक आ पूरक परीक्षा देलैन, परञ्च सफल नहि भेला। 1926 इस्वीमे हिन्दी साहित्य सम्मेलनसँ माध्यमा (विशारद) परीक्षा प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेला। तइ समय 1928 इस्वीसँ अनुप बाबू साहित्य रत्न नामसँ प्रसिद्धि पौलैथ। महानन्द उच्च विद्यालय नरही चाँदी-आरामे तीसटका मासपर हिन्दी शिक्षक पदपर कार्यरत भेला। 1929 इस्वीमे अमरचन्द भैरोदन सेठिया विद्यालय बिकानेरमे साठि टका मासिक दरमाहापर शिक्षक भेला, ओइठाम संध्याकालीन कॉलेजक व्याख्याता पदपर 1930 ई. धरि कार्यरत रहला। हिनक जीवन बहुतो संघर्षकेँ अपनामे समेटने छइ। पैघ-पैघ पुरस्कार समयपर भेटल छैन। बरारीमे युगान्तर साहित्य मंदिर पुस्तक प्रकाशन एवम् बिक्री संस्थाक स्थापना केलैन, 1932 इस्वीमे फेर सरदाना स्थानान्तरण करैत भागलपुरमे जमला। व्यावसायिक काजमे अधुरे रहला आ मोन खिन्न भेला सन्ता पछाइत दोकान बोन करए पड़लैन। सन् 1940 इस्वीमे गाँधीजीकेँ व्यक्तिगत आग्रहपर सत्याग्रहमे गेला आ 1942क भारत छोड़ो आन्दोलनमे सक्रिय रूपसँ भाग लेला।

सन् 1950इस्वीमे हिनकर बिहार राष्ट्रभाषा परिषद-पटनाक प्रकाशन अधिकारी पदपर नियुक्ति भेलैन। ओही कौन्शीलक निदेशकगण आचार्य शिवपूजन सहाय, महादेवी वर्मा, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी सन नामी साहित्यकार'क सानिध्य भेटलैन। हुनकर लेखन आ अध्ययन काज क्रमिक चलैते रहलै। 1926 ई.म जातीय पत्रिका ‘कैवर्त कौमुदी’केर दू साल प्रकाशन केलैन। हुनक पहिल उपन्यास थिक निर्वासिता सन् 1927 ई.। हिन्दीमे ‘मीमांसा’ 1930 इस्वीमे उपन्यास बहराएल जइपर 1939 इस्वीमे किशोर साहू ‘बहुरानी' फिल्मक निर्माण काज कएल। स्व.रामवृक्ष वेनीपुरी कऽ शब्दमे ‘अनुपजी डेढ़ दर्जन साहित्यिक कृति गढ़ि रचना संसारमे चारि चान लगेलैन। विश्व विख्यात रेणुजी हुनकासँ प्रेरणा लैत रहला आ अपन ‘मैला आँचल' उपन्यासक पाण्डुलिपि पहिलखेप पटनामे हिनके देखेलैन आ आशीर्वाद प्राप्त केलैन। अनुपजीकेँ ओ सनबाप कहैत रहैथ। 21 सितम्बर 1982 इस्वीकेँ सदा लेल ओ अनन्त यात्री भऽ ब्रह्मलिन तँ भेला, परञ्च अपना समाजमे ओ.बी.सी. सौन्दर्य साहित्य विमर्श लेल वृहद् आयाम दऽ गेला। भारतीय समाजमे ओबीसी

साहित्यक सशक्त रचनाकार भेला कबीर, जे धार्मिक पाखण्डवादक पर्दाफाश करैत श्रमक महत्वकेँ स्थापित केलैन। श्रमशीलजनकेँ सभसँ ऊपर रखैत परजीवी जन्तु सभक लेल व्यगंवाण छोड़लैन। ओना तँ ओबीसी साहित्यक चार्वाक, बुद्धसँ आरम्भ मानल गेल हेन। मध्यकालमे धन्ना भगत, दादू दयाल आ दरिया साहेब धरि ओबीसी लेल लेखन केने छैथ। ओबीसी साहित्य विमर्शमे अनुप बाबूक योगदानकेँ बिसारब किनकोसँ नहि हेतैन, कियाक तँ ओ सभ विधामे साहित्यकार रूपेँ प्रतिष्ठित छला। हुनक रचनाधर्मिताकेँ आगू बढ़ेबामे 21वीँ सदीक दोसर दशकक ओबीसी रचनाकार छैथ- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, डॉ. ललन प्रसाद सिंह, डॉ. हरि नारायण सिंह, हरे राम सिंह आदि। ओबीसी समीक्षक हरि नारायण ठाकुरकेँ जखन लाल बुझ्झकर घनेरो कहनिहार भेटि सकैत अछि तँ हम तेकरा नजैरमे केतेक दूर धरि निमाहल जाएब? अ. भा. कैवर्त कल्याण समिति- कोलकाता, अनुप बाबूक नामपर पूर्णिया विश्वविद्यालय’क नामकरण होइ, तइले प्रस्ताव धरि केने अछि। शत् शत् नमन।



साहित्य अकादमी पुरस्कार 2021

पुरान अखबार देखि सहजे नजैर एक समाचारपर रामेश्वर बाबूक पड़लैन। ओ तइ सुचीमे गौर करय लगला। अंग्रेजीकेँ हिन्दीमे, हिन्दीकेँ मैथिलीमे आ मैथिलीकेँ हिंदीमे भाषान्तर तँ कइये सकै छी। से लागि गेला अवकाश क्षणक सदुपयोग करए। सुचीमे रहै उल्लेखित नाम अइ तरहेँ-

1. असमिया : अनुराधा शर्मा पुजारी
2. बांगला : ब्रात्य बसु
3. बोडो : मोदाय गाहाय
4. डोगरी : राज राही
5. अंग्रेजी : नमिता गोखले
6. गुजराती : यज्ञेश दवे
7. हिंदी : दया प्रकाश सिन्हा
8. कन्नड़ : डि.एस. नागभूषण
9. कश्मीरी : वली मुहम्मद असीर किश्तवारी
10. कोंकणी : संजीव वेरेंकार
11. मैथिली : जगदीश प्रसाद मण्डल
12. मलयालम् : जोर्ज् ओणक्कूर
13. मणिपुरी : थॉकचॉम ईबॉहनबी सिंह
14. मराठी : किरण गुरव
15. नेपाली : छविलाल उपाध्याय
16. ओड़िआ : ह्यषीकेश मल्लिक
17. पंजाबी : ख़ालिद हुसैन

18. राजस्थानी : मीठेश निर्मोही

19. संस्कृत : विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय'

20. संताली : निरंजन हाँसदा

21. सिंधी : अर्जुन चावला

22. तमिल : अंबइ

23. तेलुगु : गोरटि वेन्कन्ना

24. उर्दू : चंद्रभान ख़याल। ओ पंगुकेँ राजकीय भाषा हिंदीमे स्वीकृति पाबि अनुवाद करैमे जुटि गेला। कारण हुनकर बहुतो कथा आ अइ सुचीक विविध विधाक सयटासँ फाजील मैथिली पोथी पढ़ि चुकल रहैथ। यथा-

1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा-कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी-प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाए, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखैर, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. भकमोड़, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिजी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा

आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. बीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पैरुख, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दोहरी हाक, 80. सुभिमानी जिनगी, 81. देखल दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलतोड़ भूमि, 86. चितवनक शिकार, 87. चौरस खेतक चौरस उपज, 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. भौक, 90. गामक आशा टुटि गेल, 91. पसेनाक मोल, 92. कृषियोग, 93. हारल चेहरा जीतल रूप, 94. रहै जोकर परिवार, 95. कर्ताक रंग कर्मक संग, 96. गामक सूरत बदैल गेल, 97. अन्तिम परीक्षा, 98. घरक खर्च, 99. नीक ठकान ठकेलौं, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संचरण, 102. भरि मन काज, 103. आएल आशा चलि गेल, 104.जीवन दान तथा 105.अप्पन साती- लघु कथा संग्रह प्रकाशित अछि। बाढ़ि-अकालकेँ झेलैत, दैनिक जीवन कोनो तरहेँ काटैत मिथिला'क लोक समाज अदौसँ समरसताक संग जीबैत रहल आ शोषण केना कोणरूपेँ भेलैक, तेकर जीवन्त दस्तावेज थिक-'पंगु'। एहिक कथानकसँ किसान परिवारक तीन पीढ़ीक जीवन गाथा जानल जाइत अछि। साहित्य अकादमीसँ पुरष्कृत 'पंगु' उपन्यास'क मूल लेखक (मैथिलीमे) श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी क हिंदी अनुवादक छैथ- श्री रामेश्वर प्रसाद मण्डलजी। पल्लबी प्रकाशन-निर्मलीसँ 2022 इस्वीमे प्रकाशित करौलैन, जेकर 110 पृष्ठक पोथीक दाम 250 टाका निर्धारित कएल छइ। अइ हिन्दी भाषा पोथीकेँ श्री मण्डलजी झौहरी हनुमान नगर (प्रखण्ड-लौकही) मे विगत सितंबर मासक अन्तिम शैनदिन आयोजित "सगर राति दीप जरय"कार्यक्रममे लोकार्पण करौलैन अछि।

अनुवादक श्री रामेश्वर प्रसाद मण्डलजीक जनम मधुबनी जिला कऽ प्रसिद्ध ग्राम पंचायत-रामनगर, प्रखण्ड फुलपरास कऽ मुशहरनिया ग्राममे 12 जुलाइ 1956 इस्वीमे एक खेतिहर अकुशल श्रमिक पिता मुंशी सुन्दर लाल मण्डल, माता रजोवती देवीक घरमे भेलैन। ई गाम नरहिया एन एचसँ दक्षिण आ परसा-बसुआरी रेलबे हाल्टसँ 4 किमी. उत्तरबारि भाग देहातमे अवस्थित छइ। बालपनमे मायटुअर मण्डलजी'क मेधा नेना अवस्थासँ देखाईत बनैत

रहइ। सबहक सहानुभूतिसँ ओ गामक लोअर प्राईमरी शिक्षाक बाद बैरियाही मध्य विद्यालयसँ मिडिल पास केलैथ। आओर मिडिलक वोर्डमे हिनका परिश्रम केर नीक फल भेटलैन। आगूक पढ़ाइ जारी रखैत 1973 इस्वीमे नरहिया हायस्कूलसँ मैट्रिक पास भेला। हिनक छात्र जीवनमे रचल बहुत रास सामग्री डेरामे आगि लगलासँ जरि कए खाक भऽ गेलइ। ओ तैयो रचनाशील रहि साहित्य सेवी बनल रहला। इन्टर आ बीए. निर्मलीमे रहि कए ओतैक कॉलेजसँ, जे ल.ना.मि.विवि.केर अधिन रहै; तेतएसँ सफल भेला।

श्री रामेश्वर प्रसाद मण्डल विद्यार्थी जीवनसँ ट्यूशन पढ़ाबैत आबि रहल छैथ। दर्शनशास्त्रमे दरिभंगा यूनिवर्सिटीसँ पीजी केलाक बाद कर्पुरी नागेश्वर शम्भूनाथ जनता महाविद्यालय सरौती, घोघरडीहा प्रखण्डमे बतौर व्याख्याता पदपर अवैतनिक कार्यरत रहला। ई बिहार पब्लिक सर्विस कमीशन केर इंतिहान दै लेल पटना गेल रहैथ, ओतए कियो समाद घरक कहलकनि “अहाँक घरमे अगिलगी भऽ गेल, तँए ओरिया कऽ गाम चलि जाऊ।” गाँधी चौकमे अकस्मात 1993 इस्वीमे हिनक गुरूजी आदरणीय लाल बिहारी बाबू कहलकैन अहाँ लोक सेवा आयोग द्वारा जारी सहायक शिक्षक लेल प्रतियोगिता परीक्षामे बैसू। ततमताइते-पछताइते सएह केलाह। आ सरकारी अध्यापक बसुआरा मध्यविद्यालयमे बनि योगदान देला।

2016 इस्वीमे अवकाश भेटैत घरी ओ विद्यालय उत्क्रमित भऽ उच्चविद्यालय बनिए गेलइ। एखन नीज आवास निर्मलीमे पद्मावती आर पी. शैक्षणिक संस्थानक निदेशक छैथ। मैथिली साहित्यमे बहुचर्चित कृति ‘पंगु’पर समीक्षक, आलोचक-समालोचक आ पाठक ध्यान देनहि होएत। कथा वस्तु ओ कथानककेँ चरित्रकेँ हू ब हू मैथिली पूट दैत ओ अक्षुण्ण रखैत हिनक कलम हिन्दी भाषा क्षेत्रमे अमर कथाशिल्पी फणीश्वरनाथ रेणुजीक तरहेँ आंचलिकतासँ भरल छैन। तँए पाठककेँ पढ़ि कए रहस्य बुझैमे कोनो भाँगठ नहि रहतैन। 20 सितम्बर 2022 इस्वीमे ‘पंगु'क अनुवादक मादे स्वंय मूल लेखक जे. पी. मण्डलजी जिनका पूर्वमे रविन्द्र लिटरेचर अबार्ड 2 ऋ 11 गामक ज़िन्दगी कथापोथीमे भेटल रहैन; अपन अभिमत मैथिलीमे धरि लिखने छथिन। से पोथीमे लागल ओ पन्ना अपन पैतृक गाम-बेरमा, तमुरियासँ लिखने

छैथ। अइ पोथीक आई.एस.बी.एन. प्राप्त भेल छैक आ वेबसाइटपर सेहो देल गेल छइ। सीतापुर गामक निर्माणसँ लऽ कऽ आजादीक बाद धरि ओतए केर रहवासीक संग-संग, पशु-पंछी, जीव जन्तु, गाछ पौध, आ मैटक आकार प्रकारसँ लऽ कऽ अन्न- फल केर प्रभेदक सूक्ष्म चर्चा धरि सद्य प्रकाशित पोथीमे भेल छइ। एतुका लोक जीवन संघर्षक विशद् आख्यानक संग- संग आन गामक तुलनात्मक विश्लेषण केलापर आरो सारगर्भित बुझाइत अछि। चोटगर मनलगु विषय नहियौँ रहलाक बाद पाठककेँ अपन रोचकतासँ आखरि धरि बन्हने रहैत, मनकेँ भटकए नै दइ छइ। मिथिला'क गामक विषयमे नव इतिहास कऽ बोध कराबैत अछि 'पंगु' 'उपन्यास'। आठम पाठमे सीतापुर गामक सम्पूर्ण जनतब रहियो पात्रक नामपर मात्रे प्रधानमंत्री स्व. इन्दिरा गाँधी कऽ नामक उल्लेख भेटैत अछि। मूल उपन्यासकार जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कथ्य शैलीकेँ सोझरा कऽ हिन्दी अनुवादक रामेश्वर प्रसाद मण्डलजी कलम चलौलैन अछि। हरिचरणकेँ परिवारिक गाथासँ भरल अइ पोथीमे समय तिथिक उतार चढ़ाव अनियमितता पूर्वक देखमे अबैत अछि। किसान वृन्द हरिचरण कऽ पुत्र जहन सोलह सालक भेल रहैछ तँ हुनक पिता राधाचरण परिवार बढ़बै खातीर सीमान्त किसान परिवारक सोलहे शाके कन्या परमेश्वरीसँ पौत्रक सामन्जस बिआह समस्तीपुर कऽ मिथिलांचल कऽ एकटा गाम (मिथिला)मे करबै छैथ। हरिचरण अपना तीन बिगहा खेतक सामाजिक बदलैन करैत दस कठा घन्टा सहेत एकठाम आभार बिगहा खेती उन्नतशील कृषक रूपेँ करैत जीवन खेपैत अछि। अपने चास बासमे सुअन्न, सु-फल फुल आ सभ ऋतु-मौसम अनुसारे तरकारी धरि उपजाबैत नीक जकाँ गुजर काटैत ख्याति प्राप्त कएने छइ। अनुदानित दरपर आब किसानो लेल विभागसँ खाद- बीज, कृषि यंत्र, अन्धविश्वासक विरूद्ध कृषिगत प्रशिक्षण, बोली आदि भेटय लगलइ। अदौसँ किसान परिवारमे जे उपकरण जत्ता, ढ़ेकी, करीण, कोल्ह आ हर बरद रहै से पतनुकान लेने छइ। मिथिला कऽ आधुनिक किसान अन्तर्राष्ट्रीय सीमापर गस्त करैत फौजी सदृश मातृभूमिपर तीनू फसिल उबजबैमे माघक भीषण शितलहरी, जेठक प्रचंड गर्मी आ भादवक प्रल्यंकारी बरखा केर आफतकेँ डटिकए महामुकाबला करैत रहल छइ। तैयो किसानोक पंगुपन नहि

कमैत छइ। कारण एतए नगदी उखियारक -केतारी खेती चीनी मील बन्न रहलासँ ठमकलल छइ। जेतए कृषि आधारित 45% उत्पादन कल-कारखानामे काँच सामग्रीक रूपमे किसान दइ छेलै, तइ बिहारमे उद्योग नहि रहलासँ आयकेँ स्रोत नगण्य भेल छइ। से इयह पंगुपन बनेने आबि रहल छइ। तैयो भारत अन्नक बन्नोवस्तमे आत्मनिर्भर भेल अछि। ऐतिहासिक लेखन दृष्टिये जे चुक अइ दीर्घकथामे स्पष्ट आएल छै, से तिथिवार कऽ सिलसिला कहल-बुझल जा सकैत अछि। तैयो बोर नहियेँ होएब। तँए बकास्त परिमाणकेँ धरोहर रूपेँ सहेज कए राखैक लेल आ घरेलू पुस्तकालय-वाचनालय केर शोभा बढ़बैले ई पोथी सुधिजनकेँ किनबाक चाही। हिन्दीक अतिरिक्त अइ पोथीक भाषान्तर अन्य भाषा साहित्यमे निश्तुकि भऽ कऽ रहत से आश जगैत अछि। वरेण्य साहित्यकार मण्डलजीकेँ हार्दिक बधाय दैत छिऐन। ❑

सुखल मन तरसल आँखि

अइ मैथिली काव्य पोथीक नव कवयित्री मुन्नी कामत हमर परिचित नव युवती छथिन। हिनक जन्म परसा-नवटोली गामकेँ श्रीमती लक्ष्मी देवी आ श्री दिलीप वर्माजीक घर 17 जुलाई 1989 इस्वीमे भेल छैन। निर्मली महाविद्यालयसँ धरि हिन्दी आर्नस ग्रेज्युएट छैथ। सूड़ियाही निवासी श्रीमान, अरूण कामत पिता रामविलास कामतसँ हिनक बिआह भेला सन्ता पति महोदयक संग साहिबाबाद-गजियाबाद (यू.पी.) मे रहैत अहर्निस साहित्य सेवा करै छथिन। हिनक पहिल कृति 2014 इस्वीमे प्रकाशित भेलैन, पछाइत तेकर दोसर संस्करण वर्ष 2017 इस्वीमे 126 पृष्ठक प्रकाशित भेलैन। दाम 151 टाका छइ। अइ सुखल मन तरसल आँखि 'काव्य' संग्रह मे दू अंकक सभसँ नमहर संख्याँ एतेक कविताक गूंथल माला रूपेँ मौलिक रचना धारावाहिकताक अजस्त्र स्रोत फरिच्छ भऽ देखाइत अछि। मुन्नीजीक दोसरो पोथी प्रतिष्ठित प्रकाशनसँ निकैल चुकल छैक आ मैथिलीक कतेको पत्र-पत्रिकामे हिनक रचना छपल सेहो अछि। मुन्नी कामत केर सन्दर्भमे उमेश मण्डल-पुनम मण्डल (चाचा-चाची)जीक प्रोत्साहन जड़ि रूपेँ जमल छै, से मुन्नीजी अइ सिनेहकेँ 'अपन बात'मे कहने छैथ। डॉ. शिव कुमार प्रसाद पोथी समीक्षक सेहो आशीर्वचन रूपेँ अपन अभिमत प्रकट करैत मुन्नीक बारेमे कहला अछि- 'मुन्नी कामति' मात्र मिथिलांचले नहि वरन् समस्त भारतक बेटीक 'माउथ पीस' बनि अपन काव्यकेँ संग्रहक रूप देबाक प्रयास केलैन अछि। युग-युगसँ संचित आगिकेँ व्यक्त करैमे कवयित्री कतेक वेदनासँ गुजरल हेती से शब्दमे व्यक्त करब असान नहि। हम कवयित्रीक वेदनाकेँ नमन करै छी। हमहूँ तँ कोनो बेटीएक सन्तान छी। भाषाक गढ़ैन अट-पट होइतो अभिवंचित बेटीक भावकेँ समाजक ऐना रूपेँ सोझा-सोझी करबामे सक्षम भेली अछि। अइ संग्रहमे पाठक जे मिथिलाक बेटीक दुखक अनेकानेक दृश्य कवियित्रीक मनक असंतोषे टा नहि; मिथिलाक बेटीक मनोदशाक छवि दृश्यमान भेल देखत। ललनाक प्रति

समाज केर पुरुखक आँखिमे नचैत चण्डालक नुकाएल छबि उजागर करैत कवियित्रीकेँ चैनसँ जीबैक पलखैत नहि दए रहल छइ। पाँति देखू- बेटी शीर्षक कवितासँ-

बेटी अभिशाप नै वरदान अछि’

तिलक बिहारिसँ

बेटीकेँ ने बहाबू।

ई छी घरक लक्ष्मी

हमरा नै समान बनाबू।

नै अछि बोझ...

दहेजक आगि शीर्षकसँ

सुनथुन यै सासु-माय

हमहूँ छी किनको बेटी

हमहूँ किनको दुलारी छी

हमहूँ 9 महिना किनको कोइखमे...

दर्दकटीस कवितासँ

...माइक सुन भेल आंचर

केतौ हराएल नुनुक बोल

असगर छोड़ि बुढ़ बापकेँ

बिछुरि गेल बेटा अनमोल।...

नोराएल आँखि शीर्षकसँ

....केना उजरल घर बसतै

केना एकर नोर सुखतै

और केतेक दिन

अहिना भोगतै ई भोग।

मुन्नी कामत केर पहिल कवितासँ शुरू भऽ जाइछ समाजकेर बीच

असमानताक मनोदशा जेकर एक बानगी' समरपित होइत बेटी' शीर्षकमे द्रष्टव होइछ- जहिया एकर जन्म भेल

तहिए डिबिया मिझा गेल,

सभ कहलक कलंक एलौ

छठिहारोसँ गीत हेरा गेल।

जँ-जँ ई नमहर भेल...

31 बाँ क्रमपर पृष्ठ सं. 53 मे पाठककेँ सुखल मन तरसल आँखि भेटत, जाहिमे पाँति अछि- एगो सहारा छल

गरीबक

अखरा रोटी पर

मेल पियाउजक।

ऊहो सुआद छिनाएल जाइए...

पेटमे जुन्ना आ मुँहमे अपनेसँ बज्जर खसाबी सन निशान मैथिली अभिव्यक्ति रूपेँ श्रीमती कामतजी करैत निछछ गरीबी दिश ध्यान आकृष्ट केली।

हम कहि सकै छी नवसिखुआ आ हिन्दीमे कलम उठौनिहारि मुन्नी कामत आदरणीय कथाकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पोथी पढ़ि-पढ़ि मैथिलीक प्रति जागरूक भेली आ से मातृ भाषामे अपन रचनावलीक माध्यम अक्षय भण्डारकेँ भरैमे आगू एली। हिनक रोचक मौलिक उद्बोधन जहन छपैत अछि तँ पाठक आ उत्सुक लेखकीय प्रहरी सेहो समय निकालबाक फिराकमे रहैछ आ हुनका मोबाइलपर सेहो आशिष दैत प्रशंसा करैत रहल अछि। तइमे एकटा हमहू छी। कोनो भाषाक सुआद साहित्यकारमे भेद नहि तँए हिनक पोथी दर्जनो भाषामे अनुवाद हुअए से भविष्यमे आश करै छी। आवरण पृष्ठपर लाइव सासु माय सन फोटो मूक वार्ता करैत बहुत किछु कहै छथिन। मिथिलाक गाम गाममे पंजीकृत पुस्तकालय अइ पोथीक मांग बढ़बैत तेसर संस्करण छापैले सरकारसँ अपेक्षा करत, सेहो विश्वास जगैत अछि। ❑

उपेक्षित समाजकेँ बाट देखाबैत ‘वर्णित रस’

मैथिली भाषामे कवि उमेश पासवान एक बहुचर्चित नाम अछि। हिनक जन्म लौकही थानाक औरहा गाममे खखन पासवान आ अमेरिका देवी'क घर 13 अक्टुबर 1984 इस्वीके भेलैन अछि। मैथिली साहित्य'क कविता विधामे हिनक श्रुति प्रकाशन दिल्लीसँ काव्य संग्रह 2012 इस्वीमे 120 पृष्ठक पोथी छपल रहैन। प्रकाशित वर्णित रस ‘पोथी’ केर किमत 200 टाका निर्धारित कएल गेल छै, जाहिमे 87 गोट नव कविता संग्रहित कएल गेल छइ। ओना आमुख ओ सेहो एक कविता रूपेँ गढ़ने छैथ। हिनक काव्य सौष्टव केर विषयमे विस्तारसँ पाठककेँ प्रसिद्ध साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुरजीक लिखल ‘वर्णित रस’ मादे सुविचार पढ़बाक तथ्य भेटैत अछि। युवा पुरस्कार मैथिली साहित्य अकादमी'क भेटला सन्ता आब कोनो विशेष परिचयक मोहताज ई नहि छैथ। पेशासँ ग्रामीण पुलिस रूपेँ स्थानीय ख्यातिमे अतिरिक्त विशेषता जुटलैन अछि। हिनक कोनो कविताक शीर्षक 'वर्णित रस' नहि छैन, आ नै कोनो पाँतिक ई वाक्य थिक। परञ्च पोथीक गत्ता आकर्षक मिथिला चित्रकला आ प्रकाशनक लोगो सहजे पृष्ठ सज्जा दिश पाठकक धियान घीचैत अछि। हिनक 'वसन्त' कविताक पाँति अइ तरहेँ होइछ- आएल वसंत

नव जीवन लऽ कऽ

हर प्राणीमे उमंग भरि कऽ

गाछ-वृक्षमे

नव कनोजरिक संग

मोजर फूल निकलैत अछि।

खेतमे गहुम - खेसारी

तिसी - मसुरी

तोरीक फुलसँ

समुच्चा बाध गमकैत अछि।

मौधमाछी लगौने

सेनुरिया आमक गाछपर छत्ता...

एकटा दोसर कविताक गरहैन 'मैना' केर पाँति देखल जाऊ-

एलै एहेन अन्हर - विहाड़ि

जइ डारिपर छलै मैनाक खोंता

वएह टुटि गेलै ठाढ़ि

डारिक संगे खोंता गिरलै (खसलै)

खोंतामे रहैत बच्चा संग जोड़ो मरलै

पलक झपकिते

मैनाक जीनगी देलकै उजाड़ि

एलै एहेन...

मिथिला महान 'कविता'मे चर्चित कवि पासवानजी खेतमे हरबाहाक वर्षाकालीन खेत परहक हालसुरति सेहो मरूआ रोटीपर अखरा नून धूरझार पछिया वसातक दृश्यकेँ अवलोकन कराबैत, अढ़ाइ मोड़ हर जोतैक प्राचीन झाँखि दिश अन्त:कथाकेँ समेटने महानता देखेबामे समर्थ भेल छैथ। यथा-

टाटपर

लतरल तिलकोर पोखरिमे मखान

अखार मासमे

झूमि - झूमि कऽ किसान रौपैए धान

जगमे सबसँ सुन्दर अछि हमर मिथिला धाम

भाषा आ संस्कृति देखि लोभाएल श्रीराम

वारीमे भेटय पान

घर - घरमे होइए

चूड़ा - दही कऽ जरए जलपान

मैथिल मिथिला महान...

हिनक कविताक शीर्षकसँ पाठक मिथिलाक प्रमुख पावैन-तिहारसँ सेहो महिमा मंडित रुपे निम्नांकित पाठमे पढ़ि सकैत अछि- पूर्णिमा, फागुनमे, जितिया, भरदुतीया आ गबहा संक्रान्ति। कवीजीकेँ नव युवा पीढ़ीपर बड़ बेशी आवेश जगै छैन, तँए जुवातुर्ककेँ आह्वान करैत गबै छैथ-

रहैए युवाकेँ

उमंग मोनमे

जँ

पहाड़सँ लड़ि लेब हम

संघर्षक जीवन

अहिना चलतै

जीवनक अन्तिम

समैमे

किछु करि लेब हम

जोश जेतए कम नै हुअय

युवाकेँ तँ

परिस्थिति सात समुंदर

पार कऽ लेब हम

हमरा नै रोकू कियो

दलितक बरदक

हर सम्भव कम कऽ लेब हम

लड़ए किएक नै पड़त हमरा

अही दुश्मनक संग

दुश्मनक छाती चीर कए

देखा देब हम...

उमेशजीक कविताक भावमे करारा प्रहार भेल छैन। ओ सोझ रूपेँ अपन बात कहैमे सक्षम भेला अछि। जाति-धर्मक आ मजहबक नामपर आतंकवादक गाछ रोपैबलाकेँ देखार कएल गेल अछि। देशक युवा पीढ़ीकेँ गोली-वारूद, खंजर-तलवार दैत दुश्मनी आधारित जोश भरैक उत्कण्ठा रखनिहारसँ सतत् सावधान हेबापर बल देलैन अछि। दलित समाजक ऊपर मनसँ नूनू बौआ आ भीतरे भीतर ढहलेल बुझि उपेक्षा कएल गेल, ताहिपर चिंता प्रकट कएल छइ। कोसी नदीक भयावहता आ भीषण बाढ़िक कारणेँ जे अबरजात पुरब आ पछिम क्षेत्र रूपेँ मिथिला बँटल रहए से आब कोसी महासेतु आओर बड़ी रेल मार्ग जुड़लासँ सुगम भेल। शिक्षित आ दमीत दलित लोक जे अपना पछुआएल समाजसँ मुँह मोड़ि अनदेखी करै छै, ताहिसँ दुखी होइ छैथ। जखन कि मेहनत मजदूरी करैबला व्यक्तिक प्रति सहानुभूति'क आवश्यकता जतौलैन अछि। 'पंगु' उपन्यासक रचियता कवि जगदीश बाबू आ मैथिली कर्मी डॉ. उमेश मण्डलक विषयमे सेहो अपन कवीत रसधारा बहौने छैथ। नारी विमर्श, दलित दमित विमर्श आ सुविधा वंचित जमात लेल हिनक कविताक सौन्दर्य बोध फरीच्छ रूपेँ दिग्दर्शन करबैत अछि। कृष्ण आ सुदामा कऽ मैत्रीभाव अखन समाजक बीचसँ निपत्ता जकाँ छै, जखन कि एहेन उत्कर्षक निहितार्थ आवश्यकता अकानल गेलैक अछि। समाज साहित्य कऽ दर्पण छी; तँए साहित्य समाजक ऐना कहबैत अछि। से अभिजात्य वर्गक धरि मुखाकृति कऽ आभा मलीन देखेबाक चेष्टा अइ पोथीमे देखाइत अछि। विद्रुप चित्रण करैत सचेत हेबाक अभिप्रेरणा कौशलसँ भरल ई दीर्घ कविता संग्रह देखि कऽ कियो पाठक अपन पाई बुड़ैत नहि बुझत। पुनः पुनः संस्करण दोसरो प्रकाशक करैथ जइसँ एहि पोथीक उपादेयता जन जागरूकता लेल बढ़ए। ❑

(मैथिली पुर्नजागरण प्रकाश, दैनिक अखबारमे प्रकाशित)

सामाजिक सरोकार कैँ नव दिशा दैत उपन्यास

सद्यप्रकाशित श्री रविन्द्र नारायण मिश्र जीके सामाजिक उपन्यास 'हम आबि रहल छी' हालहिमे पढ़लौं अछि। एहि 140 पृष्टक मैथिली भाषाक पोथी कैँ ओ स्वयं ग्रेटर नोएडा (उ०प्र०) सँ 2021 ई.मे प्रकाशन कयलन्हि, जाहिक दाम 200 टाका छइ। पोथीक आवरण आकर्षक य जे पर्यावरण केर मनोरम दृश्य बुझाइछ। आखरि कभर पर रविन्द्र बाबूक रंगील हाफ फोटो लागल छै,आ एहिभाग उपन्यासमे महत्वपूर्ण तथ्य कैँ अंश पाठकके अपन आचरण दिश धियान खिंचैत अछि।

मधुबनीक अड़ेर डीह सँ दू गोटे सेवानिवृत्त रहितो मातृभाषा'क प्रति विशेष कय लेखन-रचना क्षेत्रमे खुब वेश सक्रिय छैथ। एक श्री राजकिशोर मिश्र जीके काव्य सौष्ठव बड़ दिव्य होय छन्हि,तँ दोसर श्री रविन्द्र नारायण मिश्र जीके कथात्मक अभिव्यक्ति। 70 शालक अशोथकित उमेरमे ऐबेर बुढपुरानक प्रति कलयुगी पुत्र -पुत्रीक व्यवहार पर कलम चलाबैत सामाजिक तानाबाना केना टुइट रहलैक से आख्यासलनि अछि। सब सँ बेशी प्रेरीत करै छै, शिर्षक केर ई वाक्य 'हम आबि रहल छी!' उपन्यासक नामकरण कैँ सोझ रूपैँ कहबाक जे अभिक्रम झलकै छै, तकरा पाँतिमे ताकब सहजे नहिँ। पढ़ाकू लेल उत्सुकता बढाबैत रविन्द्र नारायण जी पहिले पराव सँ बढबैत-बढबैत पराव 27 धरि घींचलनि अछि। ओना औपन्यासिक जतरा पाठक अन्तिममे मूर्धन्य विद्वान प्रोफेसर भीमनाथ झाक मनोदगार धरिक कथन पृष्ठ 138-139 पढ़लापर संतोष पाठककैँ होइ छैन। एहि दुखान्त कथाक आरंभ आ अन्त अत्यन्त संवेदनशील छइ। रविन्द्र बाबूक दर्जनों मैथिली उपन्यास बहरा चुकल छैन। अनेकों मैथिली भाषाक उपन्यासकार भेलाह अछि; मुदा हिनक कथ्य शिल्प सबसँ पृथक रहै छैन। उपन्यासक रोचकताक सौन्दर्य बोध देहाती आ शहरी जीवनमे आएल उतार-चढ़ावसँ व्यक्तिगत रूपैँ सब पात्रमे निखार आनैत छइ। उपन्यासक विन्यास नीक लगैत आगूक तथ्य जानवाक उत्सुकता पाठक बीच

पैसौने रहनाई रविन्द्र नारायण जीक विशेष कला थीक। सहजे समान्य पाठक ऐ वाक्य कैँ तकबामे अथवा के किनका लेल ई वाणी भखै छथि, से गहींरपन सँ पता करब 'हम तँ अहीं लग आबि रहल छी' जीवटपन होएत। दुखित कथाक आरंभ सफदरजंग अस्पताल सँ आ समाप्ति गंगोत्रीमे डुबि इहलीला खतम होइसँ छइ। दरभंगा लगक हरिआरी गामक बाबा सेवानिवृत्त हेडमास्टर आ सकरवार निवासी गंगा - आउटो चालक जे दिल्लीमे शंकर, ओकर संगी दीपा आ दीपेन्दू के तरीघटी पूर्व सँ जनैत छइ। ओ तीनू एके कम्पनीक स्टाफ थिकैक। शंकर पिताजी कैँ गाम सँ भोरमे बजा लइ छै आ अपने दूपहरमे गोआ जाइले डेरा सँ निकैल जाइए। रुममे एसकर बुढ़ाकैँ हर्निया केर दर्द उखैर जाइछ। बेहोश हालतिमे पुष्प विहार सेक्टर एक सँ सफदरजंग हॉस्पिटल कियो इलाज ले बेड पर पुंगेने रहय। ओनए फोनपर बाबूकैँ पुत्र खबर करै छइ, जहाजक उड़ान रद्द भेलासन्ता गामे आबि गेलौं। से ओ तँ एक बहन्ना बनाएल गेल छलैक। गामक मुखिया सँ दस लाख टाकामे डीह सहित सब जत्था जगहक पकिया बेचनामा कागज जाली हस्ताक्षर सँ बनौने रहय। पराकय गंगा संगे गाम आबि बुढहा बेटी डाक्टर निशा कैँ कलकत्ता फौन सँ सब खेरहा बतबै छैथ। हुनकर पितियौत भाय ओकिल साहेब सान्तवना अवश्य दैछ, परंच ओकरो मोनमे मुखिया आ ऐ सेवानिवृत्त मास्टर साहेब सँ ठकपनी करबाक उत्कंठा प्रवल देखेबाक दृश्य स्पष्ट देखल गेल अछि। गामक तीर्थ जात्री सब संगे जे गंगोत्री कऽ चर्चा केलनि से आरो परिष्कार होइत। ओतय खराब मौसम सँ पहाड़ी इलाकामे संकट उपस्थित होइछ। धूईनमे गंगोत्री नहाति बुढ़ी ठंढ़सँ थरथाइत जल बोझैतकाल खसि परैत छथिन, जलधारासँ अगममे भासैत जाइत सब देखलक। धरि पूतौह ले एक निशानीपेटी पतिदेव कैँ इमानत दऽ गेलथिन। बेटा बिनु बियाहे धौरवी रूपैँ एक निशा क्रिश्चियन कैँ डेरामे रखैत य। से विदेश (अमेरिका) जा नौकरी करैत अछि, आ शंकर कैँ सेहो ओतय बजाकय धोखा दैत एक अंग्रेज के वियहुति कनियाँ बनि जाइछ। बेटा तँ बेटा, बेटियो सँ पार लगौल सक्य नहि होइछ। कलकत्तामे अपना डेरा पर भेंटघाट तकमे बेटी जमात आ पातीसँ कमाफैत। से लेनय-लेनय मनोरोगी होस्पीटलमे राखि दैछ। ओतुका डाक्टर साहेब हुनका स्वस्थ्य पाबि एक मास पर छुट्टी

करैत, गंगाक संग धराबैत गाम पठा दैछ। गामक पुश्तैनी डिह आ ओसारा पर वकील कैँ अधिकार पूर्वक विराजमान देखि अचरज मे मुखियाजी पड़लाह। बुड़हा पत्निक कहब कैँ मोन पाड़ि पुत्र मोहमे परैछ। गंगा अपन माय बाबुक श्राध कर्म, भोजभात सम्पन्न कय फोन केएला तँ चार्ज आई रहने बात भऽ जाए छैन। मोन हलुक रहने नीक जुइत फुराए छइ। उद्गिन भऽ चली हाथ मे लैत आवश्यक कागतपतर संगे रखैत डीहपर सँ निकैल पड़ै छैथ। पेरा कातेमे गंगासँ भेंटवार्ताक दृश्य अबैछ। कवियों बजा रहल अछि ई बजैत मास्टर जी झटकारिके आगूक बढ़ए चाहै छै तँ गंगा सह नायकके रूपमे पाठक के दृष्टिगोचर होयत। संगे दूनू गोटेकैँ ओहि गंगोत्री धरिक यात्रा देखौल गेनाइ मिथिलाक संस्कृति आ संस्कार कैँ परिलक्षित कयल गेल छइ। पेंटीकैँ जलप्रवाह करय सँ पूर्व मनोहर जी दू लिफाफा जेबी सँ निकालि सुमझाबैत गंगाकैँ करैत देखाएल गेल जे दस लाख टकाक बैंक ड्राफ्ट मुखिया लेल आ अपन जगहजमीनक सहमति पत्र नूतन प्रभात वृद्धाश्रम, बंगलागढ दरिभंगा लेल लेल जाऊ। अहाँक सेवाभाव आ इमानदारी पर गर्व होइछ। एजेंट करैत बुड़हा त्रिवेणी संगममे धसधसाए गेलाह। एकटक निहारैत गंगाधर कैँ हठात् एक महात्मा जी माथ ठोकि आशिष दैत संतोष दइ छैन- जाऊ हिनक गंगालाभ सँ सद्गति सबसँ नीक भेलैन। सैकड़ो वृधाश्रमक लोकमे ई जनतब परोक्ष रूपैँ होइसँ पहिले विक्षिप्त मालिक के एकमेव उतराधिकारी नातीन दीपाक मोटर दुर्घटनामे दुखद अन्त भेल छलैक। आजुक युवावर्ग वा प्रौढ़ अपन भावभंगिमा जनिजात हाथे बन्हकी राखि, जन्मदाताकैँ केना आपत्ति जनक व्यवहार करैत अछि; से सुधारात्मक सन्देश मैथिली साहित्य आन्दोलनसँ मिश्र जी उपन्यास गढ़िके देलनि! हम हिना हार्दिक अभिनन्दन करैत छिऐन। ❑

स्वनामधन्य शिरोमणी

प्रो. जगदीश नारायण चौधरीजीक जन्म मधुबनी जिलाक विक्रमशेर गाममे 10अक्टूबर 1928 इस्वीमे भेल छेलैन। ई हिन्दी साहित्य आ संस्कृत-अंगरेजी आओर मैथिलीक पैघ विद्वान छला। जे. एन. कॉलेज- मधुबनीक प्राचार्य रहैथ। संगहि अध्यात्मिक प्रवृतिक बैष्णव छला। भोजनसँ पूर्व बहुतदेर धरि पूजा आ ध्यान करैथ। सन् 1953 इस्वीमे हिन्दी विषयसँ केवट जातिक पहिल एम.ए. भेला। हिनक जइ परिवेशमे जन्म भेल तइ कालसँ अद्यतन अइ समाजक विधार्थी जँ द्वितीय श्रेणीसँ उत्तीर्ण होइ छै तँ बुझू जे सम्पन्न अभिजात वर्गक विधार्थीक प्रथमश्रेणीक समान होइत अछि। से हिनको 1947 इस्वीमे मैट्रिक 51%सँ डिप.इन.एड. 1959 ई. 52% धरि सेकेन्ड डिविजन होइत रहलै। आइ ए. 1949 इस्वीमे 51% बी.ए. आनर्स हिन्दी 1951 इस्वीमे 56% अंक सभ शिक्षा पटना विश्वविद्यालयक अधिन भेल रहइ। 1942 ई. केर भारत छोड़ो आन्दोलनमे सक्रिय भूमिका निभेलैन। वर्षो-वर्ष भूमिगत, स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान पेंशनधारी भेला। 1946 से 52 धरि खजौली थाना काँग्रेस कमिटीक सदस्य रहला। 1947 इस्वीमे पण्डौल सत्याग्रहमे गिरफ्तार भेला सन्ता मांग पूर्ण भेलापर स्वाधिनतापर रिहा भेला। काँग्रेस आजादी प्राप्ति लेल गठित भेल रहए, तँए 1952 इस्वीमे अइसँ इस्तीफा दैत पीएसपी. केर सदस्यता ग्रहण कएल। 1953 इस्वीसँ 17-06-1959 किसान उ.वि. बथनाहा (ससुराइर ग्राम)मे प्रधानाध्यापक आ. 1959 इस्वीमे जगदीश नन्दन कॉलेजक हिन्दी व्याख्याताक कार्य भार ग्रहण केलैन। 1971 इस्वीमे प्रजा सोशलिस्ट पार्टीसँ झंझारपुर, मधुबनी पूर्वी क्षेत्रसँ संसद केर चुनावमे 32 हजारसँ बेसी भोँट आनलैन। 1972 इस्वीमे दरभंगा जिला संयुक्त समाजवादी पार्टी कऽ जिलाध्यक्ष निर्वाचित भेला जे मधुबनी जिला बनलापर कायम रहला। 1975 इस्वीमे मीसा.केर तहत भूमिगत भए प्रशिक्षक केर काज नव कार्यकर्त्ताक मार्गदर्शक रहला। 1977 इस्वीमे जनता पार्टीसँ झंझारपुर

विधानसभा क्षेत्रसँ चुनाव डॉ. जगरनाथ मिश्र तत्कालीन मुख्यमन्त्रीक विरूद्ध लड़ला आ 25 हजारक लगधक मत प्राप्त केलैन। व्यापक धांधलीसँ चुनावमे पराजित भेला। 1978 इस्वीमे जनता पार्टीक राज्य कार्यकारिणी डेलीगेट भेला जे जनता दल बनैत काल धरि सक्रिय कार्यपालक भूमिका निर्वहनमे लागल रहला। अइ साल ओ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक सीनेट सदस्य निर्वाचित सेहो भेला। 14 नवंबर 1980 इस्वीकेँ रीडर (उप-प्रचार्य पद पर)मे प्रोन्नति भेला। 1 फरवरी 1985 इस्वीकेँ प्रिंसिपल (प्रोफेसर) केर पदपर प्रोन्नति पावलिथ तइसँ पूर्व 1 जनवरी 1984 इस्वीसँ प्रधानाचार्यक रूपमे कार्यरत रहैथ।

सामाजिक असमानता आ आन कुरितिक खिलाफ हरदम सम्यक प्रयास अपना जनैत करै छला। अपना गाममे 1953 इस्वीमे मध्य विद्यालय स्थापना केलैन। जे आब हुनका नामे उच्च विद्यालय चलैत अछि। बथनाहामे हाइस्कूल खोलेबामे मुख्य भूमिकामे रहैथ आ संचालन करैत रहला। जे.एन. कॉलेजक अतिरिक्त 10 साल बाद 1969 इस्वीमे दोनबारीहाट (खुटौना)मे महाविद्यालय स्थापना संचालनमे प्रमुख दायित्व निभेलैथ। 1974 इस्वीसँ राज्य सरकार द्वारा अधिग्रहण हेबा तक मुक्तेश्वर जनता उच्च विद्यालयक सचिव पदपर संचालन करैत रहला। क्रिमिलेयर परिवारमे केतौ झगड़ा बजरलै तँ खूनी संघर्षकेँ फरियेबामे समय दैत शान्ति व्यवस्था स्थापित करबामे सेहो यशकृति बढ़लैन।

झंझारपुर विधान सभासँ 2000 इस्वीमे राजदक विधायक प्रो. चौधरीजी 90क दशकमे काँग्रेस पार्टीसँ झंझारपुर लोकसभा क्षेत्रक चुनाव लड़ि भारतमे काँग्रेसक हारैबला उम्मीदवारमे सभसँ बेसी भोँट पाबियो दोसर खेप टिकटसँ वंचित रहि गेला। तेकर बाद जार्ज फर्नांडिसकेँ कहबपर समता पार्टीसँ पुनः लोकसभा झंझारपुर क्षेत्रसँ चुनाव लड़ि अढ़ाइ लाखक लगधक निर्णायक भोँट बटोरलैन। 2005 इस्वीमे समता पार्टीक टिकट लौटाबैत अइ पाँतिक लेखक प्रो. जगदीश बाबू लेल अइ क्षेत्रसँ हटि गेल। चौधरीजीकेँ जीवन पर्यन्त अधिक पिछड़ल तबका अपन अभिभावक मानैत रहलै। ओना सामाजिक

आकर्षण हुनका प्रति सभ वर्गक रहइ। कॉलेजक कोनो साहित्य विषयक लिजर घन्टीकेँ ओ डेबैथ छात्रगणकेँ थथमारि कऽ राखैथ। तइ विद्वता लेल छात्रगणक नजैरमे श्रेष्ठता मेधा ग्रहण केने रहैथ। एहेन यशस्वी व्यक्तित्वक स्वर्गीय बुन्नीलाल कामतिजीक चतुर्थ सुपुत्रक अइ धरा धामसँ रूग्नावस्थामे 3 जनवरी 2015 इस्वीकेँ सदाक लेल परलोक सिधारब अनचोकेमे सिहरा देलैन। विनम्र श्रद्धांजलि संग हुनका नामे शत्-शत् नमन।

(1991 इस्वीमे श्रधेय जगदीश बाबू हमरा सन अदना आदमीक बुलावापर, सहजे आबि जिला स्तरीय नेहरू युवा केन्द्र वॉलीवाल खेलकेर टुर्नामेन्टक उद्घाटन केने रहैथ। से हुनक महानता चिरस्मरणीय रहत) ❑

अइ जगमे के केतेक मदतगार?

की लिखब, केतेक लिखब आओर केतएसँ लिखब शुरह करी; से किछुटा नइ फुरा रहल हेन। हमरो मातृभाषा मैथिली'क प्रति बड़ बेसी आबेस रहैत अछि। तँए आइ सँ 26 बरख पहिले एकटा एहेन विषयपर पोथी लिखल, जेकर तत्काल खगता रहइ। तइ जमानामे हमर ग्रामीण संगी श्री अजीत आजादजीकेँ एकोटा अपन पोथी नहि रहइ। हमर पाण्डुलिपि श्रद्धेय स्व. मोहन भारद्वाजजी सेहो अवलोकन केने रहैथ। ओइ पोथीक भूमिका स्वयं आजाद पप्पू भायजी लिखलैन आ बिहारक यशस्वी 'शेखर प्रकाशन'सँ छपेबाक पकिया गप केलैथ। ओइकाल हम 5000 टाका रमणजीसँ अइ लेल ऋण उठौने रही, जे 20 मासपर हुनके भाय नवलजीसँ 10,000/- फेर ऋण लऽ कऽ दैत तगेदासँ बरी भेलौं। परञ्च किछु साल बाद तगेदा भेला सन्ता हमर अनुज भाय बैंक डाफ्ट आ नगदी कैंचा दऽ कऽ हुनक कर्जा उतारि हमरा फारकैत केर सोझबाट धरेलक। से आबोधरि हमर ई देहाती संगी कहियो अपन फेसबुकपर दोसर लेखकक जकाँ हमरो ओही पोथीक नव प्रकाशन अपना नवारम्भसँ करैत; से आँखि पथरा गेल, बहुतो पोथी छपबाक सूचि दैखै छी। हमर पहिले पोथी भरिसक बिनु आई.एस.बी.एन. केर ओइ प्रकाशनसँ केना छपैत, तँ नबारम्भ छापौ! सेहो नै होइ तँ अनेको पत्रिका हुनक सम्पर्कमे छइ, तहिमे बेराबेरि प्रकाशित होइत तँ संतोषक गप्प होएत। आश्चर्य जे हुनका लाइफटाइमे ओरियाले रहि गेल ई विषय-सूचि-

1. फुलक सहकारी खेती करू

2. लीचीक बगान लगाऊ

3. आम उत्पादन केर वैज्ञानिक प्रणाली

4 आद-हरैदक व्यवसायिक खेती

5 लताम लगाऊ

6. करीया टमाटर रोपु
7. धनियांक चटनी चाटू
8. धात्रिम आ कागजीनेबो गुणक खान
9. तीन कठामे रामझिंगनी
10. ललका मिरचाइ उबजाऊ
11. उजरा भांटा दोषमुक्त
12. राइ आ तोरिक खेतीमे अगबे नफा
13. उखियारक पोरपर पछियाक प्रहार
14 केराक घौर झाँपू
15 उजरा पियाउज आ लसून मशाला छी
16. काँच अनरलेवा खाऊ
17. देशीओलमे आमील फेंट कए कबकबसँ बांचू
18. फुलकोबी आ पातकोवीक सबिकाहा गमक।

ओना अपना बाबूजीक तेरहा श्राधमे ओ चारि हजार टाकाक बैंकपेइ चेक दऽ देलैन आ कहने छैथ आरो आर्थिक मदद सदैत करैत रहब, तेकर बादो अहाँक पोथी 'आहार वाटिका' प्रकाशित करबे करब। मुदा आब ओ प्रख्यात पत्रकार आ प्रसिद्ध रचनाकारक संगे की-की नै छैथ। तखन हमरा जे कचोट भेल से मैथिली आन्दोलनकेँ खूब घाटा भेलइ। ❑

पाठकीय प्रतिक्रिया

क्षुधा मेरी जननी ‘हिन्दी’ कविता संग्रहमे 54 वर्षीय प्रखर कवि दिनकर कुमारजी 81 टा काव्यक रचना केलैन अछि। जइमे अनुक्रम 9 पर एक शीर्षक भेटल’ क्षुधा मेरी जननी'। अइ कविताक नामपर 96 पृष्ठक पोथीकेँ प्रकाशित 2011 इस्वीमे करबाक यश भेटलैन, ‘जयपुर'क सोंधी प्रकाशनकेँ। कविजीक विशेष आग्रहपर मात्र 5 टकादाम प्रकाशित पोथीक राखल गेल छइ, जे अपन पत्नी ममता आ पुत्री सागरिका ओ जयश्री तथा पुत्र सिद्धार्थक लेल समर्पण पन्नापर स्थान देने छैथ। ISBN प्राप्त पोथीक रचैता श्री कुमारजीक गामसँ हमरा पुरान परिचय अछि।

ब्रह्मपुरा, मनीगाछी (दरभंगा) अइ गामक कानूनगो बद्री ठाकुरजी'क घरपर स्व. कर्पूरी ठाकुरजी आ स्व.रामफल चौधरीजी (भुतपूर्व राज्यमन्त्री) गेल रहैथ। चौधरीजीकेँ पुत्र केशवजीक शादी सेहो मन्दिर लग भेल छइ। आओर कबीर विचारधारा'क शिवजी चौपाल घोघरडीहा केर पूर्व बिडीयो साहैबक पैतृक गाम सेहो छी। स्व. विपिन्न कुमार दत्त सन बहुतो चिन्हारे छैथ। हम गप्प करए चाहैत रही प्रख्यात कवि दिनकरजीसँ, परञ्च ओ असाम गेल रहैथ। आसामिया केर ओ 4 पुस्तकक अनुवाद केने छैथ। हुनकर दू कविता संग्रह, एक उपन्यास आ दू जीवनी बहुचर्चित भेल छइ। दिनकर कुमारजीकेँ बहुतो रास सम्मान आ पुरस्कार भेटि चुकल छैन। तँए कोनो नव परिचय केर मोहताज नहि रहथि। कलमवीर कविजी समाजमे पछुआएल लोकक अभावकेँ सेहो अपना काव्यमे चित्रण केने छैथ। हुनक किछु पाँति अइ तरहेँक होइछ-

..सिखाया था बचपन ने मुझे

जब साग उबालकर परोसा जाता था

पड़ोस सँ भेजी गइ जूठनपर

टूट पड़ता था किसी भुखे पिल्लेकी तरह...

हुनक तीक्ष्ण नजैर केतेक गहींर छै से अइ कविताकेँ पढ़लापर पाठककेँ भेटि जाइत अछि। 72 फिटक अतरीमे भुखक दरद जे अन्न बिनु टिरूवाइत रहै छइ, आ तइ दिन सांझ समय आँगनमे अकाश दिस निहारैत तारोकेँ देखि भरि राइत काटल जाइत हो। दोसरो दिन लतामक ठुर्री आ चुलहिक पाकल माँटि चिबबैत बिस्कुटे जकाँ खाइत समय खेपल गेल। परञ्च दाना उत्सव धनिक लेल पाबैन मनाओल जाइत रहइ। तारा देखि जी स्वत: ठोरकेँ चाटबाक सतत् परिचालनसँ तृप्त केना होऊ। कहियो-कहियो पाठशालासँ टिपिनक छुट्टीमे जोगीन्दरजीक मोदी दोकानसँ हरीन मास्टर जकाँ नून चुटकी भरि मांगि मुँहमे दैत लोटाभरि जल गटा-घटि पिबल जाइ। क्षुधाक कारणेँ पालन एवम् पैघ वयस होइछ, यएह भीतर जठराग्नि उत्पन्न करैत अछि। तँए फौलादी होइ; क्षुधाक सन्तानोमे लोक आ क्षुधा लोकक ममतामयि माए सेहो कहबैत अछि। कतबो नीक-निकुत बौस्त होइ तइसँ की! अघाएल रहने खेबाक क्षुधा नहि होइ छइ। बदहजमिक शंका सेहो ने रहि जाएत! हिनक एकटा दोसर कविताक किछु वानगी देखल जाऊ-

दयनीय नागरिक ज्यादा से ज्यादा

कर ही क्या सकता है

गालियां दे सकता है मौसम को

महंगाइ को वजट को

कोस सकता है अपनी किस्मत को

...

पोथीक कलेवर आकर्षक छइ। पृष्ठ 7पर’फूलों की बारिश'सँ शुरू भेल आ पृष्ठ 96 पर ‘नए इलाके में’पर आखरी काव्य दृष्टिगोचर होएत। आवरण छायाचित्र थिक-मायामृगकेँ। हम हिनक मैथिली भाषा ले काजक प्रति आशान्वित रहब। ❑

हमरा बिनु जगत सुन्ना छै: पाठकीय प्रतिक्रिया

कमलाक कल-कल धारा आ शोकनदी’कोसी'सँ ग्रसीत तिलयुगाक तटपर अवस्थित रसुआर(सुपौल)गाममे पहिलौ मैथिलीक लेखक विद्वान भेल रहैथ जे दरभंगाक प्रवासी भऽ गेला। ओइठामक समरजीत कुमारकेँ सेहो मैथिलिक रचना कोशी सन्देशमे देखने रही।

मुद्दा ई नहि बुझल रहए जे महिसबारक हेंरमे आ किसानो बीच हेराएल श्री रामदेव मण्डल ‘झारुदार' छैथ, जिनक काव्य रचनावलिक मैथिली पोथी ‘हमरा बिनु जगत सुन्ना छै’ श्रुति प्रकाशन दिल्लीसँ 2012 इस्वीमे प्रकाशित भेल छइ। प्रकाशित अइ पोथीमे 128 टा पन्ना, जेकर दाम 250 टाका अछि। से पढ़बाक अवसर हमरो भेटल अछि। आठटा पाठ अइ संग्रहमे पाठककेँ भेटत। सुपरिचित झारु नव विधाक साहित्य सृजक श्री रामदेव झारुदारजीकेँ अइ पोथीकेँ पढ़लासँ ई स्पष्ट होइछ ई एकटा संजीदा हस्ताक्षर छैथ जे अपन भूमिका बड़ चिकन जकाँ निर्वाह केलाह हेन। अपना रचनावलीकेँ ओ दोहाक जगह झाड़ु कहलैन अछि। हुनके अनुसारे अइ बिहार आ मिथिलामे वर्तमानमे जे विकटता छइ, तेकर सुधार समयसँ होइ, जइसँ सम्पूर्ण भारतमे सन्देश जेतइ। एक तरहेँ पुरान आख्यानकेँ सम्यक सीमामे लोकभावना जागृत भए सुन्नर बनए आ समस्या सभ जे कएल छै तेकर समाधान सेहो अपना मनोभावकेँ कलमक रफ्तार दए निखारलैन अछि। हुनका प्रति दुर्गानन्द मण्डल कहै छैथ झारुदारजी आश्वस्त छैथ जे ग्रामाञ्चलसँ नगर धरि लोक सुसंस्कृत ढंगे मानवीय पक्षधरता बनए, अपन झारू-खड़रा आ बाढ़ैनसँ साहित्यमे जमल गन्दगीकेँ सेहो बहारि-सोहारि स्वच्छ करैमे आगू एला आ हिनक गेयात्मक मंचीय काव्यधारा मीठगर कण्ठसँ बहराएल मिथिलाक आवाज छी। हिनकर किछु पाँति द्रष्टव्य अछि-

जागु बाबू आबु आगू

जीयापर करु विचार यौ

केना जीयब की प्रदुषणमे

श्रृजनहार बेमार यौ।

भू जल वायु ध्वनि प्रदुषण

दुःख दुनियाँमे अपार यौ

केना बांचब अइ काल गालसँ...।

दोसर एकटा पुरनका गीतक-

लोभी लालची राज करै छै

फुहर गाल बजाबै छै

लूटि-लूटि भोली जनताकेँ

अप्पन घर सजाबै छइ।

पग-पग पसरल हेरा-फेरी

काम छै काला मुँह छै गोरी

काला धनपर उतरा पालिसी...

झारू रामायणसँ-

पहिले वन्दना गुरु चरणमे,

दुजे चरण शंकर भगवान।

दुनूठाम चरण अहीं केर नीचाँ,

स्वीकारु शत् शत् प्रणाम।

झारूदारजीक रचनाशिलताक तेज आरो परिष्कार होएत से हमरा पूर्ण आश जगैत अछि। अइ पोथीक पैछला कवरपर साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुरजीक हिनका मादे अभिमत छपल छइ। ❑

राम विलास साहुजीक कथा संग्रह 'दुधबेचनी'

लेखकीय सरोकारसँ जुड़ल जानल पहचानल नाम स्नातक श्री रामबिलास साहू मातृभाषा मैथिली लेल अहर्निश सेवक छैथ, दुधबेचनी कथा संग्रह लकेँ एला अछि। अइ पोथीक आवरण पृष्ठ सज्जा मनमोहक अछि, जइपर प्रकाशन लोगो जगह छेकने छइ। पैछला गत्तापर कीमत 150 टाका सहित कथाकारक सचित्र फोटो परिचय छापल छइ। 112 पृष्ठक अइ पोथीकेँ ISBN प्राप्त भेल छइ। दाम 200 टाका। एक दर्जन संख्यामे क्रम 9 पर मूल टाइटल, दूध बेचनी, कथा सजौल गेलै अछि। अइसँ पूर्व हिनक अंकुर कथा संग्रह पूर्वमे प्रकाशित भऽ चुकल छैन। अंशुमान कथा संग्रह अप्रकाशित कृति सेहो निकलैबला अछि। ओना हिनकर 2013 इस्वीमे पद संग्रह रथक चक्का उलैट चलय बाट, 2017 इस्वीमे कोशीक कछेर कव्य संग्रह सेहो विभिन्न प्रकाशनसँ निकल छइ। 26 मई 2018 इस्वीकेँ दिल्लीसँ साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुरजी ऐ, 'दुधबेचनी' पोथीपर अपन समीक्षात्मक तथ्य परसने छैथ, तैयो अइ पोथीकेँ न्याय दिएबाक उदेशसँ वृहद चर्चा करब नैतिक बोध करबैत अछि। जइसँ पाठक वर्गकेँ कथा प्रसंगक रोचकता सहजे भेटैत अछि। मिथिलांचलमे स्थापित कथाकारक लीकसँ हटि कए बड़ निमन कथा हिनकर होइछ तेकर एकटा अंशतः चर्चा करै छी। चलितर आ पवितर केर नाक ठेकल बहिन रिताक बिआह जइ वरसँ सस्तेमे निमरजना भऽ जाइ छै। से योग्यजोरीक नहि चुनाव केनै केतेक विपतीमे रीता पड़ै छइ, तेकर वानगी पाठककेँ देखवामे अबै छइ। पारिवारिक ह्रास आ स्वयं मातृ प्रधानताकेँ देखेबामे रीताक चरित चित्रण जीवन्तता पूर्वक कएल गेल अछि जे पाठककेँ अद्योपरान्त कथासँ बान्हने रहैत अछि। जखन वृद्धा अवस्थामे रीताक दुनू जौआँ बेटा शहरी जीवन अपनाबैत रुग्न परिस्थितियोमे हुनक तकतिहान करैसँ बिमुख होइ छै तँ माइक सजल हृदय विदिर्ण भऽ सामाजिक आशक बाट ताकै छइ। अपने गाए महींस आ जगह जमीनकेँ दशनामामे दैत दस समाजेसँ आगू अपन जीवन निर्वाह होइएक

बाट खोलली। सामाजिक लोककेँ लगहैर गाए महींससँ दूध आपूर्ति करैत अबि रहल छेली, तँए हुनक चर्चित नाम दुधबेचनी पड़ि गेलइ। ओना बिआहक बादसँ श्वसुर हीरालाल दुनू प्राणीक मुइलापर आ मतिछीनू पतिक असामयिक निधन केर बाद 1954 इस्वीमे ओही नारेदीगर प्रान्तमे कोशी नदीक भीषण बाढ़िसँ सबुटा ठाठ-बाठ झहैर गेल रहइ। गहना आ गाए दामी बौस्त बेचिकए अबला मसोमात रीता दुनू बौआकेँ दरभंगा राखि पढ़ेबामे सामर्थ भेली। कथाक नब सन्देशकेँ नवका पीढ़ी गमैया जीवनसँ पलायनवादी भऽ नगरपर भार बनेने आधुनिक कहबैत अछि। अइ पोथीक गामक गाछी, कमतिया हवेली, घुमि गाम चलू, बिपैत, झंझैटिक जड़ि शिनुरया आमक गाछ, जरैन, जेहेन पाठने पढ़ल पुता अपने सिर विषय, कोलहुक सुच्चा करू तेल, गोदानक गाए घुमि घर आएल, आशीर्वाद आ ई केकर दोख शीर्षकमे ग्राम्य जीवनक रोचकतासँ भरल छइ, जे पाठक बिनु पढ़ने नइ रहत। ❑

नारायण यादवजीक कथा संग्रह 'नवकी पुतोहु'

सद्य: प्रकशित अइ मैथिली कथाक पोथीक रचनाकार छैथ-श्री नारायण यादव। दि. 16-1-1956 इस्वीकेँ अंथराठाढ़ी प्रखण्डक रूद्रपुर थाना अन्तर्गत डुमरा गाममे सुमित्रा देवी आ राजेश्वर यादवजीक घर हिनक जन्म भेलैन। स्व. दादाजी भोला यादव नामी-गिरामी लोक रहैथ आ नानाजी नरही निवासी स्व. राम-लखन सलहैता महान स्वाधिनता सेनानी छला। मैथिली भाषा साहित्यसँ एम.ए. अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक (+2 उ. वि. जयनगर) केर नबकी पुतौहुमे 17 गोट कथा संकलित अछि, जइमे चारिम क्रमपर नबकी पुतौहु शीर्षक कथाकेँ स्थान देल गेल छइ। पल्लवी प्रकाशन निर्मलीसँ द्वितीय संस्करण 2018 इस्वीमे बहराएल; अइ पोथीक ISBN.प्राप्त छइ। कीमत 200 टाका अछि। पोथी सन्दर्भमे आलोक भारती, कमला कान्त झा वि. वि. प्राचार्य आओर प्रो. सदरे आलम गौहर अपन अभिमत लिखलैन अछि। ई पोथी चर्चामे रहत, तेकर कारण लेखक कथाकार श्रीयादवजीक लिखबाक जीवटपन थिक। ओ रोचकताक संग अपन खीसा ग्रामीण बोलचालमे उतारै छैथ। सहजे ग्रेज्युट पुतौह कथा मोन पड़त आ कन्याक जिनगी कथामे कुसुमक मुखाकृतिक आभा तितिर दाइसँ मिलान केने बुझाएत। नव पुरान कथाक संग्रह जखन पाठक पढ़त तँ सभ तरहक सुवाद भेटतैन। साम्प्रदायिक कथामे हिन्दू-मुस्लिम एकता बढ़ेबाक परम उद्देश्यसँ सद्भाव पूर्वक कथाकार समर्थ भेला अछि। जेठकी पुतौह (नबकी) आ छोटकी पुतौहुक गुणमे अकाश-पतालक फर्क देखाइत अछि। रोशनी छोटकीसँ सुलेखाकेँ अन्तमे नीक सीख भेटलै अछि। सासु राधाजी आ ननैद रूपम दाइ सहित सम्पूर्ण परिवार'क जीवन आखिरीमे मधुमय भऽ गेलइ। सभ टा कथा उपराउपरि विलक्षण छैन। पाठ विद्वानक अहंकार कथामे कहल गेल छै विद्वान दुटा छैथ- व्यास आ अष्टावक्र। वलबान मात्र दुगो छै-अन्न आ जल, संगहि बटोही सेहो दुइयेटा होइछ-चन्द्रमा आ सूर्य। मेहमान दुइटा छैथ-धन आ जवानी, तथा हठी सेहो दुइयेटा छै- नख आ केश,

एवम् मुर्ख दू छैथ- राजा आ मन्त्री; अइ तरहेँ खिस्सा पैघ होइत गेलइ।

कथामे उतार-चढ़ावसँ भरल भकमोड़मे चकभौर दैत कथांश पाठककेँ आखिरी धरि बानन्हे रहै छइ। नारायण यादवजीकेँ ई अनुपम पहिल कृति थिक। चारिटा प्रकाश्य कृतिमे तीन कथा संग्रह यथा- 'खाली घर', 'समझौता' आ 'बाबा नाम केवलम्' तथा कविता संग्रह- 'नाती दुसलक नानाके' आबि रहल अछि। बहुत रास कथा हुनक सगर राति दीप जरय मञ्चपर पठित भेल छैन। नारायणजीसँ मैथिली साहित्य कऽ अक्षय भण्डारकेँ आरो भरल गेल हेन। स्वाधिनता सेनानीक जीवनीपर आधारित पोथी शीघ्र आबि रहल छैन। ❑

उपन्यास बनाम वायोग्राफी

मिथिलांचल'क जनता लेल सिनेमा कोनो नव वस्तु नहि छी। भारतमे सहस्रो सालसँ नाटक परम्परा चलि अबै छइ। आनो देशमे भरि राति नाट्यसँ मनोरंजन करबाक-देखबाक मण्डली रहइ। ग्रीस आ रोम नाटकक प्रसिद्ध रंगस्थली छल। तेकर स्थान आधुनिक कालमे चलचित्र लेलक। एकर अविष्कार अमेरिका निवासी मिस्टर एडिशन सन् 1890 इस्वीमे केलैथ। दादा फाल्के भारतमे हरिश्चंद्र फिल्म 1912 इस्वीमे बनौलैन। जे अवाक् अर्थात मूक चलचित्र छल। 1928 इस्वीमे बाजैबला चलचित्रक शुरूआत भेल जइमे मनुषे जकाँ बाजब, हुक्का पीयब देखि गरीबो-देहाती दर्शक नेहाल भेलइ। प्रथम एहेन फिल्म'आलम आरा'1931 इस्वीमे मुम्बइ केर इम्पिरीयल फिल्म कम्पनी बनौलैथ। देशमे युवा पीढ़ी जइ गतिये सिनेमा दिस दर्शक बनबामे आगू बढ़ल, तइसँ एकर सर्वप्रियता स्पष्ट होइत अछि। सिनेमा घरमे पौराणिक, ऐतिहासिक आ सामाजिक फिल्मसँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख- इसाइ, पारसी, बौद्ध आ धनिक-गरीबमे समरसता बढ़ैत गेलइ। अइसँ भाषाक प्रचार ओ विकास सेहो जन-जनमे होइत रहल। यएह परेखि कऽ मैथिली सेवा लेल मैथिलीमे पहिले फिल्म बनल' ममता गाबए गीत'; तेकर बड़ नमहर सफरनामा छइ।

श्रीकेदारनाथ चौधरी कृत मैथिली पोथी'क हिन्दी भाषान्तर'आबारा कहीं का' संस्मरणात्मक उपन्यास केर अनुवादक छैथ- कुमार परिमल। इंडिका इन्फोमीडिया जनकपुरी नइ दिल्लीसँ 2013 इस्वीमे प्रकाशित 136 पृष्ठक पोथी'क दाम 125 टाका छइ। एकर प्रकाशनक सहयोगमे लहेरियासरायक श्री आशुतोष कुमार छैथ। पोथीक मादे साहित्यकार श्री रामलोचन ठाकुरजी कहने छैथ- 'आवारा कहीं का एक आवारा की कथा-गाथा है। अद्भुत, अभिनव अविस्मरणीय कथा-गाथा! अफसोस कि मिथिला-मैथिलीमे ऐसा आवारा दुसरा नहीं हुआ। यदि दस-बीस भी ऐसा आवारा हुआ होता तो निश्चित ही आज मिथिला-मैथिली का दुसरा ही रूप होता। ये आवारा हैं अपने प्रिय बन्धु महन्त

मदन मोहन दासकेँ साथ केदारनाथ चौधरी।' अइ पोथीक भूमिका रूपेँ मिथिला विभूति श्री महन्त मदन मोहन दासजीक सुपुत्र आशुतोष कुमार लिखने छैथ- 'मैथिलीक पहिले फिल्म' ममता गाबए गीत'केँ निर्माण कथा केर अन्दरुनी आ सम्पूर्ण कहानी मातृभाषा मैथिली पुस्तक रूपमे 'अवारा नहितन' शीर्षकसँ 2012 इस्वीमे बहराएल, जेकर हिन्दी अनुवादमे पितातुल्य चौथापनमे केदार बाबू हूकूम केलैन। से एहेन बुजुर्गकेँ मनो: नहि कऽ पबै छी। ओ पिताजी'क अभिन्न मित्र छथिन आ हुनकेसँ जानि हम आब मिथिलाक गौरव समैझ सकलौं। बाबूजी अइ फिल्म बारेमे हमरा कहियो किछु नहि कहने रहैथ। मैथिली फ़िल्म अकादमी-दरभंगा (बिहार) सिनेमाक 50म् वर्ष पूर्ण हेबाक उपलक्षमे 'माइफा सम्मान' लेल मञ्चपर हमरा हुनक पुत्र हेबाक नाते बजा कए सम्मान-पत्र 'ममता गाबए गीत' लेल देलैन तँ गर्वसँ प्रफुल्लित भेलौं। मैथिली टो-टाकेँ पढ़ए बला खातिर हरहराकेँ हिन्दी पढ़ि सकए तइले पोथीक हिन्दी भाषा कऽ उपयोगिता सम्पर्क हेतुए आओत। स्व. महन्थ मदन मोहनदासजीक सुपुत्र अइ पोथीलेल वरिष्ट पत्रकार विजय कुमार मिश्रक अइ लेल आभार केलैन। जे ओ सभक फोटो आ गीत उपलव्ध करौलकैन। प्रकाशक अरविन्द गुप्ता आ प्रूफ संशोधन केनिहार अनुवादक कुमार परिमलजीक प्रति कृतज्ञता धरि केने छैथ। अइ फिल्म केर पुर्वमे दुरदर्शनपर प्रसारण भेल अछि। फेरोसँ धारावाहिक रूपेँ टी.वी.पर प्रसारणक आवश्यकता भेल अछि।

गामक सभ कियो काका सहित हुनका केदार भैया कहै छैन। हुनकासँ वार्तालाप आ दोसरो गोटेसँ अन्तरंग गप्प कएल, अनुभव प्राप्त करैत जे लेखन कार्य अइ प्रकाशित पोथीमे छइ, से बड़ा रोचक ढंगे आ हास्य विनोद पूर्वक प्रस्तुति छइ। तँए उपन्यासकेँ पढ़ैतकाल पाठक वर्ग 60 साल पहिलुका स्थितिमे सहजे चलि जाइत रहता। मिथिला राज्य बनइ, ताघैर मैथिली अष्टम अनुसूचीमे नहि शामिल भैल रहै; तइले जेतेक नीक परियास जे सभ केलैन। से कउली बाबू मादे पारंगत रूपेँ दृश्य सोझा उपस्थित होइत अछि। मैथिली पत्रिकासँ जन-जनमे प्रचार-प्रसार होइ आ मिथिलाक्षर सेहो सिखौल जाइत, अइ लेल स्कूल धरि खोलबकेँ परिकल्पना लऽ कऽ, शोसलिस्ट नेता आ स्वयंभू, विदेश'क पी-एच.डी. धारी अहर्निश मैथिली सेबक (लखन)सँ भेँट

कएल जाइ। तइ विचार लऽ कऽ टने झा, टमाटर लाल आदिसँ सेहो सम्पर्क होइ छइ। बौआ उर्फ वाबू नारायणजी चौधरी लग फेर सभ दस्तानक विस्तारसँ उल्लेख भेलइ। स्वाधिनता सेनानी चौधरीजी 15अगस्त 1947 इस्वीकेँ भारत स्वतंत्र भेलापर जहलसँ बहरेला सन्ता गामे धेने छैथ। आओर राजनीतिसँ सन्यास लेने ग्राम बासिक मार्गदर्शक बनलटा छैथ। तँए गौआँ सभ निर्विरोध प्रथम मुखिया बना देने रहइ। मिथिला महिमामे पोखरिक घाटपर केर बैसार आ गामक बड़का दलानपर सांस्कृतिक कार्यक्रम'क चर्चा केना नहि होइ, सेहो अय पोथीक आभा थिक। केदार भैया मैट्रिकसँ एम ए. (अर्थशास्त्र)तक जे अध्ययन केलैन। तइ मध्य हलुके-हलुके रोग लगलै जे कालान्तरमे बढ़ैत ई मैथिली प्रेम रोग गसिया कऽ पकैड़ लेलकैन। जेकर चर्चा करैत ओ अपन मित्र महन्त मदनमोहन दासजीक डेरापर भेँट करैत गप्प खोललैन। ओइठाम मैथिलीमे एकटा फिल्म बनए आ भाषाक सुलभ प्रचार होअ से निठाहे योजना बनलै; जखन कि आर्थिक व्यय बेसी हेबाक डर रहइ। महन्थजीकेँ आत्मज्ञान रहैन ओ बुझलखिन अंगरेजी शासन तँ मठकेँ जमीन केए बरकरार ओइ तरहेँ राखल, जेना मुसलमान शासक जागीर दैत संरक्षण केने रहइ। परञ्च आब देश सुराज भेलापर जमीन्दारी उन्मुलन भऽ रहलै आ महंथाना सेहो कमतर होइत मिटत। तँए जथोकऽ बोहाकऽ मैथिली सेवा केनाइ अर्थात् फिल्म बनौनाइ महन्तजीक अभिष्ट रहल। हुनकर मित्र केदार नाथ चौधरीजीकेँ गाममे चारू भाँयमे हिस्सदारी आ से पुतइ मोजाक जमीन बँटबारा आ पैघ नोकरी (केलीन डायरेक्टरी) मिथिला कमिटी-समिति आ मैथिली श्रैष्ठजनसँ मदैत केना भेटए, कोन तरहेँ फिल्म निर्माणक दतचित अनुभव हुअए; तइ सभ लेल बड़ पापर बेललैन। राजनगरमे समैयक लंबा अन्तरालपर दू सत्रमे फिल्माएल गेल दृश्य देखबाकाल जे वृतान्त सभ भेल रहै सएह लालित्यपूर्ण रूपेँ आ हास्य-व्यंग्य रूपेँ लेखक जेना अपना वायोग्राफी धरि लिख देलैन हेन। तँए उपन्यास'क विन्यास बड़ बेश भेल छइ। मुम्बइ आ कोलकातामे जे घटना सभ घटित भेल, तेकरा मोनपारि सभ तहेतह तथ्य आंकड़ावद्ध प्रस्तुति देखि अइ पोथीक उपादेयता आरो परिष्कार बेसी भेल छइ। फिल्मकेँ महन्थक रूप रौलमे निर्माता भानूबाबू (रहुआ संग्राम) स्वंयमे हिरोक रोल अधबेसूमे केलैन, जखन कि हिरोइन अजरा

कौमलांगी अतिसुन्दरी नवयुवती हौलीबुडक प्रसिद्ध अभिनेत्री जे हर तरहक सीन दैलेल तैयार; परञ्च मौसीक विचारमे एकमत। तखन कैमरामैन प्रसादजी अपन अनुभवक गप लेखककेँ अपनापनमे सभ बुझा देलकैन। कारण हिनका सभकेँ एक तरहेँ अनाड़ी देखलकैन। आ खर्च तँ डबल भेलै जे बड़का हिन्दी सिनेमामे जेतेक होइत रहइ। जँ 'गंगा मइया तोहरे पीयरी चढ़ेबौ' जकाँ मैथिलीमे सामाजिक फिल्म नहि पहिल धार्मिक फिल्म बनैत तँ खर्चा अदहा लगितै आ श्रधावश दर्शकोक कमी नइ रहितै। जेतेक टाका खर्च रजि. 'नैहर भेल मोर शासुर' फिल्म जे पटना स्टीमरपर ममता गाबए गीत 'शीर्षक नाम' कमल नाथ सिंह ठाकुर सुझेलैन। तेतेक टाकामे ओइ समय चारिटा फिल्म ई लोकनि आंचलिक ओ धार्मिक बना कऽ कृतिमान स्थापित कऽ सकै छला। उमेरदराजक गप्पकेँ शिष्टाचार मानि आँखिमुना बनल रहलासँ मैथिलीक ठहराइ भऽ गेल, जखन कि उत्कर्ष पेयबाक समुचित प्रबन्धन रहइ। ओइ समय सोनाक भाव (1964)मे 163 टाका प्रतिभरी रहइ। तीनटा नाम-टंचजी, बिछूजी आ खगाजीकेँ चरित्र चित्रण पोथीमे सारगर्भीत रूपेँ भेल छइ। गीतकार रविन्द्र नाथ ठाकुर'क गीत अइ फिल्ममे प्रशंसा पएल, सेहो बतबै छी। पहिले ई सुनिश्चित जानि लिअ जे हिनके सद्कृपासँ बादमे पाइकौड़ीक ओरियान भेला सन्ता लसकल मैथिली फ़िल्म चलल-बनल; ई खूब अइ प्रसादे कैंचो कमेलैन। से आत्म सुखक बात भेल। आत्ममुग्ध महन्तजीकेँ एहू लेल आखिरीमे भेलैन जे चौधरीजी विदेशमे नौकरी करए धरि गेला आ आब लेखकीय काजसँ मैथिली प्रेमीमे यश प्राप्त करै छैथ। आखिर सोलह आनामे दूआनाक शेयर भागिदार जे रहैथ। ममता गाबए गीत पहिले फिल्ममे पाँचटा गीत छै जे क्रमश: अर्र बकरी घास खो, छोर गठुल्ला बाहर जो.., भरि नगरिमे सोर बौआ मामी तोहर गोर.., चलल कहरिया से कोने नगरिया.., तोहें जनु जाह विदेश, से माधव, तोहें जनु जाह विदेश.., मिथिला केर ई माँटि उड़ल अछि, छुबए गगनक छाती..! गायक श्याम शर्मा तिसरी कसम फिल्ममे मैथिली टोनक अनुभवी रहैथ जे लतिकाजीक देल हारमोनियमकेँ बजबैत रुग्नावस्थामे रेणुजीकेँ सेहो सुनौने रहैथ; विशेष कए विद्यापति रचनावली। आखिर त्रिमासिक रचना अक्टू-दिस. 2004 इस्वीमे मदनजी आ केदारजीकेँ फोटो सहित जे रपट पत्रकार विजय

कुमार मिश्र लेख छापलैन। सेहो ई पता नहि लगा सकला जे ममता गाबए गीतमे खवाशिन आ महन्त तेकर बाद खबासीनकेँ भतिजी आ महन्थक बेटाक प्रेम प्रसंग ओइकालक सामाजिक जीवन चित्रबला कथाक असली लेखक के रहैथ, जखन कि मदनजीक देल कथाकेँ आर्यावर्तक मुम्बइ सम्वाददाता भानू झा जे दरभंगा महाराज केर मझिलाभाइ राजकुमारजीक परम सहयोगी रहैथ (आखिर अजरापर तंत्र मंत्रसँ प्रयोग तँ हेबाक खिस्सा परोक्ष रूपेँ अबिये गेल छै)केँ नापसिन किएक रहै? मुम्बइमे नोकर रमलखन मोने मन खुश रहै किनै? अमेरिकाक सानफ्रांसिस्को जाइसँ पहिने केदार भैयाकेँ अबारा नहितन कहैत बिरलाक छोट भाए, बाबूसाहेब चौधरीक समक्षे दुर्गगंजन कऽ देने रहइ। पोथीमे अपना नानीसंग राजनगर दूबेर आएल सह अभिनेत्री लता बोसक फोटो खुजल दिलसँ सभकेँ स्वीकार्य भेल। तेकर शोभायमान वातावरण समकालीन दर्शक वृन्दकेँ सहजे मोन पड़ै छै..! ❑ (‘वाची’मे प्रकाशित)

दिनकरजीक उत्कर्ष

साहित्य अकादमी आ ज्ञानपीठ पुरस्कारसँ सम्मानित आ पद्मभूषण उपाधिसँ अलंकृत भारतीय काव्य गगन केर अति देदीप्यमान नक्षत्र दिवंगत रामधारी सिंह दिनकर मिथिला'क सपूत छला। अपन वाणीक वाणसँ आगिक वर्षा केनिहार दिनकरजी ओइ महाकवि वर्गमे सँ छैथ जे प्राचीन भारतक गौरवमयी अतीतपर मुग्ध भऽ उठैत रहला। हुनक जन्म बाबू रवि सिंहजीक घर 23 सितम्बर 1908 इस्वीमे बिहार राज्यक मुँगेर जिलान्तर्गत सिमरियाघाट ग्राममे भेल रहैन। ओ मुलत: हिन्दी भाषाक कवि रहैथ। हुनक कवितामे देश प्रेम, राष्ट्रीयता आ मानवतावाद'क भावनाक प्राचुर्य रहैत अछि। शोषण-उत्पीड़न, पतन आ विषम्य केर प्रति हुनक हृदय हुंकार कऽ विद्रोह करैत रहइ। वर्त्तमानमे विशेषतः काव्यमे शोषित समाजक प्रति करुण सहानुभूति आ पैघाउत देखबैबलाक प्रति आक्रोशक भावना देखाइत अछि-

श्वानो को मिलता दूध-वस्त्र, भुखे बालक अकुलाते हैं!

माँ की हड्डी से चिपक, ठिठुर, जाड़े की रात बिताते हैं!!

तँए दिनकरजीक काव्यकेँ दलित मानवता आ सिसकैत करुणाक काव्य कहल गेल हेन। हुनक कविताकेँ द्विवेदी युगीन आलोचनात्मक काव्यधाराक ओजस्वी, प्रगतिशील संस्करण मानल जाइ छइ। अइमे विचार तत्व केर प्रधानता छइ।दिनकरजी आधुनिक कविगण'क पहिले पतियानीमे बैसबाक अधिकारी रहल छैथ; तैपर कोनोटा अतिशयोक्ति नहि। परञ्च एकटा गद्यकारक रूपमे सेहो दिनकरजीक अतिशय ख्याति रहलैन अछि। हुनक गद्य साहित्य अत्यन्त प्रौढ़ आ विचारात्मक अहि। राम चन्द्र शुक्लजीक अनुसारे - गद्य कविजनकेँ कसौटी मानल जाइ छै, दिनकरजी तइ कसौटीपर पूर्णतः ठाढ़ उतरै छैथ। आओर मुख्य रूपेँ विचारात्मक आ समीक्षात्मक निबन्ध लिखने छैथ। संस्कृतिक चार अध्याय नामक अपन पोथीमे ओ भारतीय संस्कृतिक विस्तृत विवरण प्रस्तुत केने छैथ। दिनकरजीक भाषा शैलीमे प्रवाह आ सौष्टव परिपूर्ण

रहलै। काव्य भाषाक तरहेँ हुनक गद्य साहित्य सेहो परिमार्जित छइ। वैचारिक संगे भावनात्मक अपूर्व संयोग दिनकरजीक गद्य शैलीक सभसँ पैघ विशेषता छी। हुनक निबन्धमे यथाअवसर व्यंग्य- विनोदक चुटकी बुझाइत अछि। भारतीय सांस्कृतिक एकता शीर्षक आलेखमे देशक एकतापर गहन विचार कएल गेलइ। अइ देशक भू-भागमे रीति-रेवाज, खान-पीन, रहन-सहन अधिक दृष्टिसँ पर्याप्त अन्तर छइ। तैयो ओही बाह्य अन्तरक बादो अपना देशमे केहेन तरहक आन्तरिक एकता कायम छइ, सएह बुझेबाक लेख केर प्रतिपाद्य थिक रामधारी सिंह दिनकर...। ❑

अक्षर-अक्षर अमृत : पाठकीय टिप्पणी

दिव्यदृष्टि 'मैथिली भाषा-पोथी' सन्धान करब, एकटा पढ़ाकू मन:स्थितिक आन्तरिक पहलू थिक। से मनेमन ठानलौं जे एकटा समय सीमा'क कालखण्ड अपनाए, तहिक मध्य उपलब्ध पोथी ताकि हेरिकऽ संकलन करी। तेतबे नहि मनोयोग पूर्वक पढ़ि, जे बुझैमे आबए से संक्षेपमे लिखल करी। सद्य: पढ़ल पोथी लगधक सयटा लगिचाएल अछि। किछु आलेख सोशल साइट्सपर सेहो यदा-कदा मित्र मण्डलीकेँ स्नेह पाबि फेसबुक पर दैत रहलौं। अपन ई निजी अभिप्राय रहल जे आइसँ लऽ कऽ बीस बरख पूर्व धरि जे पोथी बहराएल ओइमेसँ अध्ययन कएल। तइमे नव पीढ़ीक बीच सेहो अभिरुचि जागय आ पोथी खोजि कए पढ़ए, जइसँ साहित्यक प्रति अभिज्ञान प्रखर होइ। तँए 2000 इस्वीसँ 2020 इस्वी धरिक बीच प्रकाशित अनेक विधाक पोथी पढ़बाक चेष्टामे लागल रहै छी। एकटा साहित्य सेवी हेबाक नाते एते तँ निर्वाह हम कइयेटा सकै छी। तइ प्रसंग जे पहिले पोथी पढ़ने रही, तेकर शुभ संज्ञा अछि- अक्षर-अक्षर अमृत। अइ मैथिली साक्षात्कार पोथीक रचियता छैथ- विश्वनाथ। विश्वनाथजी अपन अइ पोथीमे 20 वर्षक दरमियान सात गोट मुर्धन्य साहित्यकारसँ लेल गेल इन्टरभ्यू जे सन 1976 इस्वीसँ 1995 इस्वी धरिक बीच भेल रहै, तेकर जीवन्त दस्तावेज रूपेँ प्रथम संस्करण 2001 इस्वीमे प्रिंटवेल, टाबर चौक दरभंगासँ मुद्रण, 30 टाका दाम आ 100 पृष्ठ पोथी'क प्रकाशक- मैथिली रचना मञ्च-सोमनाथ निकेतन, शुभंकरपुर दरभंगा आओर कॉपी राइट(सी) आशुतोष कुमार, राहुल रंजनकेँ देने छैथ। 24 मई 2001 इस्वीकेँ निवेदन रूपेँ लेखक स्वंय अइ महागाथा'क तैयारी हेतुए छिड़ियाओल पन्नाकेँ, जे कि प्रसिद्ध मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशितो भेल रहैन, तेकरा समेटि कालजयी महापुरुष'क हृदय अमृत स्वरूप पाठक धरि पुस्तकाकार रूपेँ एकठाम पहुँचए। तइ अभि- प्रेरणाकेँ, आत्म सम्मान आ स्वाभिमान कऽ

संघर्षके, मिथिला- मैथिलीक लोकशक्तिक चिरकालिक अमृतत्वक सरस्वती मातार्कें नमन करैत सोझा आनबामे समर्थ भेला।

प्राय: वयोवृद्ध अवस्थामे जखन कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप', डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण', प्रोफेसर हरिमोहन झा, तन्त्रनाथ झा, श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', बैद्यनाथ (नागार्जुन) मिश्र 'यात्री'आ आरसी प्रसाद सिंहकें रुग्नावस्थामे कष्टप्रद देखला। तइ काल मैथिली साहित्य'क परिचर्चामे केतेक मनोयोग पूर्वक साक्षात्कार भेलैन। से तथ्यपूर्ण लेखनसँ श्री विश्वनाथजी मैथिली साहित्यक अक्षय भण्डारकेँ भरबामे अगूएला। नव पीढ़ी उपरोक्त विद्वान लोकनिक लेखकीय क्षमता तँ पाठ्य पुस्तकमे पढ़ैत काल देखने परेखने होएत, वरन् केना एहेन-ओहन रचनावली तैयार भेलै तेकर दृश्य देखेबामे ई इन्टरभ्यू पोथी अक्षर-अक्षर अमृत 'सार्थकता के' उपादेयताक विविध आयामक परत दर परत पन्ना फ़ोललक अछि।

मिथिलांचल केर प्राचीन रचनाकारक पदचिन्हपर चलैत साहित्यक क्रमिक विकास लेल जे एकटा आन्दोलन चललै तेकर प्रणेतासँ लऽ कऽ सभ तरहक पात्र केर जिम्मा ओ सभ केतेक उठौलैन। सेहो अइ दस्तावेजी पोथीमे मुन्दर्ज देखल गेल अछि। तेकरा बादक मिथिलाक लेखकीय समाज सेहो ओही आन्दोलनकेँ सभा आ मञ्च माध्यमेटा नहि लेखकीय काजसँ आगू बढ़ेबामे प्रेरणा ग्रहण केलक।

अपवादमे मैथिलीक प्रध्यापक वर्ग मैथिली भाषा विकासमे ओतेक अभिरूचि नहि लेलैन। जेतेक नैतिक रूपेँ दायित्व बनैत रहइ। से ओइ समयक प्रोफेसर लेक्चरर मैथिलीक विकास लेल मनेमोन व्रत धारण कऽ मैथिलीक सर्वांगीण समृद्धि लेल उद्यत रहै छला। तइ प्रसंगक गहींर रूपेँ परस्पर चर्चा वार्तालापक क्रममे विश्वनाथ, अमरनाथजी केलैन अछि। मिथिला प्रक्षेत्रमे धियापुताक छठिहारि नाम आ ज्योतिष गणनानुसार पुकारू नाम राखल जाइ छइ। बहुतो गोटेक समाजमे प्रचलित नाम हुनकर भोँटर लिस्ट आ सर्टिफिकेटसँ गायब रहैत अछि। नाम आ उपनामकेँ रोचक बनेने छइ। अनेक कवि अपन उपनाम स्वंय राखैत चर्चित भेला। जखन कि स्वंय उपनामक विरोधी शुरूमे देखाइत रहैथ। देखल जाऊ पाँति-

एखनुक कवि किछु बढ़ि यथा
राखि लेथि उपनाम
मकै मोंछ होइतहिँ मधुप
बालि रखाओल नाम

कवि चूड़ामणि ‘मधुप'जी एकटा पत्रक प्रसंग घटनासँ प्रत्युत्तरमे अपन नाम मधुप बादमे जोड़ि लेलैन जे कालान्तरमे सर्वप्रिय नाम भऽ गेलइ। सुरेन्द्र झा साहित्याचार्य पहिले लिखैथ, बादमे सुमन जोड़ि देलैन। तहिक बाद अपन रचनाक निच्चाँ हस्ताक्षर लग काशीकान्त मिश्र सेहो मधुप सहजे उपनाम जोड़ि लेलैथ। डॉ. काञ्चीनाथ झा उपनाम किरण देखा-देखीमे रखलैथ। जेना कि ओइसँ पूर्व साहित्यकार लोकनि यथा- लक्ष्मीनारायण सिंह ‘सुधांशु', जनार्दन प्रसाद झा’ द्विज’, केदारनाथ मिश्र ‘प्रभात’, बुद्धि नाथ झा ‘कैरव’, वैद्यनाथ मिश्र’ वैदेही’ (पाछां यात्री), प्रोफेसर हरिमोहन झाकेँ हुनक बाबूजी धरि ननकिरबू दुलारसँ कहैथ। तंत्रनाथ बाबूक पाँतिमे नामक जगह मातृकक देल नाम मुकुन्द धरि उधृत रहल अछि। आरसी प्रसाद सिंहजीक नाम संगी-साथी अंगरेजी'क संक्षिप्त नाम धरि राखि देलक, जे पुर्णनाम थिकै- रामचन्द्र प्रसाद सिंह। एकटा नव नामसँ अह्लादित रहैत; साहित्यमे डुमकी लगेने रहला। स्वंय इहो देखलैन। जे आरसी माने आइना उर्दू साहित्यमे होइछ आ हिन्दीमे एकटा मुहावरा छै -हाथ कंगन को आरसी क्या? आब असली नाम कियो नहि सम्बोधन करैन। उपरोक्त रचनाकार'क पहिल मौलिक रचना, आ विशेष रचनासँ लऽ कऽ भोजनक आत्मप्रिय रूचिधरि अइ पोथी माध्यम जानल जा सकैत अछि। के मैथिलीक महापुरुषकेँ सर्वाधिक गुटबाजी केनिहार आ के रिटायरमेन्ट पाइसँ समाजमे मोकदमाबाज कहेलैथ, सभ गम्भीर तथ्यक पूर्ण जनतब अइ पोथीक पाठक पाउत। अइ पोथी मादे भीमनाथ झाजीक अभिमत छैन- ‘अक्षर पुरुष अमर। हुनक लिखल तँ हुनकेटा साहित्य रहै छैन, हुनक कहल मुदा ओही सम्पूर्ण युगक बिराट यथार्थ रहै छइ। हुनका लोकनिक मुहसँ बहराएल अक्षर-अक्षर अमृत थिक। संग्रहित सातों मनीषीक साक्षात्कार -सार संचयमे बीस सालक समय लागल अछि।’ लेखक अइ कृतिकेँ आचार्य रमानाथ झाक स्मृतिमे समर्पित केने छैथ। ❑ (‘वाची’ पत्रिकामे प्रकाशित)

आतंकित नेपथ्य डॉ. (प्रो.) ब्रह्मदेव प्रसाद

शब्द प्रकाशन, नइ दिल्लीसँ 2017 इस्वीमे राष्ट्र भाषा नाटक आतंकित नेपथ्य' 63 पृष्ठक बहराएल। अइ भारती (हिन्दी) पोथीक दाम भा.रू. 150 टाका छइ। अइ पोथी'क लेखक ब्रह्मदेव प्रसाद कार्यीजी भारतकेँ राष्ट्र भाषा हिन्दी लेल 'भारती' संज्ञाकेँ स्वीकृति खातीर अभिलाषा रखनिहार प्रस्तावक-प्रचारक सन्त महर्षि मेहीजी आ हुनक समस्वर सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी व सांसद तथा साहित्यकार पद्मभूषण सेठ गोविन्द दासजीक प्रति श्रधा सहित समर्पित केने छैथ। पोथीक आवरण सज्जा बड़ नीक बुझाएत। जइमे गाँधीजी, शास्त्रीजी, डॉ. अम्बेदकरजी आ विवेकानन्दजीक मुखाकृति आभा सहजे पाठककेँ अपना दिस खिंचैत अछि। पैछला गत्तापर नाटककार सहित पहिल खेप हिन्दी समाहार मञ्च, दरभंगा दिससँ आयोजित सारस्वत समारोहमे सी.एम. कॉलेजक छात्र-छात्रागण जे प्रतिभागी छइ, यथा- सुभाष कुमार कामत, रोहणी कुमारी, प्रभुनाथ कुमार, शिवानी, वन्दना, पूजा, वन्दना, अरबाज आलम आ कुणाल वैभव केर सचित्र फोटो लागल भेटत। कालीपट्टीक पर्याय श्री कार्यीजी अपना संग अइ रंगकर्मी कलाकारकेँ नवरत्न धरि कहैत हार्दिक आभार व्यक्त केने छैथ। आभार तँ बहुतो पैघ व्यक्तित्वक प्रति केनहि छैथ जे हमरा हटनीमे 'मिथिला विभूति स्मृति समारोह' केर शोभा बढ़ेनहार समस्तीपुर जिलाक निवासी स्व. डॉ. कृष्णचँद झा मयंककेँ सेहो विभागीय सहयोगक प्रति आभार प्रकट केनै छैथ। डॉ. ब्रह्मदेव प्रसाद कार्यी मिथिला विश्वविद्यालय प्रोफेसर आ हिन्दी विभागाध्यक्ष सी.एम. कॉलेज केर रहल छैथ। आहत और शब्द सत्यता केर सम्पादक संगे राष्ट्रीय सार्थकता अभियानक संयोजक छैथ। मूलतः ओ गजलकार छैथ, जिनकर सातटा गज़ल पोथी 2004 इस्वीसँ 2013 इस्वी धरिमे प्रकाशित भेल छैन। तीनटा पोथी हिनकर गज़लपर समीक्षा आधारित शंभू अगेही आ डॉ. उमेश उत्पल एवम् डॉ. कृतार्थ शंकर पाठक केर सेहो निकलल छैन। आनो चर्चित कृति हिनका नामे साहित्य जगतमे

छइ। ओना तँ ई महाशय कहै छैथ हम मातृभाषाक संरक्षण आ उन्नयन केर पक्षधर छी, हमर मात्रभाषा वज्जिका अछि; जे उत्तर बिहारमे समृद्ध भाषा थिक। अइकेँ ओ मैथिलीसँ भिन्न मानै छैथ। तहिना दक्षिणमे संथाली आ पुरब भागमे अंगिका कहियो मैथिलीसँ बहराएल, से पृथक रूपेँ परिष्कार होइत गेल। प्रस्तुत आतंकित नेपथ्यमे अग्नि आ नोर दुनू छइ। अइ एकांकी नाटक केर माध्यमसँ उच्चतर शिक्षा जगतमे अराजक बर्तमान; चमचासँ चिपकल तानाशाहक प्रशासकीय विभत्स रूप, जेकर पोलपट्टी खुजैत दृष्टिगोचर दर्शककेँ होइत अछि। जइ भाषासँ खाएत गुजर करत, तइ पेनमे छेद करत। दृश्य एकसँ सात धरिकेँ कथावस्तु पात्र द्वारा वार्तालाप देखाएल गेल छइ। बीच-बीचमे गुरू वन्दना-सरस्वती वन्दना सेहो छइ। मञ्चपर समस्त पात्र दिससँ भारत वन्दना गौनाइ आ आखिरीमे अनुनय, भारत माता की जय हो, धन्य! धन्य! हिन्दी!, भारत की योग-भूमि की भाषा आ जय भारत.! जय भारती! काव्य सेहो देल गेल छइ। प्रोफेसर पुष्प रंजन, वाइस प्रिंसिपल आ डॉ. चन्द्र भूषण, डॉ. भवभूति, डॉ. कृपाचार्य, डॉ. भृगुनन्दन पात्र यथेष्ट सुसंस्कारित वाणी भाखै छइ। सम्भावना, काव्या, आ मन्दाकिनीक वक्तव्य सेहो रुचिगर कथ्य दर्शककेँ लगै छइ। एशोशिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग अइ एकांकीमे कहै छै- ‘मैं हिन्दी दिवस मनाने के ही विरुद्ध हूँ।’ अइ एकांकी पुस्तिकासँ ज्ञानवर्धक हेबामे एकोमिसिया शंसय नहि; एकर प्रस्तुति धरि 14 सितम्वर केर सार्थकताकेँ महौत बढ़ौत से पूर्ण बिश्वास जागैत अछि।

कठिन परिश्रमी आ राजनेताओ रूपमे जानल मानल चेहरा श्री कार्यीजीकेँ लेखनीकेँ शत्-शत् प्रणाम्।

मारीशश होइ अथवा आन कोनो देश वा राज्य, जगैत-सुतैत हरसमेत कार्याजीक कपारपर करिया पट्टी बान्हले दृष्टिगोचर होएत। ई भ्रष्टाचारक विरूद्ध हिनका आजन्म काल धरि लगले रहि जाएत। श्लोक प्रकाशनकँ सपरिवार मिलकऽ दरभंगामे चलाबैत बहुतो नव लेखककेँ आगू बढ़बैत रहला अछि। ❑

समकालीन मैथिली साहित्य कवि- कपिलेश्वर राउत

लगधक एक दशकसँ कविता क्षेत्रमे सुनल चर्चित नाम अछि-श्री कपिलेश्वर राउत। हिनकर जन्म 30 अप्रैल 1952 इस्वीकेँ स्व. रामस्वरूप राउत आ स्व. ज्ञानी देवीक घर ग्राम बेरमा प्रखण्ड लखनौर भाया तमुरिया जिला मधुबनीमे भेलैन। अन्तर स्नातक 'कला' उत्तीर्ण श्री राउतजीकेँ दादाजी स्व. चौधरी राउत आ दादी झिंगुरी देवीसँ बहुत दुलार भेटलैन। पत्नी स्व. लालदाइ देवी आ पुत्र लालकुमार, रामानन्द प्रसाद आ श्याम प्रसादसँ सतत् सिनेह रहलैन अछि। मूलत: कविजी कथाकार छैथ। हिनक मैथिलीमे 'उलहन' आ 'पुनर्नवा' कथा-संग्रह प्रकाशित भेल छैन।

सद्य प्रकाशित 'पञ्चदीप' कविता संग्रह 2018 इस्वीमे पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ 78 पृष्ठक पोथी छपि चुकल छैन, जहिक कीमत 150 टाका छइ। अइ मैथिली काव्य संग्रहमे 28 टा नव कविताक स्थान देल गेलइ। जइमे 23 क्रमपर पञ्चदीप शीर्षक कविता छपल छइ। अइ पोथीक उपयोगिता पाठक बूझय आ प्रकाशनसँ मँगा कए पढ़ए, तइले पोथीक रूपसज्जा पाँच दियारि टेमी जरै छवि आकर्षित करै छइ।

कविक बारेमे समालोचक डॉ. शिवकुमार प्रसादजी कहै छैथ- 'मिथिलांचलक घर आँगन, दुरा-दरबज्जा, चुल्हि-चिनवार, बान्ह-आड़ि, कलम-गाछी, पोखैर-इनार आदिपर हँसैत-बसैत जिनगीक अन्हार-इजोत, ज्ञात-अज्ञात, दाँव-पेंचक बीच कटैत जिनगीक छोट-छोट अंशसँ निश्चित रूपेँ हमरा अपना संगे-संग ल जेबामे सक्षम छइ। कविजी आशु कविताक धारामे रचना करैत अपना डगरकेँ सुगम करबामे सक्षम छैथ। कविजीकेँ प्राथमिक स्तरक विधार्थी लेल सेहो बहुत किछु लिखनाइ शेष छैन, तही प्रसंग शिव कुमार झाजीक अभिमत छैन नेना भुटकामे देसिल वयनाक प्रति सिनेह जगाएब आवश्यक अछि' अइ लेल साहित्यकेँ समकालीन कविकेँ सजग रहए पड़तै। कपिलेश्वर राउतजी प्रथमदीप लेसि कऽ आ बेराबेरी पाँचो दीप जरबैत एक-एकटा समर्पित

करैत गाबै छैथ-

प्रथमदीप पञ्च भौतिक... जीवक
निर्मान कए जलचर, थलचर नभचरक
जे निर्माण केलैन।
एक दीप तिनका लेल।

अइ तरहेँ दोसर दीप बीर बाँकुराकेँ जे अपन जिनगी उसरगि सर्दी, गर्मी, बरसात, झाँट-बिहाड़िक सामना कए देशक रक्षा करै छैथ। तेसर दीप ओइ महापुरुषकेँ जे शीत-रौद, पानि-बिहाड़िकेँ सहैत अन्नदाता किसान ले किएक तँ ओ अपन जिनगी धरि उसरगने छइ। चारीम दीप ओइ बलिदानी शहीदकेँ जे अपन जान, आन-वान शानक चलैत देशक स्वाधिनता लेल हँसैत-हँसैत फाँसीपर चाढ़ि गेला आ पाँचम दीप ओइ ब्रह्मस्वरूप रचियिताकेँ सृजनकर्त्ता, वैज्ञानिककेँ जे ब्रह्मा बनि दुनियाँकेँ रचि-रचि हेराएल रास्ता देखौलैन। हिनक पहिल कविताक (अपन भाषा) पाँति देखू-

माइक ओद्रमे जे भाषा सिखलक
प्रदेश जा सभ बिसरलक।
गाम आबि काहे-कुहे बजैए
लोक कहैत आब बड्ड बुझैए।
अप्पन भाषा मैथिलीकेँ बिसरैए। ❑

कविवर बद्रीनाथ रायजीक 57म जन्मदिन

कलुआही, मधुबनीक प्रसिद्ध गाम करमौलीमे मैथिली सेवक श्रीमान बद्री नाथजीक जन्म भेल। आ शिक्षा ग्रहण केलैन एच.पी.एस. मधेपुरसँ। मैथिली भाषा साहित्यिक अहर्निश सेनानीक रूपमे केतेको मञ्चसँ आ शोसल साइटपर अपन काव्यधारा केर अजस्त्र श्रोत दखेने छैथ। ई कहब अतिशयोक्ति कोनोटा नहि जे सुच्चामैथिल बैनरमे धुम मचेने छैथ। हिनक अमात्य जातिक गौरवगाथाक झलक सेहो पाठक पौवने अछि। समय-समयपर हिनक निम्न पाँति सेहो मित्र मण्डलीकैँ खूब आकर्षित करैत रहल अछि। हिनका कवितामे ओज आ तुकबन्दीक मिलान किनकोसँ कम नहि। तँए रोचकता पूर्वक गेयात्मक अविरल धारा सहजे लोककैँ अपना दिस घिचैत अछि। आइ हुनक जयन्ती तिथि 24 जून थिक तँ हम संगी-साथी केर संग हुनका पथिया भरि-भरि शुभकामना दैत छिऐन। अइ आशाक संग जे सभ छिरियाएल कविताक संग्रह एकठाम करैत पाठक धरि आ मैथिली विषयक शोधार्थी धरि सुलभ करैथ। मिथिला पहिचानकैँ क्षितिजपर देखबए-बला भारतीय दर्शन केर आदर्श प्रभूश्री रामसँ सेहो ई अपन पाँतिमे विनय केलाह हेन। तेकर एकटा बानगी सारांश देखल जाए-मिथिला मैथिली हृदय बिहारी मर्यादा पुरुषोत्तम पाहुन श्रीरामकैँ शुभाशीष आओर ब्रह्मक रूपमे शत् शत् प्रणाम। हमर दुलारु बहिनकैँ काननमे त्यागि कोन मर्यादाक रक्षा केलौं? हमरा प्रश्नक उत्तर चाही। वर्तमान सामाजिक समरसता पर चोट करैत एकपाँति देलैन अछि-

विद्यापतिजी बहुत पुजेला।

मुदा नहि भेटल मिथिला राज्य।

एक बेर लोरीककैँ पूजियौ।

देखबै बनतै सभ टा काज।

अपन सोचकैँ आरो परिष्कार करैत

चोटगर रूपेँ गाबै छैथ,,,

हमर समाजक सुच्चा मैथिल,

दीनाभद्री ओ सलहेस।

चननि देखि कए, दूर भगै छल

दैहिक दैविक रोग क्लेश।

अइ तरहेँ दोहा-चौपाइ सृजीत करैत गम्भीर तथ्य परसलैन। से देखि मनन करए पड़त-

धर्मक पैरकेँ कटलौं सभ दिन, हम धर्मक अधिकारी।

शिक्षा दान केलौं नहि कहियो, शिक्षा केर व्यवसायी।

हम शिक्षाकेर दान करब नहि मुदा दक्षिणा चाही।

बिना त्याग करि देत करी की, सोनियो नहि हरबाही।

प्रौढ़ अवस्थाक पार करैत जीवनमे बहुत किछु देखला, भोगला आ समीचीन आकलन करैत सदैव लागले रहै छैथ-

भरि जीवन पतझरे देखलौं नहि बसन्त केर दर्शन भेल।

आँखिसँ नोर बहल अछि अविरल सपना सभ निरर्थक गेल। सामाजिक-राजनीतिक जागृति क आकांक्षामे जोहैत बाट निरपेक्ष नहि देखाइत अछि, तँए ओ जनतासँ अपन अपील करैछ। विवेकसँ काज चलेबाक फरिच्छ वातावरण समकालीन समयमे बनेबाक ओरियान धरि स्वंय करए पड़तै; से अपन उद्वगिन भाव दरसाबैत कहै छैथ-

चोटी चानन हक्कन कनैए, दाढ़ी बैसल कोरामे।

राम-रहिम राजनीति अछि लागल लोग निहोरामे।

हम आ श्रीरायजी मझौरा, छजनामे सगर राति दीप जरय कथा गोष्ठीमे संग रहि, अपन वाणी शैली श्रोताकेँ सुनाबैत मुग्ध केने रहैथ। मैथिलीक तीक्ष्ण हस्ताक्षरकेँ जन्मदिनक बहुत-बहुत बधाइ। ❑

टिकापट्टी संग्राम

काव्य शिरोमणी रविन्द्र नाथ टैगोर, काव्य सम्राट हरिवंशराय बच्चन स्मृति सम्मानसँ (जी.वी. प्रकाशन-जालन्धर) हिन्दी साहित्य जगतमे सम्मानित सर्वश्री मोहीचन्द केशरीजीक प्रकाशित उक्त पोथी शान्ति-सन्देश प्रेस महर्षि मेहीँ आश्रम कुप्पाघाट -भागलपुर (बिहार)सँ छपल अछि। अइ पोथीक प्रकाशन 2019 इस्वीमे भेल, जेकर दाम 50 टाका आ कुल पृष्ठ सं. 138 टा छइ। लेखक स्वयं प्रकाशक रूपैँ उत्तराधिकारी स्वतंत्रता सेनानी संगठन-टीकापट्टी पूर्णियाँ; एकर वर्ण-संयोजक एम.ए.-बी.एड. श्री राजेन्द्र शाह छैथ। एकटा एहेन संस्थागत गाम जे पूर्णियाँ प्रमण्डलमे सर्वाधिक चर्चित टिकापट्टी ग्राम थिक, जेतए सभा सोसाइटी, जयन्ती, उत्सव, सांस्कृतिक आ राजनीतिक गतिविधि आजादीसँ पूर्व आ एखन धरि होइत रहैत अछि। अइ गाममे उच्च पदाधिकारीसँ लऽ कऽ शीर्षस्थ नेतृत्वकर्त्तागणक शुभ आगमन होइत रहल अछि। अइ गामक सुप्रसिद्ध कैवर्त्त समाजक एकटा पैघ परिवारक अवदान केर उदाहरण रैयतमे दोसर कियो नहि बिहारमे भेला, जइकेँ चर्चा अइ पोथीमे विस्तारसँ लेखक मोही चन्दजी लिखलैन। अइ पोथीमे गद्य आ पद्य केर माध्यमसँ अपन लेखकीय क्षमताकेँ उजागर करैमे श्री केशरीजी आगू एला अछि। कैवर्त्त (केवट-कियोट) जातिक महाशक्ति आ प्रेरणा स्थल रूपैँ अइ टिकापट्टीकेँ जानल जाइ छै, जेतए तीर्थस्थल बुझि हमरो पहुँचबाक लालसा मोनमे ठेह बनेने अछि। अइ पौणारिक गामक बनावट आ बसावट एवम् केतेको उपजाति-जातिक रहबासीय समरसता जे ओतए छइ, तेकर तथ्य जनबाक लेल पाठककेँ विषय सूचिमे 53 पाठ शीर्षक दृष्टिगोचर होएत। संगहि लंकाटोल केर बुचाय मण्डल आ विपदा मण्डल आ ठिठरु मण्डलजीक पाँच पीढ़ीक कुर्सीनामा सेहो फुटे-फुटे देखाय पड़त। कवि केशरीजी कैवर्त्त और क्रान्ति 1942 ई. तुकबन्दी भावक पर्चा 11 अक्टूबर 2019 इस्वीमे कलाभवन पूर्णीया केर अखिल भारत कैवर्त्त कल्याण समिति'क सम्मेलनमे बँटने रहैथ,

दर्शक दीर्घामे हमरो हाथ लागल रहए। 26 नवम्बर 2018 पटना स्थित श्री कृष्ण मेमोरियल हॉलमे कैवर्त, केवट, क्योट जातीय राष्ट्रीय महासभामे 15000 लगधक जमघटक बीच 5 मिनटक समय भेटलापर 'गागरमे सागर' पद्द सुनेवामे सेहो केशरीजी समर्थ भेला, जखन कि ओ स्वयं बयोवृद्ध छैथ। सारगर्भित कवितधारा जे बहल से पृष्ठ संख्या 118आ 119 पढ़लौं। सहजे नीक अभिरूचि जगलैन, केशरीजीकेँ रचना बड़ नीमन भेल छैन; ऐपर व्यापक पोथी समिक्षा धरि हेबाक चाहि। जइसँ आरो जिज्ञासु लोक ग्राहक बनि पोथी कीनि सकत। हम प्रणाम करै छी दाता परिवारकेँ जे देशरत्न डॉ. राजेन्द्र बाबूकेँ आह्वानपर पाँच एकर भूमि स्वराज्य आश्रम लेल ब्रिटिश हूकूमतक बिनु परवाह केने देलैन..। अइ दानक प्रतिक्रियामे ठिठरू मण्डलजीकेँ तीनूभाय वृद्धावस्थामे आ अपन चारू बेटाक संगे जहल यातना, लाठीक कूप्रहार भोगए पड़लैन। कारावाससँ निकललापर कनिष्ट वीरपुत्र सूर्यनारायण मण्डल शहीद भऽ गेला हुनका नामपर सर्वोदय हाइस्कूल स्थापित करैमे 34 एकड़ भूमि दान-पत्र विधबा पुतौहु केलैन। आ 5 बिगहामे शहीद चौक व दस एकड़ जमीन बेचकऽ बाजार गाममे बसेलैन। संगहि 20 बिगहा जमीन हाट लेल देलैन। 151 एकड़ भूमि धार्मिक ठाकुर बारीमे देने छैथ, संगहि 80 बिगहा दान केलैन। विशाल शिवालय बनौलैन। जइमे 50 बिगहा भूमि देने छइ। 14टा इनार खुनौलैन। अइ उत्कर्षक बाद चौरासी मरड़ स्तरीय महाभोज सभ जातिक लइ सेहो 7 प्रकार मिष्ठानक सभजाना रूपेँ आयोजन केलैन। एहेन जे परोपट्टामे'नै भूतों न भविष्यति सन स्मृति बनल छइ। यज्ञक पूर्णाहुतिमे अपना ओजन बराबरि सोना-चानीधातु काशीक ब्राह्मण पण्डितकेँ दान देलैन। श्रधेय ठिठरू बाबूकेँ एक पौत्र श्री जय नारायण मण्डल पेसर बैजू केवट करोड़ो टाका खर्च कऽ विवाह भवन सेहो बनेने छइ।

महान उदारवादी आ दानवीर केर धरती-माएकेँ करबद्ध स्तुति अछि। ❑

कथा एक पोथीक : हमर टोल

मैथिली साहित्यक उपन्यास जगतमे प्रो. हरिमोहन झाक कन्यादान-दुरागमन आ मनिपद्म केर नवका बनजाराक बाद ठहराव जकाँ भेल रहल अछि। तइ खगताकेँ आरो उपन्यासकारक संग- संग अइ दशकमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी बाढ़ि आनि देलैन। तही क्रममे कवि कथाकार श्री राज देव मण्डलजीक प्रादुर्भाव सेहो होइछ, आ हिनक सद्य प्रकाशित'हमरटोल'श्रुति प्रकाशनसँ 2013 इस्वीमे बहराएल। दाम 200 टाका पृष्ठ संख्या 96 आई. एस. बी. एन प्राप्त अइ पोथीक उपन्यासकार राजदेव मण्डलजीक गाम मुसहरनियाँ पूबारि टोल जे मधुबनी जिला अन्तर्गत पड़ैत अछि, हम बहुतो बेर गेल छी। अइ पोथीक समस्त मिथिलांचल लेल समर्पित करैत श्री मण्डलजीक कहब छैन-

'गामसँ केना अन्धबिश्वास, जरता आ जीद्दकेँ हटाओल जाएत। ज्ञान - विज्ञान बढ़िकए केते आगू चलि गेल आ ग्रामीण क्षेत्र एखनो पाछू छइ। झार-फूक केर परोक्षमे कुत्सित कामवासनासँ शोषण दोहन आ अनैतिकता बढ़बैत जनतरो बेचैत, अवैध कमाइक जरिया बनेने पीढ़ी दर पीढ़ीसँ गहबर गोहारि धरिक परिपाटी अक्षुण्ण राखबाक धृष्टताक एकटा विचारकेँ सामाजिक मान्यता पौराणिक स्तरपर ठाढ़ केने छइ। साहित्यकार श्री गजेन्द्र ठाकुरजीकेँ अभिमत पैछला गत्तापर पाठककेँ छापल भेटत। ओ कहै छैथ- 'यात्रीजीक पारोकेँ मिथिलाक ब्राह्मण जातिक तत्कालीन सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति जे फस्ट हैंड विवरण रहए, सएह राजदेवजीक उपन्यास धानुक जातिक सामाजिक परिस्थिति दिस समाज सुधारक दृष्टिसँ लिखल गेल अछि। ललितक-पृथ्वी पुत्रक बाद मैथिलीमे मण्डलजीक ई पोथी सरिपहुँ साँच कथापर आधारित ठाढ़ देखाइत अछि। अइ पोथीक मादे दुर्गानन्द मण्डलजी कहै छैथ उपन्यासमे देखौल गेल समस्या अन्धबिसवास, गरीबी, पनचैती, लुचपनी, बरियातीक मान सनोमान आ सामाजिक समरसता इत्यादिक जीवन्त लेखन भेल अछि। अइमे

शिल्पकार रूपेँ राजदेवजीक कलम चलल छैन। बात-विषय कोनो किएने होइ, अपराध आ पाप केहनो किए ने होइ जातिकेँ भोज दऽ कऽ अइसँ त्राण भेटि जाएत... अन्यथा जातिसँ बाड़ल जाएब। से शीलाक बाबू अकलू मड़रकेँ श्राधमे भोजक अरसठा नहि भेलसन्ता ओकरा काका झटकू मडरकेँ समाज आगि-पानि बन्द करैत ढाइठ दइ छइ। तइ पित्ति पितियानिसँ कहियोकाल त्रस्त भए शीला बीच बाधक पिपरक बड़का भुताहि गाछ लग आबि कनैत अपन अम्वोहि प्रेम रखनिहार झटकूमड़र केर बेटा अजय बी.एस-सी. केर केतेको माससँ बाट जोहैत देखाइत अछि। अनचोकेमे अजैयाकेँ बड़बराइत देखि पाछूसँ बाल्टीनक पानि माथपर ढारिते दुनू पिछैर गेलै जे एक-दोसरकेँ गछाड़ि जल-किड़ा चौरा कए करैत रहलै। आ शीला-अजय बहिनक बिआह राति पछुआर केराक वनमे मच्छरसँ कटबैत गहुमन साँपक जोड़ा सन जुटल अर्थपूर्ण गप्पमे नुकाएल देखाइत अछि। एना भऽ कऽ लाइट स्टोरीमे विभूति आनन्द धरि नहि लेलैन। जेतेक रोचकतासँ मनलगू विषयकेँ छुअल गेल हेन। ❑

लाल ओसक बुन्न मादे टिप्पणी

मैथिली साहित्यमे सशक्त अभिव्यक्ति काव्यक माध्यम लाल ओसक बुन्नमे ठोसरूपेँ मुँहपर कहैत युवा कवि गुफरान जीलानी निभेर पथपर चलला अछि। 104 पृष्ठक, कीमत 150 टाका मैथिली कविताक पोथी नवारम्भ प्रकाशन मधुबनीसँ 2018 इस्वीमे प्रकाशित भेल, जेकर मुद्रण छपाइ ऑफसेट प्रेस शाहदरा दिल्लीसँ भेल छइ। त्रूटि रहित अइ आकर्षक कभर केर पोथीक कागत बड़ निमन छइ।

नवोदित युवा कविक पूर्वसँ हिन्दीमे पत्रिका तहजीव, तालीम, नइ तालीम आ दृष्टिमे सम्पादक हैसियतसँ पहिचान भेले रहै; आब मैथिलीमे एक दशकसँ सेहो हिनक कसगर हस्तक्षेप भेल हेन। मैथिलीमे अइ पोथीक हुनक धर्मपत्नी सफीया जमालक (उर्दूक साहित्य सेवी) जे अपन कैचासँ पति महोदयक पहिल कृति छपेबाक आर्थिक प्रबन्ध केलैन। हुनकर सहित परिवारक तमाम सहयोगी आ दोसरो परम सहयोगीकेँ जीलानी साहेब आभार प्रकट करैत... अइ पोथीकेँ अम्मा नसीमा जीलानी, अब्बा गुलाम जीलानी आ भाय लूकमान जीलानीजीकेँ समर्पित केलाह अछि। मूलरूपसँ कथाकार, नाटककार आ उपन्यासमे रूचि रखनिहार जिलानिजीक जन्म 11 फरबरी 1987 इस्वीकेँ गाम धमसाइन थाना अलीनगर जि. दरभंगामे भेल छैन जे बेता-इदगाह रोड लहेरियासरायमे रहै छैथ।

हिनक शिक्षा जामिया मिल्लिया इस्लामियासँ एम.ए., एमएड. धरि शिक्षा शास्त्रमे यू.जी.सी नेट पास केने छैथ। सम्प्रति केन्द्रीय विश्वविद्यालय मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटीमे अध्यापन आ स्वतन्त्र लेखनमे लागल छैथ। गुफरानजीक पहिल कविता मुसलमान छी हम केर पाँति दृष्टव्य अछि-

... वंशज हम नहि छी

बाबर आ गजनीक

हम तँ

अइ माटि-पानिसँ उगल

माँ जानकीक सन्तान छी

मुसलमान छी हम

मिथिलाक मुस्लिम...

लाल ओसक बुन्नमे कवि गाबै छैथ-

...तरुआरि तेजगर

त्रिशूल नोकगर भऽ रहल अछि

लोकक मानसिकता

हरियरसँ आर हरियर

केसरियासँ आर केसरिया भऽ रहल अछि। अइ संग्रहमे 47 कविता आ 9 हाइकू देल अछि, जे पाठक वर्गकेँ नीक लागत आ विचारि करैक लेल मानस पटलकेँ झकझोरत ई हमर मोन गच्छैत अछि। कवि महोदय अपन सभ कवितामे प्रगतिवाद दिस घुमैक लेल अपील करैत अछि। देश आ समाजमे विडम्बना छइ, तेकर काट निश्चिते समयसँ होइ तइ दिस अपना कविताक माध्यम फरिच्छ तथ्य परोसैत आशान्वित छैथ जे ई पोथी निश्चते धूम मचाकेँ रहत। जल संकटपर चिन्ता वाजिब छइ, कवितामे एकटा पाँति आएल छै;

देखल जाऊ- ... पानिक आसमे

सुखि जाएत कण्ठक लार

गाए केर दूध

महिसक दूध

आ

सुखि जाएत लइकोरिक दूध सेहो...

शिक्षित बेरोजगारक जे धधक छै तइमे व्यवस्थाक दोख छइ, तँए आइ उच्च शिक्षा प्राप्त, नौकरीक बाट सेबैतिया चिड़ै जकाँ जोहैत युवासँ पुरुष

आऔर औरत वयस क्रमकेँ पार करैत दूटा दुधकटुआ बचोक आ माए-बाबूक बृद्धावस्थाक संगहि माए-बहिनक दायित्वक भार केना कऽ उठाओल जाए, से किछु नहि फुरा रहल छइ, तँ आत्महत्या धरि करबाक मंत्रणा कनियोँसँ तँ...।❑

सुप्रसिद्ध नाटककार बेचन ठाकुर

सुप्रसिद्ध नाटककार बेचन ठाकुर- चनौरागंज (मधुबनी) विगत 35 सालसँ अभिनय क्षेत्रमे चर्चित छैथ। मिथिलाक बाहरो परिचय धरिक किनको मुँहताज नहि। हिनक लिखल श्रुति प्रकाशन-दिल्लीसँ प्रकाशित मैथिली पोथी' बाप भेल पित्ती आ अधिकार' 2012 इस्वीमे 119 पृष्ठक निकलल, जेकर दाम दू सय टाका छइ। अइ मैथिली साहित्य पोथीमे दू विधा अछि जे क्रमश: नाट्य आ एकांकी रूपेँ अछि। श्री बेचन ठाकुरजीक दर्जनो नाटक ग्रामीण समाज देखने छैथ, पढ़ने छैथ आ मोन रखने होएत। हम बेचनजीक बेचैनीकेँ परेखि सकै छी, हुनक लेखन- रचना क्षमता अद्भुत छैन। नाट्यशास्त्र मिथिलामे प्राचीन समयसँ आबि रहल विषय थिक। हमरा देशक भागमे जेतेकपर समीक्षक गण लिखलैन। वास्तवमे से तेतेक नहि रहइ। परञ्च बाप भेल पित्तीमे बहुत किछु दर्शककेँ अपना दिस खिंचैए। बापकेँ बाबूक जगह पापा कहब प्रयुक्त निठाहे भेल छै जे समकालीन समाजमे बोलचालक वाणी प्राय: भऽ गेल अछि। तँए कथावस्तु प्रभावित होइत हो से नहि। अइ सामाजिक नाटकमे सभ अंकक सभ दृश्य जिवन्तता अपनामे भरने छै तँए ग्रामीण क्षेत्रक नव कलाकार अइ नाटककेँ पढ़ि अपना कला मञ्चपर एकर सफल मञ्चन करैथ, जइसँ समाज सुधारक नव दृष्टिक बोध हेतइ।

सामाजिक एवम् क्रान्तिकारी मैथिली लघु नाटक 'अधिकार'मे श्रीठाकुरजी आवास योजनामे नग्नलूट जे मचल छै तैपर साधल प्रहार करैत कथ्यकेँ नीक जकाँ राखबामे पूर्ण समर्थ भेला अछि। गामक मुखिया आ तेकर मुहलगुआ केर व्यवहारसँ गरीब मंजूर सपरिवार केतेक दुःखी रहै छै आ हुनका बिनोद नेताजीक सलाहसँ निच्चाँसँ ऊपर धरि सूचना अधिकार कानूनक प्रयोग केला-सन्ता केतेक साहस बढ़ै छै आ पत्रकार, टी.वी. चैनलक मैनेजर श्री अखिलेशसँ हकक लड़ाइ लेल धन्यवाद पुरस्कार आ दिल्ली मञ्चसँ सम्बोधन होइत काल सभ प्राणीक रूइयाँ-रुइयाँ पुलकित भऽ रहल छेलै से विजय गर्व

छी। सूचना सह आयुक्त अनजार आ जगदीशपुरक श्यामानन्दजीक स्नेहसँ अधिकारसँ वंचित रिक्शाचालक मंजूर 20000 केर जगह 5000 टाका बेसि इन्दिरा अवास सन्दर्भमे चन्दन आ अमरनाथसँ कैंचा पाबि जाइ छइ। एगारहम दृश्यमे सम्वादक धारावाहिकता एहेन सन जे पटनाक आयुक्त ब्रह्मदेवजीक ओतए जँ धन्यवाद नहि देल जेतै तँ मंजुरकेँ बड़को ऑफिस बकबास आ बेमतलव बुझाइतै, संगहि पैघो हाकिमपर सँ विश्वास हटि जेतइ। सूचना अधिकार'क जे कार्यकर्त्ता हेता, हुनका अपना जीवनकालक अनुभवसँ अइ दृश्यमे भावबिह्वल होएब प्रासांगिक बुझाइत। तेरहम दृश्यमे एकटा भाव मनोविनोदक अबैत अछि, जखन खुशबुक माए नजीमा अपना पत्ति मंजूरसँ कहै छथिन- तोहूँ जा झारा-झपटासँ भऽ आबह। तोरा खुच-खुच झरे लगैत रहै छह। अइ पोथीक मादे विख्यात साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुरजीक अभिमत पैछला कोभरपर सारगर्भित अछि। ❑

मिथिलाक रोहित यादव

मिथिलामे बच्चा-बच्चा धरि आब रोहित यादवजीकेँ नाम सुनने अछि आ बेसी रास लोक जानितो छइ। रजिस्टर्ड'सुच्चा मैथिल' बैनर लऽ कऽ मिथिलाक दलित, पछुआएल मुसलमान आ निचला तबकाक लोक जे अप्पन मातृभाषा मैथिली आ अइठामक संस्कृतिकेँ अखनो धरि संजोगिकए रखने छैथ तइ सुच्चा मैथिल केर विकास केना होएत। अहि लेल ई संस्था अइ तरहक समाजक लोककेँ एकजुट करत।

जय जानकी आ जय सलहेस सन नाराकेँ मिथिलांचलसँ बाहर धरि केतेको कस्वा आ शहरमे पसारलैन अछि। रोहितजी तरुण रहितो पुरान अनुभवीसँ कमतर योग्य नहि, आओर बेहतर शिक्षाक प्रसार, मिथिलासँ बाहरमे रहनिहारक बीच अपन मातृभाषाक गौरव जगेबाक पूर्ण कोशिश, मिथिलाक लोक-देवता आ वीर पुरुष राजा सलहेस-दीनाभद्री वीर लोरीक आ गौहरा मामाक इतिहासकेँ ऊपर राखैत मिथिला विभूतिक मान्यता दैत दुनियाँक सोझा आनबाक काज करैत अछि।

मिथिलाक बहुतो संचालित संस्था रहैत सुच्चा मैथिलक आवाज मञ्चसँ उजागर भेलासँ ग्रहणकेँ फरिच्छ करब, सभ वर्गक, जातिक, धर्मक लोककेँ संस्थासँ जोरबाक सतत प्रयासे टा नहि करै छैथ वरण समाजमे बेमेल बिआह, बाल-विवाह, तिलक दहेज सन अभिशापसँ दूर रहैत, निसहाय-गरीब धिया केर बिआहमे मदैत देबाक भरिसक कोशिश करै छैथ। मिथिलाराज्य आन्दोलनपर सशर्त्त सहयोग संगे ऐतिहासिक धरोहर सभक अपेक्षित विकास हेतु संघर्ष करैत आगू छैथ। मैथिली साहित्यसँ सरोकार राखि मौलिक रचना सेहो करै छैथ।

कोशी सन्देश अंक 7 मे छपल किछु कविताक अंशत: पाँति देखू-

गइ फुलकुम्मरि सुनै छैंए आ कि अनठेने छैंए

देबैंए जवाब तरफर आ कि मेहिएने छैंए

नहि बन एतेक निरमोही, करबौ, प्रेम अम्बोहि
बुझिकऽ हियाक सभबात, झूठों एतेक सतेने छैंए...

दोसर कवितासँ

साहित्य, संस्कार संस्कृतिकेँ
जँ करब बखान त
नहि जानि बीतत केतेको राति
बुइध विवेक आ होशियारीमे
जँ कियो फरिछाएत तँ
देबन्हि हुनका टाटमे साटि
हमछी लेरहैल ओइ मिथिलाक
जइ ठामक बुनियाद माटि...

तेसर कविताक पाँति देखू-

नहि परहेज कोनो बातक
नहि गुरेज कोनो बातक
नहि भय, नहि आशंका
नहि दरेग कोनो बातक
लिखैत छी बजैत छी
निधोख कोनो टाटक
छी झूठ केर दुश्मन
सच्चाइ केर वाचक...
एकटा आरो कविताक पाँति देखू-
नून सन जिनगी

बेगरतामे ओझराएल
समयसँ पछुआएल
जुआनिक धधकैत लौ भेल चिनगी
लोकक सुवादमे, नून सन जिनगी
बोनि-बोनिहारि, मनखप बटैया
करबथि पमौजी, बाबू आ भैया
दुखक पहाड़ जेकर जड़ि छै ने फुनगी...। ❑

जुवराजजीक ‘परिचय’ एक अनुशीलन

पेशासँ प्राथमिक शिक्षक आ मैथिलीक नवोदित कवि दीनानाथ प्रसाद’जुवराज' केर व्यक्तित्व आओर कृतित्व बहुआयामी अछि। हुनक व्यक्तित्वमे आओर सदाशयता, सहजता, आत्मीयता आ मिलनसारिताक संग विद्रोही स्वभावक चलते अधिकांश रचनामे व्यंगवाण आ कटाक्षसँ परिपूर्ण देखाइत अछि। पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ 2019 इस्वीमे सद्य प्रकाशित परिचय मैथिली काव्य संग्रहसँ मातृभाषाक साहित्य सेवामे हिनक फरिच्छ योगदान भेलइ। ‘परिचय’मे संग्रहित सभ (51) कविताक आखिरीमे अर्थ विशेष सेहो देल गेल छइ, जइसँ पाठक आ विद्यार्थीगणकेँ सहजे विषयक गम्भीरता बुझबामे आबि जाइ छइ। अइ पोथीमे परिवारिक पृष्ठभूमिक परिचय सेहो भेटैत अछि। एही पोथीक स्वीकार्यता वृहद स्तरपर होएत। एतबे कहब जे ओ मैथिलीमे अबैसँ पूर्व हिन्दीमे रचना गढ़ै छला आ फेर अनुमान इयह जे ओ बाबा महर्षि मेँहीजीक। आ जेना कि श्री रघुवीर मोचीजीक अभिमत आ अर्धनारीश्वर उर्फ श्री गिरजा नन्द झाजी सेहो लिखने छैथ। क्रम 26पर परिचय कवितामे प्रस्तुत रचनासँ कविजीक अन्तर आत्माक पुकार सेहो परिलक्षित होइत अछि। तँए अइ सन्दर्भमे कवि महोदय विशेष मेहनत कए फेर श्रमसाध्य मैथिली सेवामे लागि अपन एक पोथीक ‘व्याख्याटीका' रूपेँ प्रकाशित करेबामे सफल भेलाह अछि। हिनक व्यक्तित्वक विशेषता थिक जे काव्य शिल्पकेँ प्रांजल, भावप्रवण, ओजपूर्ण आ माधुर्यमय बनबैत अछि। हुनक शिल्पकेँ भाव केर अभिव्यक्त सहज संप्रेषणीय भेला सन्ता स्वयं दैनिक जीवनमे सेहो अत्यन्त सरल व निश्चल आ वैष्णव छैथ।

परिचय पोथीक पछिला कवरपर हमर अभिमत अइ तरहेँ छपल रहए, जे द्वितीय संस्करण नवारम्भसँ मुद्रित-प्रकाशित भेलासन्ता हटा देलासँ आब अइ महत्वपूर्ण पोथीक चर्चा प्राय: नहि भऽ रहलै हेन। जखन कि किछु कविता यू-टयूबपर दर्शक देखि-सुनि सब्सक्राइव बढ़ा रहल छइ।

प्रस्तुत समकालीन काव्य पोथी ‘परिचय’ केर रचनाकर श्रीमान्

दीनानाथ प्रसाद, जिनक साहित्यिक नाम'जुवराज' छिऐन; एक नवोदित प्रखर मैथिली कवि छैथ। हिन्दीमे ई हम्मर पुरान परिचित (1922-93 ई.) छथिए। हिनका बारेमे ई कहब जे निष्ठावान युवक आ निर्मल-सरल हृदय केर भावुकता प्रधान आ विद्रोही विचारधाराक व्यक्ति छैथ। तैं हिनक काव्य सौष्टव पाठककेँ मुग्ध करैत अछि। अल्पायुक रहितो हिनक मौलिक लेखनी अध्यात्मिकतो दिश अथाह रूपें गेल अछि आ स्त्री-विमर्शक लेल हिनक बहुतोरास कवित्व धारा समाजिक सरोकारसँ जुटल सेहो उठबैते डेगसँ धाही देखबै छइ। संगहि एकावन काव्य संख्यामे ई भरिगर पोथी विविध विषय (देशभक्ति, राजनैतिक, समाजिक, अध्यात्मिक आदि) पर गेयात्मक-मंचीय कविता अछि; जे बिनु मनन केने पाठक वर्ग परैख नहि सकता। अइ उत्तमकोटिक रचनाकेँ जे विभिन्न भाव आ रससँ सराबोर अछि अपने एकरा बिनु पढ़ने रहि नहि सकब।

हिनका व्यक्तित्व एवम् कृतित्व मादे निम्नांकित विद्वतजन अपन विचार एहिँ तरहेँ व्यक्त केने छैथ- डॉ. कृष्ण चन्द्र झा 'मयंक' पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष सीएम कॉलेज दरभंगाक कथन 'हिनक काव्य रचना उच्चतम कोटीक छैन, आ तइमे भाषाक लयात्मक हम सेहो प्रशंसक छी। ग्राम गौरवक रचियता रामचंद्र मिश्र 'मधुकर' पूर्व मैथिली विभागाध्यक्ष ल.ना.मि.वि. विद्यालय दरभंगा'क कहब छेलैन-जुवराजकेँ मैथिली कविता नवीनतम आ विविध विषयपर गहराई धरि गेल अछि, जइसँ सद्य:प्रेरणा प्रस्फूटित होइत अछि। मैथिली साहित्य अकादमी पुरस्कृत 'पंगु' उपन्यासक लेखक जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कथ्य छैन्हि' जुवराज केर मैथिली परिचय काव्य संग्रहक कविताक पाठ केर रसपान श्रीकृष्ण केर 'गीता' सदृश्य अछि। डॉ. शिव शंकर श्रीनिवास केर कहब भेलैन जुवराज केर कवितापर ध्यान देब व विचार करब आवश्यक छइ।हिनक कविताकेँ नजर अन्दाजसँ काज नहि चलत। हिनक पोथीमे रघुवीर मोची आ डॉ. इन्द्रकान्त झा कऽ अभिमत एवम् अर्द्धनारीश्वरजीक स्वास्तिवाचन छपल पढ़य लायक अछि। पोथी पढ़ि पाठक हैसियत सँ एक कवि डॉ. आर बी कामत बजला, आइ जज साहेब नामसँ भलहिं सहोरबाक नाम जानल जाइछ। मुदा जुवराजक नामसँ गामहि नै वरण कोशी क्षेत्रक नाम सेहो जानल जाएत। ❑

मैथिली भाषामे एकटा दीर्घ कविताक पोथी

यथास्थितिक बादक लेल नवारम्भ- मधुबनीसँ 2019 इस्वीमे बहराएल। अइ पोथीक दाम 150 टाका आ पृष्ठ संख्या 128 छइ। मात्रे सातटा कविताकेँ एहीमे रचनाकार रमेश स्थान देलैन अछि। अइ पोथीमे 15 पन्नाक शुभकामना कविजीकेँ दैत'वैचारिक आवेगक प्रतिमान कविता' शीर्षक सँ डॉक्टर कमल मोहन चुन्नु पोथीक गम्भीरता मादे अपन कलम चलेने छैथ। तहिक संक्षेपतः तथ्य पोथीक पैछला कभरपर सेहो पाठककेँ दृष्टिगोचर होइत अछि। डॉ. चुन्नुजीक अभिमत भेलैन। समाजक विकास निरन्तर संघर्षसँ भेलइ। समाजक संघर्ष बहुरूपिय- बहुस्तरीय होइत अछि। व्यक्ति-व्यक्तिक बीच संघर्ष होइ छइ। व्यक्ति आ सामाजिक बीच संघर्ष होइत अछि। साहित्य आ समाजक बीच होइत अछि। कवि आ समाजक बीच होइत अछि। आदि-आदि। अही संघर्ष सभक वैचारिक आवेगक क्रियात्मक रूप अछि। तँ हिनकामे ई वैचारिक आवेग वेस दृढ़ताक संग आ वेस स्पष्टताक संग उपस्थित भेल। हिनक कवितामे प्रतिरोध सेहो एकटा सामाजिक अस्त्र सन काज करैत अछि। अलगसँ कहवाक प्रयोजन नहि जे प्रतिरोध संघर्षकेँ उर्जा भेटै छइ। हिनक कविता रचनासँ अइ मान्यताकेँ प्रमाणित कएल जा सकैत अछि।' साहित्यक मैथिली कवि गोष्ठीमे ई कविता पाठ करै-जोकर तँ नहि रहत, कारण श्रोतामे सेहो कवि वर्गक बेसी रहै छैथ, जिनका दोसराक पैघ कविता नहि रूचै छैन् आ बेसी समय लगलासँ माहौल सेहो उबाउपन सन भऽ जाइत अछि। रमेशजीक दीर्घ कविताकेँ हमरा सन लोक सेहो कहैसँ अपनाकेँ नहि रोइक सकैत अछि। कविजी एक्के सुरमे कथेतर जकाँ सवातीन सयसँ बेसी पाँति दैत सभ कवितामे अपन मौलिक वकतव्य राखि धरि पोथीकेँ खूब भरलैन अछि। हिनक कवितामे पाठक स्वयं राग आ रस तकैत-तकैत अशोथकित भऽ जाएत, अइमे हिनक सभ रचना लोक मंगल कामनासँ अभिप्रेत छै, जे आलोचना मुक्त अछि-देशमे आ विश्वमे आतंकवाद, नश्लवाद (रंगभेद), साम्यवाद, समाजवाद,

मानवतावाद, लोकवाद आ दियावादपर तँ वृहद विमर्श होइते रहै छइ। सम्यक आओर ई यथास्थितिक बादक लेल' जे अइ पोथीक पहिल दीर्घकविता थिक, जइमे पाँति देखू-

धू्रवतारा आ सांध्य-तारामे जेतए

नहि बुझल जाइ छै कोनो अन्तर

निश्चय मानू

गाम थिक ओ हमरे।

जिनगी गुदस्त कऽ देलैन

जेतए पित्ती हमर

धू्रवतारा हिया-हिया कऽ

बटेदारिवला धानक खो पर

दौन हँकैत-हँकैत

नहि पड़लैन पुर्री कहियो

गोनू झाक पेनकट्टा छिट्टा जकाँ... अधवयुसु कविजीक ब्राह्मण पित्ती आ पितियाइन निठाहे परिश्रमी छैथ, समकालीन मिथिलांचलमे 70% त्रुटि पूर्वक मैथिली बजनिहार मेहनतीक रहने कठिनाह जीवन सरिपहुँ छइ। राजकमल चौधरीजीक पील्ला अन्न वेत्रे चौवटियापर मरल-पड़ल रहै, परञ्च ग्रामीण समाज तँ केतेको बेर बिकायते रहतै, जे सोचनीय छइ। दोसर कविता'कोसी-घाटी सभ्यतामे अछि-

...थरभस लागल नावकेँ

गीतक सहारा दैत

छीतन मुखिया-

'से मैया गे...

बड़-बड़ बिपत्तिया गे मैया

राज-कोसीमे लागै छै...

कोसी नगरियामे आ...

मुदा मनाउनक

कोनो असरि नै।

कोसी माइ पर।...

मैथिली भाषी पढ़ाकू पाठककेँ सद्य प्रकाशित पोथीमे घृणाक आँखिमे धधरा: वाराणसी, कत' अछि मुक्ति-पथ?; महा-विस्फोटक महा-प्रयोग; चन्दन वनमे साँप आ क्षत-विक्षत अस्मिताक महाद्वीप पढ़ैत काल खूब अछौंह खोराक भेटत। मैथिली सेवी आओर रचनाकर्त्ता गणकेँ दीर्घ कविताक रसास्वादन लेल ई कृति अनुपम बुझाएत, घरेलू पुस्तकालयमे संग्रह कएल जा सकैत अछि। रमेशजीक लघुकविता आ दीर्घ कविता कोसी सन्देशमे पहिलो पढ़ि चुकल छी। हमरा अत:करणमे भाव आएल जे अइ काँइतिक पोथी एकेपल्ला दीर्घ कवितासँ (पौने छ: सयसँ बेसी पाँति) भरल जाए आ से व्यंग कविताक परिभाषा परिधिमे रहबे करत।

मैथिलीक स्थापित प्रतिष्ठित जेतेक अभिजातवर्गक कवि आ कथाकार ओ लेखक छैथ, से मैथिलीक आभाकेँ अइ तरहेँ छेकने छैथ जे अइ विधामे गैर सवर्ण लेखक वर्ग आ पाठक वर्ग अपनाकेँ साहित्यसँ पछुआएल बुझै छैथ। तइमे हिनक डेग जे लेखनी माध्ययमे आगू बढ़ल से दबल-पिछड़ल समाजकेँ साहस आ धैर्य प्रदान करैत अछि। अगुआएल समाजक लोककेँ मैथिली लिखबाक अभिप्रेरणा राजा रजबारक समयसँ दरबारी करैले भेलइ। ओ सभ मूल संस्कृत लेखनसँ इतर विपटा बनि राजाकेँ प्रसन्न करैले पिछड़ल तबकाक वाणी-बोलीमे कमतर लिखै छला। परञ्च कालान्तरे राता-राति मैथिली भाषा राजकीय भेला सन्ता सभ वंचितक मैथिली अपनौलैन। ❑

जय प्रकाश मण्डलजीक 'गीत नव दिस'

प्रसिद्ध मण्डल कमीशन जिन्दाबाद केर गीत गायक श्री जयप्रकाश मण्डलजीक जन्म समाजसेवी स्वर्गीय जोखाइ मण्डल आ स्वर्गीय होली देवीजीक घर छजना-मझौरा भाया-नरहिया थाना-लौकही जिला मधुबनीमे 15 फरवरी 1962 इस्वीकेँ भेलैन। अर्थशास्त्रसँ एम.ए. आ एल.एल.बी., B.ed रहैत ओ नइ दिशा शिक्षण संस्थान रानीगढ़ी (मझौरा) केर निदेशक रहला। 1997 इस्वीमे बिहार संगीत नाटक अकादमी पुरस्कारक संगे बहुतो रास सम्मान समयसँ हिनका भेटल छैन।

हिन्दी जगतमे जय प्रकाश मण्डलजीक लेखकीय क्षमताक लोहा मानल जाइत रहल। मातृभाषा मैथिलीक प्रति सेहो कमतर अनुराग नहि, तँए दुखनी दादी नाटक आ प्रकाशित 'गीत नव दिस' (पद्यसंग्रह) लेल चर्चित भेला अछि। पल्लवी प्रकाशन निर्मलीसँ 2019 इस्वीमे प्रकाशित अइ 33 पृष्ठक पोथीकेँ आइएसबीएन प्राप्त भेल छइ। 50 टाका कीमतक अइ पोथीमे सत्रह गोट मैथिली गीत पाठ रूपेँ विषय सूचीमे लागल अछि, जे सगर राति दीप जरय 29 जून 19 केँ कथा गोष्ठीमे लोकार्पित भेल अछि।

अधिवक्ता श्री मण्डलजीक सुपुत्र आलोक कुमारजी अंग वस्त्रसँ सम्मान करैत जे ज्योति चाइल्ड केयर एकेडमी रानीगढ़ीक केरियर मेकर छैथ, हुनको परिचय आखिरी गतापर कवि महोदय देने छैथ। पोथीक आवरण सज्जा भगवा रंगसँ मिलैत सुश्री पल्लवी मण्डल साहित्यिक चित्रण केने छइ। जयप्रकाश बाबूक स्वर हुनक विरचित गीत तँ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह-हटनी मञ्चपर सुनने रही। प्रस्तुत अइ पुस्तिकामे पहिल गीत; स्वागतगीत अइ तरहेँ अछि-

स्वागत हो स्वीकार

अतिथि हमर

शबरी सिनेह

सुदामा चण्डुल

यएह एकटा उपहार

स्वागत हो स्वीकार

अतिथि हमार...।

दोसर शीर्षक उपरागक पाँती देखू-

हम दइ छी उपराग

हे यौ समाजक लोक

जाति धरम अहाँ किए बनौलिऐ

जन-जनमे अहाँ लड़ौलिऐ

केलिऐ केहेन ई खोज,

हे यौ समाजक लोक

हम दइ छी उपराग...।

हिनक गीत-काव्यकधारा मान्य. डी.एल. मण्डलजीक वैचारिक अन्त: प्रेरणा थिक। गीतकार आ कवि भाय जेपी. साहेब शान्ति व प्रेम स्वरूप समाजमे अगुआ बनल रहैत सुधारबाक प्रयत्न करैत रहै छला।

मण्डलजीक वैचारिक कथ्य मादे युवा गजलकार दीप नारायण विद्यार्थी आओर मैथिली गीत गायक डंगराहाक श्री मण्डलजी मोबाइल नम्बर 6204342307 केर अभिमत सेहो नीके छइ। हरेक गीतनादमे मानवीय सम्वेदना परिलक्षित होएत, से मनन करैत काल मोन मानि जाएत। गीतक लय कवित्वधारामे सेहो गौल जा सकैत अछि। से पाठककेँ भूल केतए भेल, जाति-धरम केर, पिया नौकरी, जेतए जातिक नहि, बाढ़ि सुखारसँ, चुपू यौ बौआ, सगर राति, छौड़ा-मारै मुक्का, बिनु आगि जरि, जल्दी-जल्दी लिखियौ, मोर बिहार, मिथिलावासी, सभकेँ शिक्षा, अँगना निपल आओर हमरलाल शीर्षक

गीत मोन मोहि लेत। अइ पुस्तिकाक उपयोगिता मंचीय गायक लेल तँए अछिए बरु मैथिलीक अक्षय भण्डारकेँ भरबामे सेहो एकटा उठौल गेल डेग मानल जाएत। संगीत मानवीय जीवनमे आएल तनावकेँ सेहो कम करै छै तँए एकर उपादेय आजुक कोरोना संकटकालीन समयमे आरो बेसी भऽ गेलै से हमर मोन मानैत अछि। एहेन गीतकार आ संगीतकार आब हमरा बीच नहि रहला। भगवान हिनका आत्माकेँ शान्ति प्रदान करथुन से प्रार्थना। ❑

नन्द विलासजीक कथा यात्रा शुरू

मिथिलांचलक कथा साहित्यमे एकटा ध्रुवतारा सन छिटकैत नव कथाकारक नाम थिक नन्द विलास राय। जे अपन मौलिक प्रथम लघु कथाक 'सखारी-पेटारी' संग्रह वर्ष 2013 इस्वीमे पाठकक बीच श्रुति प्रकाशन दिल्लीसँ आनलैन। हुनक दोसरो विधामे डेग उठल अछि; परञ्च कथाकारक रूपेँ सगर रातिदीप जरय मञ्चपर केतेको अपन कथाक पाठ केने छैथ। हिनक मैथिली पोथी– छठिक डाला 36 कविताक काव्य संग्रह पल्लवी प्रकाशनसँ 2018 इस्वीमे छपल। तेकर बाद ओइसाल ओतएसँ भरदुतिया 9 टा कथाक संग्रह आ प्रकाशित मरजादक भोज' 13 कथाक संग्रह बहरेलै हेन। हिनक नाटिका 'बहिनपा' सेहो प्रकाशित भेल छइ। बहुचर्चित पोथी मरजादक भोज केर विषयमे विमर्श कए रहल छी। श्री नन्द विलासजीक मादे वरेण्य साहित्यकार श्री गजेन्द्र ठाकुरजी सेहो अपन मत प्रकट करैत कहने छैथ- रायजीक कथ्य हुनक अड़ोस-पड़ोसमे छैन। बहुत रास सम्भावनाकेँ नुकेने रहैत जे परसल गेल यर्थात कम रूचिगर ने अछि। बेरमा+निर्मलीक पल्लवी प्रकाशनसँ वर्ष 2018 इस्वीमे बहराएल कथाक ई मैथिली पोथी पाठककेँ अपना कथा माध्यमसँ लगीचमे खिचैत अछि। सभ कथा प्रेरणादायक छइ। आधुनिक जीवनक विसंगति, कटुता आ गरीबीक नव फैशनकेँ आँखियेने छइ। अमर-मदनक मैत्री कसौटीपर कसले छै तँए कृष्ण सुदामाक मित्रता मोन पड़ि जाइ छइ। दहेज विरोधी कथा दिव्या समाजक मंशा उजागर केने छइ।

सभसँ बड़का भी.आइ.पी. गेस्टक रूपमे पत्नीक समक्ष जेठ भायक प्रति उपजव अपनत्वसँ कथाक श्रेष्ठता देखाइ छइ। अपन-जाति जाति व्यवस्थाक कोढ़पर चोट करै छइ। इनारक पानिमे कथाकार आदर्शवादी तथ्य परसने छैथ। हमर पत्नीक मनोरथ, हमर लॉटरी निकलल आ टेट्रा हीरो गम्भीर हास्य व्यंगपर आधारित कॉलेज खोलनिहारक वंशजक पोल खोलै छइ, जे पाठककेँ ओतप्रोत करत। चलितर काकाक ब्लड प्रेशर नपबामे कथाकार

पूर्णरूपेँण समर्थ भेला अछि। अइ तरहेँ कटही सायकिलमे सुखांत दर्शन होएत। पाठककेँ शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य हम पापी छी कथा पढ़ैत आ मनन करैत काल पात्रक अहमन्यता प्रकट होएत रहत। ग्रामीण जीवनक बड़पनक कथा अछि- मरजादक भोज, जइमे भाषा प्रवाहमयी आ स्वाद जीवन्त छइ। जे कन्यादानक अवसरपर ग्रामीण संग बरातिक सामूहिक भोजनक व्युतपन ढंगे दुनूठाम सारे-बहनोइ आयोजित करैत मरजादित हेवाक चेष्टामे अहंग देखेलैन अछि। रामबाबूक तेसर बेटी भारतीक बिआहमे मरबापर भोजनक विन्यासक चर्च तँ अछिए जे पोथीक आवरण पृष्ठपर सचित्र छपल दृश्य तँए भोजकेँ पाछू छोड़ैमे अगूएलै; हमरो मोन पनिछाय लागल। पृथक स्वाद सभ अन्नपानिक संग-संग कथाक रसगर सुआद पेएबाक लेल अवश्य पढ़ल जय ई मैथिलीक पोथी। अपना दिससँ इहो कहब होएत जे कीमत 250 टाका डूबत नहि। 125 पृष्ठक अइ पोथीकेँ पढ़बाक जिबठपन केर चलते कौखन लगीचाय जाएत से थाह नहि चलत। जइ पृष्ठभूमिसँ कथाकार लेखकीय काजमे उतरलासँ अपन बातमे विस्तारसँ कहि देने छैथ, तँए बेसी किछु कहबाक खगता नहि बुझाइत अछि। ओना ई संस्कृतिसँ जुटल भारत-नेपालमे धूम मचेने छैथ। आगूओ हिनक मेहनत रंग आनत आ पाठक बन्धूवान्धव लेल कोनो नव पोथी लोकार्पित होएत। आब दू दशकसँ अपवाद छोड़ि मरजादमे बरियाती लोकनिकेँ दू दिन कन्यागत वैवाहिक स्थलपर घेरैत राखि मरजादक भोज उठाव केने छइ। तेँ समाजक बीच ई पोथी पुरान युगक बात बुझल जाएत। ❑

स्वदेशमे आश्रमक स्थापना

आइसँ 105 सालपूर्व अर्थात् 25 मई 1915 इस्वीमे गाँधीजी सत्याग्रह आश्रम अहमदाबाद केर कोचरबमे बनेलैन। मोहनदास करमचन्द गाँधी मैट्रिक स्तरीय बैरिस्टर छला जे अपन युवा अवस्थामे साउथ अफ्रीकामे वकालत करैत 21 सालधरि हिन्दुस्तानक शान्ति लेल काज केलैन। स्वदेश आबि अपन गृहराज्य गुजरातक सेवा अधिक करबाक परम उद्देश्यसँ भारत सेवक समाज केर आदरणीय गोखलेजीसँ परमर्श लेलैन। फिनिक्स केर साथीगणकेँ एतए राखि स्वयं अपने बिराजमान हेबाक आ देश सेवाक लेल स्थिर हेबाक हिनक गप्प गोखलेजी अइ शर्तक संग मानि गेला जे आश्रम खर्च हमरे दिससँ लिअ पड़त। हृदय आरो बेसी प्रफुलित हुनक भऽ उठलैन। जे पैसा उगाहबाक जटिल धन्धासँ स्वत: मुक्ति भेटि गेल। निठाहे 25 स्त्री-पुरुषसँ ई सेवार्थ आश्रम (संस्था) महिनाभरि शुरू भेले रहै तँ भाइ अमृतलाल ठक्करजीक पत्र भेटलैन। पत्रमे सन्दर्भ ई जे अहाँक आश्रममे एकटा गरीब आ प्रमाणिक अन्त्यज परिवार; तेकरा आश्रममे रहबाक इच्छा छै से राखि सकै छी? महात्मा गाँधी ओइ पत्रकेँ अपन संगी सभकेँ पढ़ैले देलैन आ कहलैन। आश्रमक नियम पालन ओ करता तँ रखबामे कोनो अशोकर्य नहि, तइले सभ कियो तैयार होइत गेला।

हुनक प्रविष्टि होइत देरी सहायक मित्र मण्डलीमे खलबली मचि गेलइ। इनार धरिपर जल भरबासँ हिस्सेदार मालिक अर्चन ठाढ़ कए देलकै। ओइ चरख बलापर हिनका सभक छिटका पड़ि गेने ओ अपवित्र वा भ्रष्ट भऽ जेतइ। ओ बिखैन कऽ गारि पढ़ैत रहलै आ दूदा भायकेँ सताबे लगलै। तैयो बापूक कहबसँ दृढ़ता पूर्वक पानि भरैक कार्य आ विभत्स गारि सुनब नहि छोड़ल। चुपचाप गारि सहैत बुझि ओ गलानिसँ भरि अपशब्द देब केँ फोन केलकै। मगनलाल जनतब दैत सुनेलकै जे आब तँ ओ अपना सभकेँ बाड़ने अछि आ मदैत सभ तरहक सभ कियो बोन कए देलैन से ऐगला मासक खरच नहि रहि गेल छइ, आगू केना खेपब। सभक राय भेलै जे निर्वाह लेल अन्त्यजक बस्तीमे

जा कए मजदूरी करब आ एतएसँ हटि पलायन किन्नहु नहि करै जाएब। धैर्यक अइ परीक्षाघड़ीमे स्वत: एकटा सेठ आबि आर्थिक संकट काल्हि भोरे दूर करबाक कृतज्ञता प्रदर्शित करता, अनायास एलासँ छगुन्ता राष्ट्रपिता गाँधीजीकेँ भेलैन। आ मोटरगाड़ीकेँ भोपू बजतहि युवकलोकनि समाद देलैन जे ओ महानुभाव गेटपर आबि ठाढ़ छैथ। हुनकासँ दर्शन पविते हाथमे तेरह हजार टाका थम्हबैत ओ एको क्षण गमेने विदा होइत गेला। जखन कि एहेन मदैतक दूर-दूर धरि आशाक कल्पनो नहि मनमे उचरल रहइ। अवदान मोन राखै जोकर उपकारी तथ्य छेलइ, कहियो हुनका देखनौ नहि कियो रहइ। साल भरिक अइ राशिसँ आश्रमक खरच चलि गेलइ। तेकरा बाद साबरमती केर सन्त करि देलैन कमाल...। (टिप. महात्मा गाँधी जीक विषयमे अधिक जनतब लेल हुनक आत्म कथा 'सत्यक प्रयोग- हमर जीवने हमर सन्देश' पढ़ल जाए। ❑

पोथी समीक्षा

हारि नहि मानव मूलहिन्दी लेखक अटल बिहारी वाजपेयी, मैथिली पद अनुवाद- डॉक्टर चन्द्रमणि झा सौजन्य प्रकाशक- ललित कुमार झा- पौहद्दी (दरभंगा) प्रकाशक- नवारम्भ-मधुबनी वार्ड नम्बर 2 विवेकपुरम (अजीत आजाद) प्रकाशन वर्ष 2018 रंगीन कोभर कूटगता पोथीक मूल्य दू सय। भारतीय राजनीतिक आदर्श पुरुष भूतपूर्व प्रधानमन्त्री, अतुलनीय समन्यवादी, प्रखर राष्ट्रवादी, अपराजित कवि, धुरंधर वक्ता, उत्तमचरित्र महानायक, अजातशत्रु, मैथिलीकेँ संवैधानिक दर्जा देनिहार, दूभागमे बँटल मिथिलाकेँ कोशी महासेतुसँ जोड़निहार ब्रह्मलीन अजर- अमर भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयीजीकेँ हुनकहि कविताक मैथिलीमे पद्यानुवाद कए एकटा लघु काव्यांजलिकेँ श्रधांजलि रूपेँ समपर्ण भेल।

अइ 88 पृष्ठक पोथीमे 88 कविताक संगे हमर अटलजी शीर्षकसँ माननीय नरेंद्र दामोदर दास मोदीक ब्लॉगसँ एकटा पाठ आ डॉक्टर चन्द्रमणि झा स्वयं साभार रूपेँ अटल बिहारी वाजपेयी (एक परिचय) आलेख देने छैथ। डॉक्टर चन्द्रमणिझाक जन्म नबादा (बहेड़ा) जिला- दरभंगामे स्व. राममुर्ति झा आ स्व. सीता देवीक घर भेलैन।'। अंगरेजीसँ एम ए रहलाक बादो ओ मैथिलीमे गीत संग्रह' रहि जो हमरे गाम' आ गीताम्बुज रचलैन। संगहि निधि निबन्धमे बहुतो लेख लिखने छैथ। मैथिलीमे हुनक काव्य संग्रह अनामिका आ मुक्त- उन्मुक्तक अतिरिक्त केतेको विधामे दोसर तरहक पोथी मैथिली- हिन्दी आ इंग्लिशमे प्रकाशित भेल छैन। डाक्टर मिश्र दरभंगा समाहरणालयसँ सेवा निवृत्त छैथ आ बहुतो तरहक पुरस्कार अपना नामे अर्जित केने छैथ। संगीत प्रभाकर केर आब लाभ हिनका बैसारीमे भऽ रहलैन। से जिनगी हिनको संगीतमय भऽ गेल अछि।

हिनक प्रतिभाक उपादेय वाजपेयीजीकेँ कविताक सौष्टव आ लालित्यकेँ हूबहू अपन मातृभाषामे उतारि, जेना जल जइ बासनमे रहत; तेहने चरित्र ग्रहण

करत तेनाहि पाँतिक पतियानि ओरियेलैन। से अपन मोन गछैत अछि। कविता ससमय पाठक वर्ग लग अननाइ सहजे अनुमान कए लेब जे ई केहन जीबठगर छैथ। कविताक गेयात्मक भाषान्तर अइ तरहेँ अछि-

आइ सिन्धमे ज्वार उठल अछि
नगपति पुनि ललकारि उठल अछि
फेरो कण-कण कुरुक्षेत्र के
पाच्यजन्य हुँकारि रहल अछि
सयके-सय आधात सहनकए
जीवित हिन्दुस्तान हमर अछि
जगतक मस्तकपर रोली सन
शोभित हिन्दुस्तान हमर अछि
दुनियाँकेँ इतिहास पुछै अछि
रोम केतए यूनान कतए अछि?...

दोसर देखू-

मनाली नहि जइहेँ गोरी
राजाक राजमे।
जइहेँ तँ जइहेँ
उड़िकए नहि जइहेँ
अधरमे लटकबेँ
वायुदूतक जहादमे।
जइहेँ तँ जइहेँ
सनेसा ने पइहेँ
टेलीफोन बिगड़ल छै
मिर्धा महाराजमे।

अइ तरहेँ फेर दोसर कविता यादि करी, हुनक देखू-

जे बरिसों सड़लाह जेलमे
यादिकरि हुनका
जे फाँसी चढ़लाह खेलमे
यादिकरी हुनका
याद करी काला पानीकेँ
अंग्रेजक ओइ मनमानीकेँ
केल्हूमे जुटि तेल पेरैते
यादिकरी बहिरा शासनकेँ
बमसँ थर्राइत आसनकेँ
भगत सिंह, सुख देव-राजगुरु
केर आत्मोत्सर्ग पावनकेँ
अन्यायीसँ लड़ी
दयाकेँ विनय नै करि नै अनका'

यादिकरी हुनका... मैथिली पाठक वर्गकेँ सभ कविता उपरा उपरी रसगर लागत यद्यपि एही कवित्वमे तातस छन्द सहित मन्दाक्रान्ता, जयकारी, शार्दूलविक्रिड़िता, सबैया, रोला, षटपद, सोरठा आ दोहा-चौपाइ आओर वसन्ततिलका नहियो रहैत मंगल कामनासँ अनुदित ई पाठ नीक लागत-

आऊ पुनः हम दिया जराबी
हिन्दू तन-मन हिन्दू जीवन
कथी गमएलौं- पओलौं जगमे
जिनगीक ढ़रय लागल साँझ
गीत नवल गाबै छी
दुधमे दरारि पड़ल
झुकि नहि सकै छी
बाट कोन अपनाबी हम

गीत नही गबैत छी

देखू हम बढ़ले जाइत छी

सपना टुटि गेलै

आऊ मर्द नामर्द बनू

आऊ, मोनक गीरह खोली

नव गीरह लगैय

स्वतंत्रता दिवसक पुकार

अमर आगि अछि

अमर अछि गणतंत्र

जम्मूक -पुकार

कोटी चरण बढ़ि रहल

भगवा हमर गगनमे लहराइ छै

कण्ठ-कण्ठमे एक राग अछि

आबए जेकर-जेकर साहस हो आदि।

पोथी’हारि नहि मानव' केर उपयोगिता रसिकजनमे तँ अछिए परञ्च नव पीढ़िमे सेहो अइ सरोकारसँ जुटबाक प्रेरणा अद्यप्रकाशित अइ मैथिली पोथीसँ होइत अछि। पोथीक कलेवर आकर्षक बुझाएत आ एक बेर प्रणाम करबाक मोन फेरसँ सहजे भऽ जाएत से मनोवैज्ञानिक सिहरन मानस पटलपर आओत। मालाधारी हाड़-मांससँ बनल अइ प्रतीकपर एक पुष्प हमरो दिससँ। अइ काव्य कृति लेल पृथकसँ परमादरणीय डॉक्टर झाजीकेँ सेहो साधुबाद करैसँ अपनाकेँ नहि रोकि सकब। हम स्वयं शब्द विन्यासक निहितार्थ अइमे खूब डुमकी लगेलौं, तँए कहब होइछ अटलजीक पवित्र नामकेँ किछु निछाबर करैत अपना घरेलू पुस्तकालयमे ई पोथी सहेज कऽ राखब।

(नोट- श्रद्धेय अटल जीक मादे ऐ पॅांतिक समीक्षकक पुस्तिका बहराएल छइ।) ❑

भोलूम-2 देवाश्रमक मूल्यांकन

अइ तरहक संकलन अपना माँटिपानिपर पहिल कहल जा सकै छइ। पल्लवी प्रकाशनसँ ISBN. 978-93-88421-92-8 प्राप्त मैथिली पुस्तिकाक कीमत भारु 50/- टाका, मानव आर्ट, निर्मलीसँ पहिल संस्करण 2019 इस्वीमे छपल हेन। अइ देवाश्रम केर नीक कलेवर देखि आवरणपर श्रीमती पूनम मण्डलजीक अनुराग झलकैत अछि; जे बालू बुरुज आंचलिक कथाकार फणीश्वर नाथ रेणूक स्मरण दिएबाले काफी छइ। देवाश्रमक संकलन करता श्री उमेश मण्डल केर गांव बेरमा हम 1981 क चैत मासमे नवानी मेलासँ गेल रही। ता ओ 4 मासक नवजात नैना रहैथ। आब हुनक कलमक रफ्तार देखि अतिशय प्रसन्नतामे छी। श्री मण्डलजी एम.ए (मैथिलीसँ) केने छैथ आ बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुरसँ सय पोथीक लेखक श्रीमान जगदीश प्रसाद मण्डलक कथ्यकेँ शोध अध्येतामे लागि पीएच.डी. अछि। हिनक पूर्व प्रकाशित श्री मण्डलजीपर भोलम 1 रंगीन प्रकाशित भेल रहइ। अइसँ बुझाइत अछि मातृ भाषाक संवर्धन लेल ई रातिदिन काज करैबला मैथिली सेनानी छैथ। निश्तुकी कविता संग्रह (2009 ई.) आ टूटैत मनक जुराव (2018 ई. कथा संग्रह)क अतिरिक्त पञ्चदेव (कथा संग्रह) केर 100 खण्ड सेहो प्रकाशित केने अछि। मैथिलीक विदेह ई-पत्रिकाक सम्पादन करैत एला अछि। हिनक मैथिली गीत नादक संकलन पहिले छपि चुकल छइ। अहर्निश मैथिली साहित्य सेवक उमेशजीक मंचीय उपस्थिति ‘सगर राति दीप जरय'आ आन दोसरो समारोह सभमे होइत रहैत अछि। हम गप्प करी सद्द: प्रकाशित एहि अपन पिताक पम्पलेट विषय पर, जइमे 51 पृष्ठक अइ लघु भोलममे पृष्ठ संख्या 9 आ 26 रिक्त राखि गेल छइ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक तस्वीरक संग हुनक संक्षिप्त परिचय हरेक पन्नापर दृष्टिगोचर होइत अछि आ सभ पन्नामे निच्चाँ लिखल पम्पलेट जे हुनक थॉट छी, विचारोत्तेजक प्रधान छइ। द्रष्टव्य अछि- देशक विकास केहेन अछि से तँ तूँ

पढ़ले- लिखल छह, सभ किछु जनिते छहक। जँ कनी-मनी एक रती आगूओ बढ़ि रहल अछि तँ ओइसँ बेसी ओइ नोकरिहाराक वंशमे। तँए नौकरी केनिहार बढ़ि रहल अछि। देखबहक जे डॉक्टरेक बेटा डाक्टर बनत। इंजीनियरेक इंजीनियर। केते कहबह।

जय मिथिला... जय मैथिली... आजूक जीवन... आजूक साहित्य...। स्लोगनसँ पाठक वर्ग अवश्य हर्षित हेता से परम विश्वास अछि।

डॉ. उमेश मण्डलजी राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (जून 2015) उत्तीर्ण छैथ आ शोध आलेखक संग्रह 228 पृष्ठ धरि 'मुक्त पुरुष' नामक गद्य पोथी वर्ष 2021 मे प्रकाशित करौने छैथ। सन् 2022 मे डॉ. उमेश मण्डलजीक 'निर्विकल्प' प्रकाशित भेल छैन। अइ पोथीमे विचरोत्तेजक गद्यांशक संकलन कएल छैन।

आगूक योजनामे ऐ कड़ीक पोथी- 'जेतए ने जाए कवि, ओतए जाए अनुभवी, जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार आओर किछु बिछल कथाक 'अन्तर्ध्वनि' नामसँ प्रकाशित होइ तइ लेल राति-दिन काजमे अहर्निश लागले रहै छैथ। ❑

कवि लालित्य

श्री विनोद कुमारजीक उपनाम हँसौड़ा छइ। महावीर चौक निर्मली (सुपौल) केर श्री सत्य नारायण महतो आ श्रीमती वीणा देवीजीक घर हिनक जन्म 18-01-1969 इस्वीमे भेल। एखन ओ न्यू लक्ष्मीसागर रोड नं0 7 दरिभंगा (बिहार)मे रहै छैथ। उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय सोतिया, जाले (दरभंगा)मे प्रधानाध्यापक छैथ। हिनक शिक्षा प्रभाकर (संगीत) केर अतिरिक्त एम.ए. दू विषयसँ बी.टी., बी.एड. धरिक योग्यता सेहो छैन'। ई बिहार कलम की सुगन्ध नामक लेखक मञ्च केर प्रदेश अध्यक्ष रहैत केतेको प्रतिष्ठत संगठनसँ सरोकार राखि रचनाकर्मी छैथ। हिनका बेहतरीन शिक्षक लेल भारतीय मनोवैज्ञानिक संस्थान द्वारा गोल्ड मेडलकेँ संग-संग अखन धरि 603 पुरस्कार आ सम्मान प्राप्त भेलैन अछि। मैथिलीमे आधुनिक कालक पुरोधा नव गीत (ताटक छन्द) मे लोकप्रिय आशु कवि छैथ, जिनका कवित्व धारासँ कियो प्रांजल कविक रूपेँ नहि धकिया सकैत अछि। बिनोद कविजीक बारेमे नौआबाखर हाइ स्कूल (सुपौल)सँ रिटायर हेडमास्टर सह कार्यकारी अध्यक्ष-विधापति सेवा संस्थान, दरभंगाक डॉ. बुचरु पासवान अपन अभिमतमे कहने छैथ-वरेण्य साहित्यकार, कविश्रेष्ट, छन्द शास्त्रक मर्मज्ञ केर 'व्यवहार चालिसा' सामाजिक समरस, समतामूलक व्यवहारिक, सामनजस, अरिजन-परिजनकेँ सुमार्गपर चलबाक लेल निरूपण भेल छइ। अपन बात कहैत स्वयं बिनोदजीक कथन भेल- आजुक मनुख अपनाकेँ कम आ दोसराकेँ बेसी देखैत अछि। गुणकेँ आत्मसात करैक जगह परनिंदामे अपन समय नष्ट करैत अछि। यएह कारण छी जे क्रोध, आलस्य, अहंकार आओर कुसंगतिक आभामे मानसिक रूपेँ अपनाकेँ बेराम करैत अछि आ तँए व्यवहारेपर प्रतिकूल असैर पड़ैत अछि। 'मानव अपन दिव्य जीवनक क्षणकेँ सेवा सत्कर्म, भक्ति, न्याय आ मानवीय मूल्य केर रस्तासँ भटैक अपनाकेँ एकसरे रहि जाइ छइ। तँए सभसँ सरोकार राखि सभमे ह्रदय परिवर्तन करैक उपाय प्रेमकेँ दर्शौल जेबाक चाही' हुनक हिन्दीमे किछु

दोहा आ पंक्ति देखल जाए-

कोविड उन्नीस नाम का,कोरोना का जाल।
मौत सभीमे बाँटता, जैसे बनकर काल।
सभ लोगों से कीजिए, सदा मधुर व्यवहार'
नहीं जाने कब किस घड़ी, छोर जाए संसार'
लाज शर्म को पीने वाले, भला कहाँ शर्माते हैं।
व्यंग वाण हृदय तरकसमे, अंधाधुन चलाते है।
दुनियाँ का दस्तूर यही है, सांच कहे वह मारा जाए।
जिन वृक्षोंमे फल लदे हों, पत्थर वो ही खाते हैं।
केवल महिला दिवस मनाकर, न झूठा सम्मान दिखायें।
जो दहेज ले शादी करते, ऐसी शादीमे न जायें।
भ्रष्टाचारी मजे ले रहे, हँसकेँ चुस्की चाय से।
कहीं भरोसा उठ न जाये, अब भारतमे न्याय से।
बड़ा जमाना बदल गया है, माँ बाप नहीं भाते हैं।
खुद को बड़ा दिखाने वाले, कुत्ते साथ घूमाते हैं।

1.

नशा उन्मुलन लेल मैथिलीक एहि तरहेँक पाँति-
पीबै छै तू सिगरेट एहेन हाल भऽ जेतौ।
कमे उमरमे उजर तोहर बाल भऽ जेतौ।
रंगा-रंगाक केस परेशान भऽ जेमा।
एक दिन ई सिगरेट तोहर काल भऽ जेतौ।

2.

गुटका शिखर चबाक तू नेवाब बनै छइ।
नव पीढ़ीक बर्वादीकेँ खिताब बनै छइ।

कचड़ाक मुँहमे डायल कि स्टाइल मारय छइ।

माए-बापक सपूत बन किए खराब बनै छइ।

मुक्तक-3

उठेमा हाथ भारत प तँ गट्टा मोइर देबौ हम।

हेरौ आतंकक गर्दन नरेटी तोइर देबौ हम।

किये सपना तों देखए छे हमर कश्मीर तों लेमे।

उठैमे आँख ज्यो एम्हर तँ आँखि फोड़ देबौ हम।

पाठक श्रोता बीच श्री कुमार विश्वासक तर्जपर मुक्तक छन्दमे आ ताटक छन्द विधामे हिनक नीक रचना पाठक लेल पोथी रूपमे झट आबए, से आश जागल हेन। ❑

पुस्तक समीक्षा

साहित्य शिरोमणी श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा नामक गाममे 1947 ई. स्व. दल्लू मण्डल व स्व. मकोबती देवी घरमे भेल छैन। ई मैथिली जगत केर एकमात्र रविन्द्र नाथ टैगोर लिटरेचर एवार्डसँ सम्मानित रचनाकार छैथ। मात्र 2004 इस्वीसँ एखन धरिक कम समयमे सभसँ बेसी पोथी लगधक सैकड़ासँ फाजिल हिनक कृति प्रकाशित विभिन्न विधामे भेल छइ। हिनक सर्वाधिक लोकप्रिय'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह 2009 इस्वीमे छपल रहइ।

हिनका बारेमे प्रसिद्ध साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुरजीक कहब छैन जे मण्डलजी शिल्पी छैथ, कथ्यकेँ तेना समेटि लइ छैथ जे पाठक विस्मित रहि जाइए। साहित्याकाशमे एकटा चेनहासी मोटगर पड़ै छै, जगदीशजीसँ पूर्व आ जगदीशजीसँ एनए, अइ दू खण्डमे मैथिली पाठित होएत। हालहिमे हुनक 14 कथाक संग्रह 'समयसँ पहिने चेत किसान' पढ़लौं अछि। अइ पोथीक पहिल संकरण 2019 इस्वीमे पल्लवी प्रकाशनसँ बहराएल। जेकर कीमत 251 टाका आ पृष्ठ संख्या 104 कार्ड वोर्ड गत्ता लागल अइ पोथीक पैछला कभरपर रचनाकारक फोटो सहित परिचय छपल छै आ पोथीक अंशतः बानगी। ISBN प्राप्त अइ पोथीकेँ पाठक निर्मली बाजार (सुपौल)सँ किनि कए पढ़ि सकै छी आ सहेजकेँ रखबाक योग्य छइ। कथाक-सत्तैरमे 7वाँ क्रमपर केन्द्रीय कथा 'समयसँ पहिने चेत किसान' सजौल गेलइ। फिरंगी बी.ए.पास केने गाममे रहि अर्थ उपार्जन बाबत काश्तकारी करए चाहैत अछि से उद्यानमे किछु अनुभवीसँ केराक खेती बारेमे तरीका बुझए चाहै अछि। तँए अभिप्रायसँ ओ गामेक लाल मोहन भाय बजन्ता ओइठाम पहुँचैत अछि। अइ मादे कथाकार लिखने छैथ- किसान परिवारमे जन्म आ पालन- पोषण भेने किसानी संस्कृतियो रग-रगमे रहने किसानी वृत्तियोसँ जुड़ि कए कारोबार करबाक दिशामे मन उमड़लैन। से इशारासँ बैसाय वक्तव्य दैत ओ अपन अनुभव सुनबए लगलै। बैंकसँ ऋण लऽ

कऽ केराक बगान लगोलकै। 2 बीघा खेत 5 सालक लेल लीजपर लेलकै आ तइमे बोरिंग गड़ौलकै। दमकल कीनि कए सिंचाइ आ सभ तरदुत करैत रहलै। परञ्च नफा किछुओ नहि। लोन सधबैले गामसँ पलायन केलक आ मुम्बइ जा 10 बरख खटल। तँए देखि बुझि लेनेसँ जल जमाव बला खेतमे केराक खेती नहि कएल जाए, जाड़ा मौसममे नाटा किस्मक केरा रहै जे घोघेमे अँटैक गेलइ। फिरंगी कहलकै धरफरीमे नहि छी, बुझि-गमि कऽ डेग उठाएब। तँए सार्थक भेल ई कथा जे नव खेतिहरकेँ सभ तरहेँ मार्गदर्शन करैत अछि। आरो दोसर सभ खिस्सा उपरा-उपरी अछि, पाठककेँ नीक लागत से पूर्ण विश्वास अछि। ❑

(समीक्षककेँ हिनक अधिकतर पोथी पढ़ल छैन।)

मैथिली सेवी-ललन बाबूक : एक परिचय

विद्यापति स्मृति गोष्ठी स्मारिका-तेरहम अर्घ्य

'देसिल वयना'क मुख्य सम्पादक आ ओइ मैथिली साहित्य मञ्च केर अध्यक्ष श्री चन्द्र मोहन कर्णजी लेखक-रचनाकार लोकनिकैँ डाकसँ टटका विशेषांक 2022 पठौलैन अछि। मोटगर-गतगर अइ अंकमे शिद्दतसँ जीवकान्त,मोहन भारद्वाज आ महाप्रकाशकैँ स्मरण कएल गेलैन अछि। अइमे मातृभाषा मैथिलीक लेल पठाओल सभ विधाक सामग्री छापल जाइत रहलै अछि। अइ पाँतिक लेखककैँ अपवादमे छोड़ि प्राय: पठाओल गेल सभक छपि चुकल छैन। अपनो कोसी सन्देशमे सेहो अकारण अइसँ परहेज राखैत एकतारे तीन अंकसँ अइ पाँतिक लेखकक किछुटा नहि छापल गेल छइ। खाएर अइकैँ एक विडम्बना बुझल जा सकैत अछि। 'उज्जर सपेत' मैथिली पोथी कऽ लोकार्पण समारोह लेल-बहेरा जाइत घड़ी बाटमे सिपौल जिलाक निर्मलीक पच्छिम भाग, मधुबनी जिला'क बेरमा गाममे श्री चन्द्र मोहन बाबू आ हुनकर संगे आएल 3 आगन्तुक व्यक्तिकैँ सम्मान दिल्ली हाईकोर्टकैँ अधिवक्ता ब्रह्मानन्द प्रसादजी दुनू प्राणी (ओकील) केलकैन। आरो श्री दुर्गानन्द मण्डल, श्री नन्द विलास राय, रामविलास साहु, डॉ. उमेश मण्डल तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता ग्रामीण सर्वश्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी आ कपिलेश्वर राउतजीकैँ सेहो स्वागत आ मिष्ठान्न भोजन भरिपोख भेल रहैन। 'उज्जर सपेत' पोथीक स्व. रचनाकारजी, ललन बाबू उर्फ सी.एम. कर्णजीकैँ बहनोइ रहथिन।

हम 1991 इस्वीमे मैथिली भाषा राखि ग्रेज्यूएशन केलौं, तँ किछु गोटेक बारेमे रचनाजगतसँ जखन परिचित हुअ लगलौं। तइ क्रममे ई. चन्द्र मोहन कर्ण ऊर्फ ललन बाबू मैथिली सेवीक बारेमे सेहो जानि सकलौं। पूर्णिया जिलाक जगन्नाथपुर, बनैलीक कृत्यानन्द नगरमे श्रीमती शकुंतला देवी आ श्री भुवनेश्वरी प्रसाद दासजीक घर हिनक जन्म 17 जुलाई 1951 इस्वीमे भेलैन

अछि। मूलत: मधेपुरा जिला'क बड़गाँव निवासी हिनक दादाजी स्व. भुपलाल दास अपन सासुर जगन्नाथपुर आबि बसि गेल छला। घरक पुकारू नाम ललनजी सात भाय-बहिनमे तेसर स्थानपर छैथ। भरल-पुड़ल परिवारमे सबहक विवाह दान सुसम्पन्न भेलैन।

श्री चन्द्र मोहन कर्णक विवाह 13 जुलाई 1975 इस्वीकेँ पटोरी (सहरसा) निवासी स्व. उमाकान्त लाल दासजीक जेष्ट कन्या ललितासँ भेलैन। जइसँ हिनका स्वप्नील सौरभ, स्मृति आ स्नेहील सौरभ क्रमशः तीनटा सन्तान छैन। श्री कर्णजीक जन्म एक साधारण मैथिल कायस्थ परिवारमे भेलैन। हिनक पिता सतमा धरि शिक्षा प्राप्त कए बनैली राजमे रोकड़ा लिखबाक काज करै छला। 5 बिगहा खेती -बाड़ी सेहो छेलैन। जमीन्दारी प्रथाक उन्मुलन'क पश्चात परिवारक भरण-पोषणमे खेत सभ बिका गेलैन। श्री कर्णसँ जेष्ट भाय कोशी योजनामे छोट मोट नोकरी करए लगला, जइसँ हिनक अध्ययन बाधित नहि भेलैन। गामक स्कूलसँ चंपानगर मिडिल स्कूल पश्चात लिलजू उच्च विद्यालय, बुढ़ियासँ 1968 इस्वीमे मैट्रीक कए पूर्णिया कॉलेजमे प्री यूनिवर्सिटीमे नामांकन करेलैन। 1972 इस्वीमे बी.एस-सी.क परीक्षा छोड़ि कर्णजी 1973 इस्वीमे इंजिनियरीगक ईन्ट्रेन्श टेस्टमे सफलता प्राप्त केलैन। फलत: ओही सालक बैचमे भागलपुर इंजीनियरिंग कॉलेजमे इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंगमे नामांकन करौलैन। 1974 इस्वीमे स्व. जय प्रकाश नारायणजीक आह्वानपर छात्र आन्दोलनमे सक्रीय भेला, जइ कारणेँ दू साल बिलम्बसँ अगस्त 1979 इस्वीमे प्रथम श्रेणी डिस्टिंक्शनसँ बी.ई. केलैन। तेकरा बाद 1981 इस्वीमे बीआईटी., मेसरासँ प्रथम श्रेणीमे एम.ई. केलैथ, जइमे हिनक विशेष विषय कंट्रोल सिस्टम छेलइ।

इंजिनियरिंगमे नामांकन कऽ किछुए दिनक बाद हिनक विवाह भऽ गेलैन, जइमे हिनका अपना श्वसुरजीसँ दूसय टाका प्रतिमास पढ़ाइक खर्च भेटय लगलैन। एकटा ट्यूशन सेहो करै छला। मेधा छात्रवृत्ति 60टाका भेटैत रहैन। छोट भायकेँ अपनहि संग राखि हुनक पढ़ाइक ओरियाउन केलैन। ओ अनुज भाय इंजिनियरिंग कऽ उच्चतम शिक्षा प्राप्त कए आइ एक विदेशी

फार्ममे सुव्यवस्थित छैथ। श्री कर्णजीक पारिवारिक वातावरण पारम्परिक मैथिल वातावरण छल। गहन धार्मिक वृत्तिक माता आ पिताक सरल आ मृदुल स्वभाव हिनका विरासतमे भेटलैन।

गामक एकटा शिक्षक श्री विश्वनाथ दास 'देहाती'सँ महापुरुषक जीवनी, नीतिशिक्षादिक उपदेश श्री कर्णकेँ रूचनि। गामेक स्व. लोकेन्द्र नाथ मल्लिकक जे महर्षि मेही दासजीक शिष्य रहथिन, प्रवचन आ सत्संगक हिनका ऊपर गहन प्रभाव पड़लैन। अइ असरसँ श्रीकर्णजी शाकाहारी छैथ आ कोनो अमल व्यसन नहि पोसने छैथ। बाल्यकालेसँ गाममे अनेक आयोजनक सुत्रपात कर्णजी करैत रहला। ओइमे हिनक सक्रीय सहभागिता रहल, फलस्वरूप अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक-रचनात्मक आयोजनक काज भेल। मिथिला मिहिर'क प्रभावसँ मातृभाषा दिस आकृष्ट भेला। आओर यदा कदा मैथिलीमे लिखब आरम्भ केलैन। संगठनात्मक क्रियाकलापमे हिनक अभिरूचि निरन्तर बनल रहलैन। गाममे खेल कूद आयोजनमे सेहो सक्रिय रहला। ई सक्रियता इंजीनियरिंग कॉलेजसँ आइ धरि बनल छैन। हिनक पहिल पदस्थापन1981 इस्वीमे बीआईटी-मेसरामे भेलैन। तेकर बाद आर आई टी जमशेदपुरमे इलेक्टिकल इंजीनियरिंग विभागमे सहायक प्राध्यापक रहला। 1983 इस्वीसँ 1990 इस्वी धरि तेल एवम् प्राकृतिक गैस निगम-असममे सहायक कार्यपालक अभियन्ता रहला। तेकर बाद कृष्णा गोदावरी परियोजना, राजामुन्द्री, हैदराबादमे अधिक्षण अभियन्ता पदपर कार्यरत रहला। मिथिला सांस्कृतिक परिषद हैदराबाद कऽ सभ क्रियाकलाप आ गतिविधिमे हिनक सक्रिय जोगदान रहै छैन। परिषदक पत्रिका प्रवासी केर सम्मादन केलैन। बहुत सालधरि परिषदक महासचिव पदपर निष्ठापूर्वक रहला अछि। कर्णामृत आ भारती मण्डनसँ अभिन्न रूपेँ जुटल रहला। मैथिलीक प्रति हुनकर समर्पण इहो बातसँ परिलक्षित होइछ जे नव पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीकेँ 15000 टाकाक सहयोग पुरस्कार आ 10000 टाकाक सहयोग भारती मण्डणकेँ देने रहैथ तइ समय हिनका माहमे 8000 टाका भेटैन। विभिन्न साहित्यिक कार्यमे लागल अभियानीकेँ मञ्चसँ सम्मान आ आर्थिक मदैत करैत देखल गेलैन अछि। सहयोगक बले अपन नाम आ ख्याति ओ नइ चाहैत, अदृश्य मैथिली सेवक बनल रहए चाहै छैथ। यएह

हिनक विशेषता थिकनि। चन्द्र मोहन बाबू सन दोसरो चन्द्र मोहन बाबू दिल्लीमे मिथिला आवाज बुलन्द करैत पटलपर एला अछि, तँए हिनका बेजोर आब नहि कहि सकै छी। सैकड़ो काव्य केर रचनाकार लोकनिक एकोटा मैथिली पोथी हिनका सभसँ छापल जाएत से आश राखैत, जिनका पोथी एकोटा नहि प्रकाशित भेलैन अछि। अइ कमीकेँ पूरा कए मैथिलीक सम्बर्द्धन कएल जा सकैत अछि। जय मैथिली। जय मिथिला। ❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'पंगु'

अइ बेरक मैथिली भाषामे मूल पुरस्कारक विजेता चर्चित साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, हिनक उपन्यास 'पंगु' साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत भेल अछि। 10 वर्ष पूर्व हिनक पोथी 'गामक जिनगी'केँ सेहो रविन्द्र एवार्ड 'नेशनल' भेटल रहैन। हालहिमे हिनक नव पोथी 'संचरण'क लोकार्पण 'सगर राति दीप जरय' बैनर तर सर्वहारा मञ्च, मैथिली कथा गोष्ठीमे भेल अछि। सएह कथा पोथी पल्लवी प्रकाशनसँ सद्य प्रकाशित 'संचरण' हमरो भेटल रहए, तैपर मधुरामे बाजक मौका नहि हाथ लागल छल। एक पाठ पढ़ियो नहि पेने रही। ओहीक कथा सत्तैरमे- टुटि कऽ खसि पड़लैन, मृत्यु सजियापर पड़ल विवेक बाबा, संचरण, जिनगीसँ प्रेम, परिवारे बगैद गेल, जिनगी पिछैर गेल आ श्रमहीन कथा मैटर जे उपलब्ध भेल छल, पढ़ि लेने रही। बड़ नीक लागल अछि। श्री मण्डलजीक प्रस्तुत पोथीक आखिरी पाठ समुद्रलंघन अइ बीच पढ़बाक सौभाग्य प्राप्त भेल। मानव आर्टसँ छपल 'संचरण' कैँ सरकारसँ ISBN (978-93-93135-16-2) प्राप्त छैन। 101 पृष्ठक अइ पोथीक दाम भारू 250 टाका निर्धारित छइ। 2022 इस्वीमे बहराएल ई पोथी मातृभाषा मैथिलीक अक्षय भण्डारकेँ भरैमे एक डेग आरो आगू बढ़ल। ख्यातिलब्ध जगदीश प्रसाद मण्डलजीक लेखन शैली वा रचनाधर्मिता तेहन ने होइछ जे कथाक पात्र केर कथ्य प्रदर्शन घुमा कए सोझगर रूपेँ समेटल बुझाइछ, से नव पाठककेँ सेहो बोधगम्य भाषा शैलीकेँ फरिच्छसन तथ्य समझि-बुझि जेबामे कोनो भांगठ नहि रहतैन। सैकड़ो मैथिली पोथीक लेखक अइ 10 सालमे गतिमान रचनाकार मण्डलजी निठाहे केतेको विधामे कलम चलेने छैथ। आखरी पाठ क्रम 8 समुद्रलंघनमे जानि सकलौं से किछु अइ तरहेँ छै, जे आन कथाकारसँ हिनक पहिचान अलग करैत अछि।

निर्धारित समयपर पंचायती राज चुनाव आबि गेल छै, 5-6 खेप जे पहिलो चुनाव भेल रहै से समय केर बान्हकेँ मजबुत केलकै। पुरना रूतबामे

सुधारो भेलइ। जीवानन्द काका आ बड़बरिया भायमे तीनू स्तरक पंचायतक प्रखण्डक आ जिला परिषद केर चुनावक निहितार्थ सभ तरहक गप्प होइ छइ। ओना आब लेखक अपनाकेँ अइ भौंट-भाँटसँ अलग रखै छैथ। परञ्च राज्य आ केन्द्रीय सरकार जे हरिजन, अधिक पिछरल तबका आ जनिजाति वर्ग लेल आरक्षण सीट सीमा नीक ढंगे नहि निमाहै छै, तहीपर अधिकारसँ बंचित तदसम्बन्धित गप्प सेहो विमर्शक हिस्सा बनैत अछि। मतदानसँ तीन दिन पहिले कहै छै रंगत तँ भोट बितलापर समाजमे लागत। कानून तँ निशन 99 चोट देनहारकेँ कहाँ पकरै छै, ओ तँ सौमा चोट देनहार जे एकेबेर ऊपरसँ समधाईन चोट दैत अधोगति करैछ, केँ अपराधी मानैत अछि; जे हत्यारोपी धरि होइत अछि। गुलटेनकेँ आबि गेलासँ तहधरिक बातक चर्चा होइत रहै छइ। चानीसन झलक साफ देखाईत पाठमे गहींरगर चर्चा भेलइ। जुगे बदैल गेने ने जिनगी जीअत लोक, नहि तँ समुन्दरक पानिक फेन जकाँ फेंका जाएत हिलकोरमे। सत्ताधारी जमात समुन्दर जकाँ अपना पेटसँ लहरि उठा बसात बनि आकाशमण्डलकेँ प्रभावित करै छइ। दुनियाँमे लोक खेलाड़ी-मदारीसँ भरल छइ। जँ परेखने-बुझने नहि रहै जाएत तँ भांजे नइ लगतै। बरबरीकेँ बरबराइत देखि ईहो सुझाव अबै छै जे डाक्टरो तँ बेसी बाजबकेँ बताहक अबैत लक्षण कहैत, अधिक बाजबपर रोक करै छइ। अपन जीवन धारण लोक अपने बाँहिबलसँ केने ने छै आ बिनु खगताक विचार अपना मुहेँ कियाक निकालत। बुद्धिजीवी लोक तँ एहेन अतिरिक्त बाजबकेँ बुरिपन्नाक दर्जा धरि दइ छइ। मजबिकनी दुआरे दुआरिए बोटर लग धरि पाई पहुँचाय अपना पक्षमे करब नितान्त आवश्यकता -चतुराय कथामे देखाएल गेल अछि। किछु भौंटर तँ मानसिक रूपेँ समर्थक रहै छै, किछु पार्टीक कैडर भेल, जइमे खर्च नहि लगैत अछि। ओना अपवाद मानू तँ बँटैक ढौआमे अदहा -छिदहा अपने नुका लेने रहै छइ। किछु प्रबन्धनमे सँ सेहो कपैच हथिया लइ छइ। बहती गंगामे कियाक ने हाथ धुअल जाइ। नैतिकतापर प्रश्न ठाढ़ करबामे आरो बेसी खुलैसँ कथाकार चुकला अछि। धरि पाठमे ई आबि गेलै- 'गामक सभ किरदानी सभ कियो आँखिये देखे रहल छी, बिसबासू लोकक मुहेँ सुनैतो छी; पोखैर, धार आकि महासमुन्द्रमे जलोदीप दिस कियो खतरा देखि केना बढ़त, नै जाइ छइ। मात्र

कथाकार कथामे वृन्दावनक गोपीकेँ हंटै- दबारै बला द्वापर युगक दूर्वासा बाबा, त्रेता युगक हनुमानजी समुद्रकुदि लंकाक चरचित लैत पुन:आबि रामक संग लक्ष्मण सहित बानर भौलक सेना धरिक बीच इमानपुर्वक सभ कथापर अंशत: व्याख्यान देबासँ धार्मिक वातावरण बनेबामे समर्थ भेला अछि। ई सभ अन्त: उपकथा सोन्हियेने छैथ। आब अवस्था दुवारे कथाकार कऽ नव पोथी लिखबाक रफ्तार कमतर होएत जेबाक अशंका होइत अछि। जखन कि पाठककेँ हिनके लिखल आरो पोथी उपादेय हेबाक बेगरता बुझाएत। एखन एतबे। ❑ (मै. पु. जा. प्र. अखबारमे प्रकाशित)

श्रीमान् शंकर बाबू ओइठामक जिलेबी!

'सगर राति दीप जरय' मैथिली साहित्य कथाक 108म् आयोजनमे श्री शंकर झा –मधूरा (मधुबनी) निवासपर गेल छेलौं। ओतए पहिले सत्रमे हमरा अपन बीहैन कथा'भाग जागल' केर पाठ करबाक रहए, से सौझासोझी आलोचक गण क्रमशः सर्वश्री चन्द्रेश, प्रो. प्रीतम निषाद आ डॉ. योगानन्द झाजीक कथापर समीक्षा सुनबाक छल। ओही शेशनमे 3आरो कथाकार केर पाठ प्रस्तुति भेलैन। जइमे शुभ कुमार वर्णबालजी 'पेंशनक टेंशनमे'पोथीक जगह 5 बेरसँ ऊपर किताब शब्दक उच्चारण केलैन। कोरोनाक दुष्प्रभाव शीर्षक कथामे अनुभव आनन्द बौआ बताह केर जगह भिखारीकेँ पागल शब्दसँ केतेको बेर उच्चारण केलक, जखन मातृभाषा मैथिलीक अक्षय भण्डार भरल अछिए! एकटा बाल कथाकार मध्यान भोजनपर खाय खातीर वा पढ़ै खातीर ई सरकारी स्कूलक योजना अछि, विद्यार्थी आ अभिभावक संग कपरफोरी मास्टर साहेबसँ भेलेक से प्रश्नचिन्ह ठाढ़ कएल। भरि रातिक अइ सर्वहारा मैथिली मञ्चपर भिनसर धरि कथापाठ कथाकार लोकनि केलैन। तइ बीचमे 5 बेर चाह-पान चलबैत अपनेसँ वृद्ध अवस्थामे सेवा निवृत मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा कऽ शंकर बाबू स्वंय बारीक बनल रहैथ। ई जे समर्पण प्रेम देखल, से अद्भुत रहैन। मञ्च संचालन चोटीक उद्घोषक पड़ोसी गामक(महुली) श्री रामसेवक ठाकुरजी कऽ पुट आ उद्गार श्रोताकेँ आकर्षित करैत रहल। तैयो स्वास्थ कारणेँ किछु समालोचक आ रचनाकार भोजनोपरान्त निनियाँसँ अभिभूत भेला। कहए चाहैत रहूँ उद्घाटनसँ पूर्व हलुक पनपियायमे दूटा लिट्टी आ दूगोट लालमोहन केर ओरियान सभहक लेल रहैन, से 15 गोट आगन्तुककेँ देखलौं जे मीठ लालमोहन बाहर करैत फिका चाहक आवश्यकता बतेलखिन। हमरा मोनेमन भेल जे नन्दविलास भायसँ कहिऐन जे डायबिटीज़ अघोर रहैत कथीले लालमोहन दबबैत चाभैत रहै छी। फेर कहीं लहेरियासराय...? हम पहुचैत मातर हुनका नाश्ता पबैत देखलौं। फेर हमर मोन मनेमन ललिचाय लागल, जँ

कदाचित 5 मीनट बिलम्बसँ नहि अबितौं तँ 30 टा लालमोहन घरबारी लग आपस नहियेँ होइत! 11 बजे रातिमे भोजनपर सभ कियो पुरी-जिलेबी, तरकारी (डलना) आ टमाटर केर चहटगर चटनीपर टुटि पड़ल। पहिले बेरक तोजीमे बारीकसँ 2+30 टा जिलेबीक मात्र मांग केलौं। से अचरजसँ पतियानीक पञ्च लोकनि देखए लगला। पाछू दिससँ मनोज कुमार मनुजी रहैथ, छैथ तँ हमरासँ दोबर देहगर-देशगर से बोली देलैन, परसनमे दूटा आरो लियौ जिलेबी राष्ट्रीय मिठाय थिक। बारीककेँ हम कहलयैन मनुजी एक लेता तँ हम पाँच। हमरा फेरो गर्म जिलेबी 5टा भेटल आ मनुजी संगहि दोसर कियो अघाएलपर नहि लेबए चाहैथ। 22 साल पूर्व केर सहजे मोन पड़ि गेल जे टेंगरी गाममे मित्रवर अरविन्द झाक बिआह बरातिमे खाएल-पीयलपर तौलकऽ वजनसँ हम जिलेबी आधकिलो चीनीक संग मांगि कए खेने रही आ हटनीक नाक बँचेने रही। श्री शंकर बाबू 108म् आयोजन केर अध्यक्षता 108 मैथिली पोथीक लेखक श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी, जिनका अइबेर मैथिलीक मूल पुरस्कार साहित्य अकादमी दिल्लीसँ भेटलैन, सँ कराबैत अपना डीहपर जे श्री श्री 108 श्री राम सिनेही दासजीक जन्मभूमि छिऐन, पर एहेन सुन्दर सन कार्यक्रम आयोजित कए कृतकीर्त भेला अछि। हम अतिशय आह्लादित आ अभिभूत छी, तँए सबगोटेक बिदाहक बादे ओइठामक धराधामकेँ चन्दन लैत पैरे मैबी-कछुआ हाट धरि यात्रा महतो गाछी बाटे केलौं। शंकर बाबू हटनीमे हमरा कहने रहैथ जे ऐगला आयोजन हमरा लेल रहए दियौक, संगहि ई. शैलेन्द्र मण्डलजीकेँ सम्वाद रामकुमारजीक (बेलहा) मार्फत सेहो जोर पकड़ने छेलइ। आब आगूक कार्यक्रम ननौरमे होएब घोषित भेल छै, जे तीन मासक बाद होएत। तत्काल हकार तँ सीतायन (दरभंगाक)मे शंकर बाबू कऽ देलासँ सामुहिक रूपसँ जनतब भेटल अछि। 9 अप्रीलक अइ आयोजनमे मैथिलीक जमघटमे जेबेटा करब। जय मैथिली!! जय साहित्य!! ❑

वेदव्यास पूर्णिमा

ग्रामीण क्षेत्रमे बेसीरास बसयवाला केवट समुदाय देशक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक तथ्य केर हिंदू सम्प्रदाय आ सनातनधर्म'क प्रवाहकेँ अदौसँ अद्यतन धरि बनेने अछि। अइ समाजक पूर्वजकेँ सुयश-कृत्तित्व भारतसँ बाहरो नेपालमे महात्म्य पूर्वक बुझाइत अछि। महर्षि वेदव्यास समस्त मानवकेँ चारि वेद छः शास्त्र अठारह पुराण अपन रचल ग्रन्थक माध्यमसँ चारू वर्ण यथा- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शुद्रकेँ अपन अस्तित्व रक्षार्थ साहित्य देलैन। कोनो समाजक परिष्कार ओकर सामाजिक परिवेश आ साहित्यसँ जानल जाइत अछि। तँए आलोचकक नजैरमे अइ चारिटा वर्णसँ इत्तर एकटा आरो वर्ण रहै, जेकर नाम थिकैक-कैवर्त्तवर्ण। ई अति प्राचीन छेलै, जेकर चर्चा करब इतिहासकार छोड़िए देलैन आ सभसँ निचला पौदानपर शुद्रमे धकेल देने छइ। समय सापेक्ष आ बदलैत युगानुसारे अधिक पिछरल तबका अपन पछुएबाक तहधरि कारण खोजैमे सतत् अन्वेशन करैत रहल होइ तइकेँ नकारि नइ सकै छी। सजग रहि, जागृति आनब आ प्रगतिक डेग नापैत अवसर ताकब ई मानवक परम लक्ष्य हेबाक चाहिऐक। मुख्यधारा सँ समाजमे उपेक्षित नहि रहि तइले अपनो आ संगठित जातिगत समाजकेँ अग्रसर करक लेल संघर्ष तँ करहि पड़ै छइ। अपन समाज निरोग, शिक्षित आ सुन्दर बनए तइ लेल अगुआ लोकनिकेँ पूर्ण दायित्व निभाबए पड़तैन। सामाजिक समरसता बना कए विशेष रूपेँ अतिपिछड़ल वर्गमे मैत्रीभाव बनाबैत नेतृत्व करैक क्षमता स्वंयमे आनए पड़तैन।

अतीतमे केवट (कैवर्त-केउट) नामधारीगण द्वैपायन कृष्ण व्यासकेँ अपन कूलपुंगम रूपमे लगधक माननै छै, जिनक जनम एक संजोग वा कहू भावुकक्षणमे नाविक आ पत्नी चंदोदरीक बेटी मछोदरी दासराज आ महात्मा परासर मुनीक नाहपर सरवती कुहेश लागल दिनमे अनमेल बिआहसँ भेल छैन। द्वीप परिक्षेत्रमे पलित कृष्णकेँ दुलारसँ पराशरजी द्वैपायन कहि पुकारैत रहला जे महाभारत युद्ध कऽ बादो जिऐत रहला आ वेदक रचना केलाक कारणेँ

हुनकर वेदव्यास भगवान नाम पड़लैन। आ ओ इहो कहलैन वेद चारू वर्णक लोक सुनैथ। ओही समकालीन वशिष्टक जन्म एकटा अप्सराक कोईखसँ भेल रहैन आ क्षत्रिय रहितो विश्वामित्र ऋषि पद प्राप्त केने रहैथ। मातृप्रधान परिवारमे माएक बेटा रूपमे बच्चाक पहिचान होइक। एखनो धियापुताक संग नैहर गेनिहारि स्त्रिक सन्तानकेँ ओतुका समाज अमुक (महिला)केँ बेटा-बेटी थिकै; कहिकऽ परिचय दइ छै, नहि कि बच्चाक पिताक नाम लेल जाइत अछि। मनुस्मृतिकेँ मान्य चलनसँ धर्मग्रंथमे उल्लेखित शिल्पी-कारीगर आ वैश्यकेँ शुद्रसँ खिल्लत-मिल्लत अर्थस्थिति देखाएल गेल छइ। ईसासँ 200 बरख पूर्व शुद्रकेँ वेदान्त सुत्रमे बदनाराय, शंकर, पाणिनि आदि केने छैथ। परञ्च सभसँ बेसी प्रभावी रिति दीर्घकालीन समय धरि मनूस्मृतिक चलल हन्, जाहिमे मुँह, बाँहि, जांघ आ पैरसँ क्रमश:बाह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शुद्र केर उत्पतिक अवधारणा मानल गेल अछि। शुद्रकेँ श्रमिक (जन-बोनिहार) रूपमे इतिहासकारो मान्यता देने छइ। चारू वर्णक उपार्जनक स्रौत अहि तरहेँ बताओल गेल अछि; ब्राह्मण -भीखसँ, क्षत्रिय-तीरधनुषक प्रयोगसँ, वैश्य-खेतीसँ आ शुद्र (सोल्हकन-रार)- हँसुआसँ जजाति काटिकए कान्हपर बैंगहासँ उगहबाक काज करैत रहत। मौर्यकालीन समय आ विदेशी आक्रमणक कारणेँ सामाजिक विपल्व आ कठोर शासन तन्त्रक आखरिमे शुद्रकेँ अनका खेतमे काश्तकारी करबाक कने ढ़िल देल गेलैक। तँए बटेदारी करैत बादमे मोहीजमीन आ बन्दोवस्तीसँ भू अर्जित कएल। ब्रह्मवैवर्त पुराणमे क्षत्रिय आ विवाहित वैश्य (भार्या) सँ उत्पन्नकेँ माहिष्य कहल गेल छै, जेकरा बंगालमे खेत जोत आबाद करैबला जाति कहल गेलइ।

अमरकोश सेहो प्रमाणित करै छै जे कृषिसँ जीवकोपार्जन जे कियो करय से कैवर्त्त भेल। कर्मक आधारपर जाति मूल रूप अछि। मैग्सेसे पुरस्कारसँ सम्मानित सामाजिक कार्यकर्त्ता आ रुदाली क्लासिक फिल्मक पटकथा लेखिका पद्मश्री महाश्वेता देवीजी 'कैवर्त्त-खण्ड'मे भूमिका दैत लिखलन्हि अछि- 'कैवर्त समाज अत्यंत उन्नत आ सभ्य रहैथ। 'कश्यप' मुनि जजात कटि जेबाक बाद दाना (कण) लोढ़ि कए अपन पेट पालैथ, जाहि कारणेँ हुनका'कणाद' कहल गेलैन। कणाद वा कश्यप अपना जीवन कालमे वेदक

बातकेँ बौद्धिकतासँ पहिलुकबे मानै छैथ-

बुद्धि पूर्वावाक्य कृतिर्वेद।

सम्भवतया अपन आधुनिक सोच राखि ओ शुद्रकेँ अपन नाम (काश्यप गोत्र) देबाक सहमति देने होइथ। राहुल सांकृत्यायन कहने छैथ- 'सभ्यता जतेक पुरान होइछ, मानसिक दासताक बनहन ओइमे तेतेक बेसीए होइत अछि।' ऋग्वेदमे एकराजा शुद्र-सुदास आ महाभारतक शान्तिपर्व अध्यायमे शुद्र राजा- पैजवन'क चर्चा भेल अछि। एतेक अश्लील जीवनक झंझावातकेँ विवशता पूर्वक झेलैत सम्भवत: गुप्त कालमे शुद्र समाज किसानिक बले सौराष्ट्र, अवंति, अबुर्द, मालबामे राजा बनलइ। महात्मा बुद्ध बाह्मणक अपेक्षा क्षत्रि केर श्रेष्टताकेँ समर्थन करैत कहने छैथ- 'मुक्ति केर खोजमे जाइतक कोनोटा महौत नहि य!'

क्षितिज मोहन सेन (1940) मे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी सम्पादित' शान्ति निकेतन'सँ प्रकाशित पोथी 'भारत वर्षमे जाति भेद'केँ असवर्ण विवाह पाठमे सतप्रथ ब्राह्मण-ऐतरेय ब्राह्मण अधिक सन्दर्भ दैत लिखने छैथ- 'अनार्यमे सँ बेसीतर लोक नदी जलाशय केर तटपर रहैत अछि। ओकरामे माछ-काछु मारबाक आ खैयबाक प्रचलन रहै, तँए ओइक श्रेणी अर्थात् कैवर्त.....दास, मैनाल आदि नामसँ सेहो हरसठे भेटि जाइत अछि।' अइ समाजकेँ दिव्योक राजा 'पद' पाबैसँ पहिले झील खुनाकऽ सीमान्त क्षेत्रमे सम्मानित कहाबैत रहैथ आओर भीम राजा बनलापर पजेबासँ पक्का सड़क बनेलैथ तथा अन ऋगवेद क पंचजना शब्द दक्षिण व्याख्या करैत यास्काचार्य निरुक्तमे लिखने छैथ- 'चत्वारौ वर्णा: पंचमो निषाद:।'

कैवर्त्त केर प्राचीनता प्रमाण उपरोक्त उद्धरणसँ प्रमाणित होइछ जे सम्पूर्ण आर्य जाति चारि वर्णमे विभक्त भेलैक जे आन देशसँ आयातित छैथ; परञ्च पाँचमा निषाद भारत केर समृध्दशाली समुदाय अछि। हिनका जनतबे, पल्लवित एवम् पुष्पित जीवन-संस्कृति आदिकालमे निषाद संस्कृति रूपेँ उच्चारित आ अलंकृत भेलइ। वैदिककालसँ महाभारत काल धरिक कैवर्त्त जातिक उत्कर्षकेँ वर्णनकेँ छोड़ि मध्यकालीन भारतमे जातीय स्थिति कोन तरहेँ

रहल तेकर चरचा 11 वीं शताब्दीमे पालवंशक 14वा राजा विग्रह पाल तृतीय केर निपुण शासक रूपैँ भेल छइ। वो चेदीवंशक राजा करण कलचुरीक युद्धमे पराजित कएल हुनके बेटी (यौवनश्री) सँ बिआह राज-पाट आपस आ तीन पुत्रमे महिपाल अपना दुनू भाँयकेँ काराबास वेरी देने छइ। ओइ समय कैवर्त्त बड़ पैग शक्तिशाली जाति मानल जाइत रहलइ। कैवर्त्त केँ अगुआ दिव्योक रहैथ, अपन भातीज भीम पेसर रूद्रोकक नेतृत्वमे राजा महिपालसँ लरि जुल्मक प्रतिवाद कएल। सौंसे उत्तर बंगाल वरेन्द्रीदेशक नामसँ जानल जाइ छल से भीमा कैवर्त्त राजा बनौल गेला। जिनक नव राजधानी उमरनगर बसाओल गेलइ। इतिहासकार अधिक विवरण नहि देलैन। तेकरा मानसिकताकेँ की कहबै? ❑

मैनेजर स्व. मखसुदन भण्डारीजीक पुण्य स्मरण

सिपौल जिलाक मरौना (बेलही) प्रखण्ड, अनुमण्डल- निर्मली अन्तर्गत एकटा प्रसिद्ध गाम अछि- गम्हरिया। ओही गामक स्व. संजीत भण्डारी आ सोनियां देवीक घर 'बौआ' केर जन्म भेल रहए। 60 सालक उमेरमे अपना कुलहरिया पंचायतसँ सरपंच पदक पूर्व उम्मीदवार (1978) तइसँ पहिले जतरा लोकनाच पार्टीक मैनेजर दिवंगत मकसुदन भण्डारीजी परोपट्टाक चर्चित मान्यपंच रहैथ। हमरा गामक बहुतो पुरान बुजूर्ग यथा-रामजी बाबा मुखियाजी,बच्चन कामति, लखन मास्टरजी, बिकन कामत आदिसँ बेसी घुलल-मिलल रहैथ। हुनकर सम्बन्धी सम्पर्कीय लोक फुलपरास, बिहार विधान सभाकेँ विभिन्न मतदातागाम जेना कि सूरियाही, परसा-नवरौली, मुसहरनियां, अलोला, हटनी, शहोरबा, सरौती, देबनाथपट्टी, मैनहीं, किरतपुर, झिटकी, बथनाहा आदि गाममे छेलैन। जेतए ओ बेर-बेर जाथि अपन टीमक संग राजनीतिक जागरण करैत रहला। हुनका गड़वाक स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय अनन्तलाल बाबूसँ प्रेरणा आ पैघ वार्तालाप भेल रहैन। तेकरे निष्कर्ष निकालबाक लेल 1952 इस्वीसँ जीवनक आखरि समय धरि केवट कौमसँ माननीय विधायक बनेबाक सतत परियास करैत रहला। भूतपूर्व मंत्री हरि प्रसाद साह हुनकासँ किसनपुर क्षेत्र (निर्मली) मे सेहो बहुतो बेर सामाजिक राजनीतिक मदैत लैत रहैन। मैनेजर साहैब मरौनाक अंचल सह प्रखण्ड कार्यालयकेँ बेलहीमे खुट्टा गाईर विरोधी ओरसियलकेँ दश गोटेमे चूरकीपकैर मारैत आखिरी दमधरि सरकारी कार्यालय कायम करेबामे समर्थ भेला। तत्काल ओ आफिस निर्मलीक दछिनवारी जुट गोदाममे चलैत रहलइ। गाम-गाममे पोखरिक उराही मखान आ माछ पालन अपना इलाकाक ईनरबा, मौआही, पररी, लालपुर, ललमनियां आदि गाममे केलाह। अइ रचनात्मक काजमे हुनक पितीयौत काका भुलर भण्डारी दफेदार साहैब बड़ संग पुरनि। ओ शोशलिस्ट आन्दोलनकारी छद्म रूपेँ रहैत राम धरक्का सिंघ नाच मेरियाकेँ ठाढ़ सेहो कैने

रहैथ। मुंशी प्रेमचंदजीक अनेको कथापर आधारित हुनक नाच खूब जमै, तँए आलापुर, पचही, जबदी, नारेदीगर परगाना सहित नेपाल अधिराज्य'क जोगबोनी बिराटनगर केर लगपास कतेको जगह ऐतिहासिक नाच भाव-भंगिमाओ संग करैत यश बटोरलैन। जाहिसँ अइ क्रममे कियोट जातिक पता लगाबैत हुनका लोकनिमे सेहो प्रेरणा भरैत रहला। आ फुलपरास क्षेत्रकेँ निरुत्साह पछुआएल कैवर्त कहिया धरि एम.एल.ए. पदकेँ शुसोभीत करतैक, तइले नीक तरहेँ सघन जन सम्पर्क केलाह। तीर्थराज घुमंतु यात्रा'क यायावर मामूश्रीकेँ स्मृतिशेष, विशेष नमन।

कुर्सीनामामे नारायण भण्डारीजीकेँ दूगोट पुत्र क्रमश: रूपन आ छत्तन छेलैन। रूपनकेँ तीन पुत्र भेलैन जे भीखर, सौली आ लक्ष्मण रहैन। सौलीकेँ सेहो तीन पुत्र भेलैन, यथा- मोती, संजीत आ जयलाल। मोतीजीकेँ एकमात्र पुत्र भेलैन फेकू बाबू। संजीतकेँ दूगोट पुत्र मकसुदन आ पृथ्वी लालजी, आओर जयलालकेँ एकमेव पुत्र बौएलाल रहैन। मखसुदन भण्डारीकेँ कपलेश्वर आ कीर्तन नामक पुत्र प्राप्त भेल छेलैन। स्व. कपलीजीक जेष्ट बालक अपना वार्डक जीतल जनप्रतिनिधि छैथ। नाओ छिऐन रामबाबू जीबछ। ❑

युक्ति संगत वनाम तर्क संगत

हौ डिहवार थानक देवनाथ ब्रह्म बाबा! कबुला करै छिअ जँ मिथिलांचल केर शोषक वर्ग (फारवार्ड) अपना इलाका'क शोसित वर्ग (बैकवार्ड) कैँ ऊपर दया-दरेग राखए लागत तँ हम सहिकऽ साँझ देब, संगहिँ पल्ला घोड़ा चढ़ेबह! भारतमे सुराज तँ 75 साल पूर्वहिं लिखितमे भेटल छै, परन्च किछु बुधियारे लोक तेकर फेदा उठौलैन। आ जिनकासँ पिछड़ल-दलित तबकाक धनिक लोक दोस्ती जोड़ि भारदौर धरि चलबैत रहला। तँए कि मिथिला'क इतिहासमे जगह पाबि जाएत। ह ह:! ओतए तँ अपनेमे पैघौतक लेल तरका लराय अदौसँ बांझल छैक जे अद्यतन फरिया नहि रहलइ। 'मिथिलाक इतिहास' केर पोथी लेखक स्व. डॉ. उपेन्द्र ठाकुरजीक कहब छलन्हि भित्तिचित्र माँटिक देबालपर बाहरसँ उकेरल जाइत अछि, जाहिकैँ काँचसँ सुखलापर निपलाक-छछरबाक बाद अनेक रंगमे रंगल जाइत रहए। ओइ आकृतिक मिथिला चित्रकारी मुरन, जनेऊ पूजा, बिआह-द्विरागमन आदि अवसरपर चाटपाट आ मजुर, सुगा, माछ, काछु लत्ती एवम् गाछ तथा भगवान आ भगवतीक काल्पनीक चित्र भितुरका देवालपर एतए धरि जे कोहबर घर आ गोसाउनिक गृहक भीतरमे छापल-रंगल जाए लागल। तइमे ब्राह्मण शैलीक रंग- गुलाबी, पीयर, बैगनी, नील, सेनूर आओर सुगापंखी आ कारीरंग खरपात जरायके; खापड़िक पेनीक कारीखसँ तथा उजरका रंग अरबा चौरक पिठारसँ, सीमक पतासँ हरियर आ कुसुम फूलसँ आलरंग बनाबैत अपनाएल गेल छइ। मिथिलाक कायस्थ जातिमे सेहो उक्त अवसरपर मात्र कारी आ कमलपत्री रंगसँ सजीव चित्रण करैक उल्लेख कएल गेल अछि। ब्रह्मणी कलाकार जे बेसीतर सभ घरक स्त्री गृहकाज सम्पन्न भेलासन्ता बैसारीमे लिखिया-पढ़िया (पेंटिंग) करैत अछि। रंग आ चूर्णकैँ बकरीक दूधमे घोरि कए करचिक कुची (तूलिका), मतियारंग (हलुक) आ गाढ़ मजीठरंग (गभगर) सँ मुरूत सन भित्ति चित्र कऽ अनुकृति यथा- गाछ, रेल, पातील, पुरहर, नगहर, बियैन, सरबा, कौरनी, कलशापर आब कैनभस,

काडबोडपर उकेरल जाइछ। मधुबनी पेंटिंगक नामसँ बहुतो ग्रामीण कलाकार बिहार राज्य स्तरसँ भारत देश स्तरपर सुविख्यात भेली अछि, जिनक बनौल मिथिला (मधुबनी) चित्रकला विश्व व्यापारक एकटा अद्भुत उत्पाद धरि मानल गेल। तेकर हरसठे विकास होइ आ नव कलाकार प्रशिक्षण लिअ, से सरकारी स्तरपर संस्थान आओर आई.टी.आई.मे अल्पकालिक विशेष तालिम सेहो आरम्भ भेल अछि।

समाजमे जाहिकेँ 'आर्चर' मिथिलाक भीतघरबला पछुआएल वर्गक भित्तिचित्र देखि कहलैन, तइकेँ मात्र ब्राह्मण आ कायस्थ कऽ लोककला कहैत इतिहासकार डॉ. उपेन्द्र ठाकुरकेँ इहो देखबाक रहैन जे आखिर बकरी पालन तँ ई दुनू जाति नहि करै छैथ, करबो करैत होथि तँ बकरीक बेटा (छागर) अल्पकालीन लेल, जेकर दुर्गापूजामे बलि चढ़बै छइ। आ से छागर कतौ दूध देलक अछि। बकरीक दूध पिछरल वर्गक ओइठाम सहजे रूपेँ अखनो भेटैत अछि, जेकर पुश्तैनी धरोहर थिकैक भित्ति चित्र। परञ्च एकर देखौंस मिथिलामे अगूआएल तबका करैत चरमोत्कर्षपर अछि। अइ सन्दर्भमे अध्येतागण अन्वेशन करैथ। हस्तचित्र कला यथा- पनिभरनी, घोड़ा आदि सुस्मिता बनाबैत अछि। ❑

मिथिला राज्य'क औचित्य : एक विमर्श

भारतमे बिहार राज्यक 24 आ झारखण्डक 6 जिलाकेँ सकल भूभागमे मैथिली भाषा -भाषी लोक निवास करैत अछि। तेकरा मिला कए एक पृथक मिथिला राज्य निर्माण हुअए, से मांग पैछला 300 सालसँ कएल जा रहलैक अछि। ओना मैथिली भाषामे नेपाल देशक दक्षिणी तराई भुभागक 7 जिला भारतक सीमावर्ती क्षेत्रमे सेहो ई भाषा बाजल जाइत अछि। जे आब बिहारमे मिला कए अलग मिथिला राज्य हुअए, से अन्तर राष्ट्रीय इलाका हेबाक कारणेँ कठीन छइ। ब्रिटीश हुकुमतक समयमे सुगौली समझौता'क अधिन सामरीक दृष्टिये जे सीमा रेखा घीचा गेलैक ओ आब यथाबते रहत। तैयो रोटी-बेटीक सम्बन्ध आ सांस्कृतिक जागरूकता लेल भारत-नेपाल मैत्री सदैव बनले रहत। ओना नेपालमे मैथिली भाषाकेँ संवैधानिक मान्यता रहल अछि। भारतक संविधान कऽ अष्टम अनुसूचिमे सेहो नेपाली भाषाकेँ मान्यता देल गेल छइ। आजादिक पूर्व ब्रिटिश सरकारक एक अफसर भाषा सर्वेक्षण 1881 इस्वीमे ग्रियर्सन महोदय करौलैन आ मिथिला नक्शा बनाबैत भारतक शब्दकोशमे मिथिला शब्द जोड़लैन। धार्मिक रूपेँ प्राचीन समयसँ बाल्मिकी रामायण कालीन समयमे जनकजीक मिथिला राज्यक चर्चा होइत आबि रहल अछि। से प्रमाण रूपेँ शतपथ ब्राह्मणमे भेटैत अछि। मिथिला शब्दक वर्णन महाभारत आ पुराण आओर जैन ओ बौद्ध साहित्यमे सेहो कएल गेल छइ। मिथिला राज्य बनए तहिक समर्थनमे अनेकानेक लोक अगुआ बनि जन- जागृति करैत रहला अछि। अइ ज्वलंत माँगक व्यापक जन समर्थन कहियो नहि भेटलाक कारणसँ आइ धरि ई माँग प्रमुखतासँ कएल जाइये रहलैक अछि। अभिप्राय ई छैक जँ मिथिला राज्य निर्माण भऽ जाएत तँ मिथिलामे औद्योगिकीकरण आ विकास सम्भव भऽ जाएत!

मिथिला अपन सभ्यता आ सांस्कृतिक लेल अदौसँ चर्चित क्षेत्र रहल अछि। मिथिला कऽ इतिहास पोथी लिखैत डॉ. उपेन्द्र ठाकुर कहने छैथ 'प्राचीन

भारतक राजनीतिक आ सांस्कृतिक जीवनमे मिथिलाक महत्वपूर्ण भूमिका रहलइ। ई भूमि महान राजतंत्र तथा गणतंत्र सभक उत्थान-पतन देखैत आबि रहल अछि।' युवा रचनाकार सुभाष कुमार कामत पत्र-पत्रिकामे कतेको बेर मिथिला राज्य निर्माणक बाबत अपन सम्यक कथ्य प्रस्तुत कएने अछि। अइ 30,000 वर्गमील क्षेत्रक तिरहुत लेल राज्यक माँग पहिल खेप 1912 इस्वीमे कएल गेल छेलइ। जहन बंगाल प्रोविंगसँ बहरा कए पृथक स्टेट बनल। तेकरा बाद 1936 इस्वीमे उड़िसा आ 2000 इस्वीमे झारखण्ड बनि निकलल। प्रस्तावित मिथिला राज्य निर्माण लेल बिहार'क आ झारखण्ड'क कतेको जिलासँ बनल नक्शाकेँ एक दशकसँ मिथिलांचल कोसी विकास समिति-हटनीक 'कोसी-सन्देश' तिमाही मैथिली साहित्य पत्रिकामे आओर पहिलेसँ डॉ.धनाकर ठाकुरजी ओइ नक्शामे उत्तर भागक नेपाल क्षेत्रक कतेको जिला कऽ मानचित्र अपन दू पनियाँ मैथिली बुलेटिन केर माध्यम प्रकाशित ओ प्रसारीत करबामे अपश्याँत छैथ। भारत आजाद भेलासन्ता कतेको लोक, संस्था-समिति आ राजनेता मिथिला-मिथिलाक रट लगौने चलि गेला; कतेको बाँचल वयस क्रम बुढ़ाड़ीमे अइ लेल संलग्न छथिए। किछु नव -पुरान लोक ठाम- ठाम मिथिला लेल अनवरत काज करै छथिए। लेखन क्षेत्रमे लागल कवि-कवयित्री आ विद्यार्थी वर्ग सेहो अइ लेल आन्दोलित अछि। कृषि, उद्योग-धंधा, शिक्षा आ सांस्कृतिक विकाससँ तिरहुतक प्रगति होएत। एतुका समृद्धि लेल किछु बुद्धियार लोक अपन जीवनमे आगू बढ़ल अवश्य, परञ्च मैथिली सेवी आ आन्दोलनकारी लोक अपनाकेँ ठकाएल सन बादमे बुझलक। बेशी ठकलक स्थापित राजनेता, जे लोक लुभावन आ भावनात्मक रूपेँ सामाजिक कार्यकर्त्ताकेँ पाछु-पाछु बौएबैत रहलइ। मिथिला वा तिरहुत केर कायाकल्प लेल फुसिये आश्वासनपर भरोस करैत राज्य सत्ताधारी नेताकेँ मिथिला राज्य आन्दोलनकारी गणमे सँ किछु गुटबाजीक कारणेँ लोक सेहो पछोर धेलैन। तइ सभसँ ई ज्वलंत कारगर मांगक धार भोथर होइत गेलइ।

इतिहास कऽ अध्येता इहो पबैत अछि जे 1326 इस्वीमे मिथिला'क राज्य शासक हरिसिंह देव एक श्री रघुनन्दन राय ब्राह्मणकेँ 1700 गामक सर्वेक्षण करय कहलैन। ओ सर्वेमे मात्रे ब्राह्मण आ कायस्थ जातिक 18. मूल

बाश आ 1529 मूलक ग्रामडीह कऽ उल्लेख कए बंशवृक्षक जनतब एकत्र कएलन्हि। भुमिहार, राजपूत आ वैश्यमे किछु धनिक लोक अपन पंजी बनबौलैन। ओइठाम वर्णरत्नाककेँ झूस ओ उपेक्षा भेल आ आन दोसर जातिक वंशवृक्ष (कुर्सीनामा) नहियेँ बना पेयलैन। जखन कि हरिद्वारमे प्रचलित हिन्दू वंशानुक्रम पंजी प्रबन्धन भऽ गेल छेलइ। पिछड़ा तवकाक सात पीढ़ी पूर्वक बंशावली सूचि देखैले जग्रनाथ धाम- पुरी आ सिमरियाक पंडाजी लग सेहो यजमानक संक्षिप्त पंजी छैन। अइ मिथिला राज्य निर्माण आन्दोलनकेँ परोक्ष समर्थन मैथिली लेखक आ साहित्यकार लोकनिक रहलैक अछि। मैथिली भाषाकेँ महत्वपूर्ण माँग प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जीक निर्मलीक घोषणासँ अष्टम सुचीमे संविधानमे जुटल। ईएह 2002 इस्वीमे सफलताक संगे दोसर जे माँग छुटल रहलैक 'मिथिला राज्य' निर्माण, तइले खुब लेखकीय कलमकार जन अभियान चलाबैत कलमकेँ रफ्तार दैत गतिमान अछि। सब लोक तँ तमशगीर अछि, किछुए लोक ओइ भीड़सँ निकैल कए मिथिला राज्य आन्दोलनमे हृदयसँ जुटल छैथ। आब नारी शक्ति ओ नवजुवती लोकनि सेहो संघ बना आन्दोलन तेज केलैन आ लिखैक काज सेहो करै छथिन। युवक लोकनि आ विशेष कए विद्यार्थी वर्ग राष्ट्रीय राजधानी दिल्लीमे महा धरणाधरि केलैन अछि। डॉ. प्रमोद कुमार कवि कहै छैथ-

.....तौर तर्क जीनगी। सुनगलै आइ
लड़ि कए लेबै आब मिथिला राज
आइ फांढ़ बान्हि लेल समाज
शीतल बसात स्वच्छ जलधारा
सबजनामे हेतै भाईचारा
मुग्ध मगन मैथिली भऽ जेती
आशिषक हाथ माथपर रखती।।

पिछड़ा परश्त विद्रोही नवांकुर कवि दीनानाथ प्रसाद जुवराज केर 'परिचय' मैथिली काव्य संग्रहमे चिंगारी कविता आइ काल्हि यूट्युबपर खूब

धूम मचेने छइ। किछु पाँति देखि कए सहजे पाठक अकानि सकैछ भावकेँ। यथा-

मिथिलामे आब मन नहि लगैए

सोचै छलियै.....आब हेतै भोर

मुदा.... मिथिलामे तँ घुसि गेल अछि चोर

दोसरो पाँति देखू-

संस्कृत चाटि-पोछि लेपलहुँ चानन

आब मैथिलियोकेँ खाइक लेल

अहाँक आतुर आनन

अहींकेँ चाही’मिथिला राज' ....

मिथिला राज्य केर समर्थनमे जतेक मिथिला बासी छैथ, तइक कए गुणा मिथिला राज्य'क विरोधमे छैथ। अइ बेरक जातीय गणना भेलासन्ता आँकड़ा वास्तविक रूपैँ पटलपर आबि जाएत। भारतमे छोट-छोट राज्यक माँग प्रमुखतासँ समक्ष आबि रहलैक अछि। तेलंगाना राज्य बनलैक, तेकरा बाद आरो विदर्भ प्रभृति कतेको नव राज्यक माँग जोर पकड़ने जाइत अछि। मिथिला दू देशमे बँटल रहलासँ जँ पृथक मिथिलांचल राज्यक माँग उठैत तँ श्रेष्यकर रहैत।कारण बिहार झारखण्ड केर आंचलिक भाषाई क्षेत्र मैथिली थिक, जे मिथिलांचल राज्य बनबाक सभ तरहेँ अहर्ता रखै छइ। जँ मिथिलांचल आ नेपाली भुभागक मैथिली भाषा-भाषी प्रक्षेत्र सामरीक दृष्टिकोणसँ एक भऽ सकए, तखने मिथिला राज्य बनि सकैत अछि। आबए बला समयमे ई व्यापक विमर्श केर विषय छी। विद्यापति सेवा संस्थान -दरिभंगा, मिथिला विभूति स्मृति पर्वक स्वर्ण जयंती समारोह आयोजन करय जा रहल अछि; सफल होइ से कामना रहत। (विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा मणीकान्त झाक सम्पादनमे प्रकाशित) ❑

बहिर्मुखी कामैत कौम

देश आ दुनियाँक एकटा सन्मार्ग सार्वभौम सांस्कृतिक पहिचान दिएवा लेल सोल्कन केर कान्हपर आइ सभसँ बेसी नैतिक दायित्व छइ। सामाजिक जागरूकता आ राजनीतिक जागृति आधुनिक समयमे आबए तइले डॉक्टर राम मनोहर लोहियाजी कहने छैथ- 'आए दुर्भाग्य छैक जे शूद्र- अधिकशूद्र ओतेक नीक जकाँ विषय प्रसंगकेँ नहि बुझि सकैछ', व्यापक बहस नहि कए पबैत अछि, जतेक नीक तरहेँ अन्याय केर विरुद्ध लड़ि भीड़ सकै छइ। ब्राह्मणक कुवाणीमे बैकवर्डकेँ रार-छोटका आदि अइले देहाती क्षेत्रमे कहल जाइछ, ओ अपनामे मिलानसँ सम्मती पूर्वक जीवन निर्वाह करयसँ फराक रहैछ, भाई भाईक बीच एकटा अनरनेवा गाछ, अत्ताक-शरिफा गाछ खातिर सीमा विवादमे खून वहबैत अछि। टाट-फरक लगेवाकाल एक भाई दोसर भायक हत्या करैत अछि। पालतू पशुक गोबरसँ गोईटा-चीपरी पाथि कोठापर सुखेबाकाल झंझट करै छइ। अमीन आ मान्य पंचसँ फैसला कएल जगहपर बाँस लगाएल वल्ला अलोपीत करैत बाले-बच्चेँ महिला मेहर सहित झगर बजारैत अछि। बाड़ी झाड़ी'क मुनगा, नेबो आ फूल तोड़ैले आफद बेसाहैत अछि। कलम गाछीमे केरा खातिर बीजू आम खातीर विखैन गाड़ि फजहैत करैत मारि ठानैत अछि। बाधमे खेत पथारक आड़ि छँटनी कए बाधबोनक झगर गामपर आनैत अछि। केकरो बेटा-बेटीक पढ़ाइ नीक देखि जरैत- प्रतिशोध करैत अछि। नीक खानपीन देखि, नीक पहिरब देखि जलनशील बनि जाइ छइ आदि। एहिसब दुर्गुण केर अन्त:कथाक रूपमे जन्म लै छै निच्चाँ देखेबाक अफवाह षडयन्त्र। जाहि कारणेँ पंच, सदस्य, पैक्स अध्यक्ष, मुखिया, सरपंच, समिति, जिला पार्षद, विधायक- सांसद, मंत्री आदि पदप्रतिष्ठापर मजगूत समर्थनक जगह विपरीत काज होइसँ सामाजिक क्षति होइछ। आब तँ मतक एवज दबल जुबाने बाजि उठैछ जे टाकापर भेटत, से सरिपहुँ स्वजातीय भानकेँ तिलांजलि दैत, एकताकेँ बिसरैत दोसरा समाजक धनवानकेँ वोट करैछ, जे लोकतंत्रक हँसी

उड़ौल जाइत अछि। अपना स्मिताक रक्षा लेल लड़ब छोड़ि, दोसरा समाजवर्णसँ मित्रता राखि तेकरा सभ तरहेँ शक्ति प्रदान करैमे हरदम लागल रहैत अछि। जातिक मान्यजनी सभा भोज तँ एखनो होइछ, परञ्च ओइ विचार धाराक तहत दर्जनो मुख्य पुरुष जे बैसि कए निर्णय करताह, तइले समयाभाव रहैछ, सर्वत्र तँए गीराबट होइत जा रहल छइ। अइसँ उबरबाक लेल स्मृति केर खियाल राखैत नव ऊर्जा संचयन लेल जहन जातीय बैसार परगना स्तरपर होइत अछि तँ ओइ प्रतिनिधिगणक मादे गामक समान्यलोकक एकटा दोसरे तरहक टिप्पणी सुनबामे आओत ‘यौ, बोटक बेगरता सामनेमे छैक-चुनावी वर्ष लागिचाएल छै, तँए तैयारी हेतुअ किछु बुधियार लोक एहेन सम्मेलन- गोष्ठी बजेने हेतैक।” तँए जनसजगता लेल गामे-गाम अथबा पंचायत स्तर धरि कोनो संगठनक प्रसार-गठन होएब परम आवश्यक होएत जइसँ समस्त समाजक ससमय विषय प्रवेश करा सकी। आब ओहो बुझय जे हमरासँ संवादहिनताक स्थिती नहि बनौने छैथ। आ तेकर एकटा पैघ सबलता सेहो आओत जइसँ सहयोग भेटत आ अधिवेशनकेँ संख्याबल केर बहुलता सेहो होएत। अन्यथा शहरी-लोकक सुलभ पहुँचसँ पटना-दिल्लीमे तँ लोकक जमावड़ा भऽ जाएत परञ्च देहात कस्वासँ लोक कम संख्याँमे सम्मलित होएत। अइ सभ नान्हिटा बातपर गौर करब परमआवश्यक। अइ तरहक जनसमस्या समाधान लेल खलीफा स्वर्गीय लखन कामत तबालचि (ग्रा.+पो. परसा) सदिखन चिन्तित रहै छला। परम श्रद्धेय ढोलकिया पीसाजीकेँ सादर शिर साष्टांग दण्डवत।

हुनक वंशवृक्ष दसरथ पेसर लालजीकेँ एकपुत्र रहथि लखन। लखनकेँ भेलैन चारि गोट पुत्र क्रमश: बिक्रम, शिबजी, सत्यनारायण ओ भीखारी। बेटी छैथ नवानीमे रामदाय आ पचगछियामे महालक्ष्मी देवी। सत्यनारायणसँ सभ मातृक-नौआबाखैरमे बसोवास रहल, जेष्ठ भाय जन्मभूमिपर छैन। ❑

विद्यापति आत्मकथा केर दृष्टिबोध

विद्यापति'क आत्मकथा 'उपन्यास' गोविंद झा कृत १९९३मेँ बहरायल रहय। शेखर प्रकाशन पटना'क एहि मैथिली पोथीक दाम ५०टंका सस्त संस्करण ३०टाका धरि राखल गेल छइ। एहिमे १२६ पृष्टांकित अछि। ४५ अध्यायक पाठ केर अतिरिक्त आखरि पन्नापर भनितामे बहुत किछ वयोवृद्ध लेखक महोदय कहि चुकल छैथ। लेखकक विषयमे संक्षिप्त जनतब दूनू भीतरक कोभर पर स्पष्ट देल गेल अछि। तैयो पाठक वर्गके मिथिला'क इतिहास आ प्राचिन मैथिली साहित्यमे रुचि रखने उपन्यासक कथ्यशैली पर विवेचना करब आवश्यक बुझायत। विद्यापति'क युग आ हुनक वांग्मयक विशेषज्ञ प्रो. कृष्णचन्द झा"मयंक" जी सँ हमरा मिथिला विभूति स्मृति समारोह हटनी मेँ बहुतराश गप्प भेल रहय। ताहि प्रसंग किछ प्रश्न मोनमे औनाइते रहि गेल, तेँ अपन दृष्टिकोण राखब परम आवश्यक सन बुझना गेल हन्। विद्यापतिक आत्मकथा हिनक सर्जनात्मक कृर्ति थिकैन। एखनो सयसालक उमेरमे लिखल एकटा नव पोथी मैथिली भाषीक बीच अधिक चर्चामे अछि। हिनक पूर्वमे सामाक पौती कथा संग्रह आ अंतिम एकन्नी रचना जगतमे विशेष रूपे मैथिली साहित्यक अक्षय भंडारकेँ भरने अछि। प्राय: कथाकार सँ रचनाकार लोकनि उपन्यासकार होय दिश बढैत अछि, से हिनको पर उतरै छइ। समकालीन मैथिली भाषामे संवेदनात्मक गद्य लेखन कार्यमे कथा बेसी आ उपन्यास कम लिखाएल अछि। ताहिमे हिनक भुमिका नीके कहक चाही; परंच मिथिला समाजक जनसंख्या आधारित अभिज्ञान तँ हुनका पकठोस रहबा सँ बंचित कैने छैक; एहि उपन्यासके अभिजात वर्गक समर्थन बेशी भेटल अछि।परंच वैदेहीक अंकमे रमेश चन्द्र झा सद्यप्रकाशित उपन्यास बावत धज्जी उड़बै छैथ।

"विद्यापतिक आत्मकथाक" आरम्भ विद्यापति द्वारा अपन जिंदगीनामा केँ घुरमे सुड्डाह करैत भेल अछि। परंच पौत्र नोने द्वारा महाकवि कऽ

आत्मकथाकेँ आगि सँ सुरक्षित निकालि देल गेल अछि। तदुपरांत, विद्यापति अपन जीवनक अमूर्त भावक चीरफार आरंभ करै छैथ। "हम झप्पा खोलल। ओहिमे सँ किछ पोथी बाहर कय कातमे राखल । शेष पोथीक बन्हना खोलि-फोलि आ काठक पटरी हटा-हटाय ओकर तड़ित सभ पर दोसर कात थकियाओल। तखन बन्हलाहा पोथी सबके फेर ओहि झपामे दय लेल आ नोनेके अज्ञा देलिऐक, आब ई झप्पा जतय छलैक ततहि राखि आबह।पृष्ट-१ एहि तरहेँ उपन्यासक हिंदी जेकाँ शुरू भेल छइ। उपन्यासक कथावस्तु नान्यवंशक अंतिम अकर राजा हरिसिंह देवक नेपाल पलायन सँ शुरू होइत अछि। दरवारक प्रधान पंडित आइनवार वंशक संस्थापक पुरुष कामेश्वर ठाकुर द्वारा शासन करब,फिरोजशाह तुगलक द्वारा हिनका सकर राजा घोषित करब,कामैश्वर ठाकुरक तीनगोट कुमारमे राजगद्दी कऽ हेतु राजकीय दावपेंच चलायब, असलान द्वारा गणेश्वरक हत्या,राय अर्जून एवं शिवसिंहमे जनमी दुशमनि ओइनवारवंशक ड्योढिक चारि खण्डमे विभाजित होयव, कृर्तिसिंह द्वारा हाजीपुरक तुर्कके पराजित करब, देवीसिंह द्वारा वागमतिक किनारमे देवकुली गाममे अपन राजधानी बनायब, शिवसिंह द्वारा राजधानीक स्थानमे परिवर्तन कए गजरथपुर किलाघाटमे नव वास्तुकलाक नींवदेव आदि मिथिलाक मध्यकालक इतिहास कथोपकथन शैलीमे एहि उपन्यासमे भेटैत अछि। एहि प्रसंग संध्या गायत्रीक जप,माटिक महादेवक पूजा,सोहरक स्वरलहरी, विशिष्ट मूल गोत्र सोदरपूरिए, खौआरए एंव माण्डर कुलक विशेष चर्च,विसयबारक उपेक्षा, मूलक आधार पर एक-दोसराके छोट-पैघ बूझब, चौपाड़ि शिक्षाक केन्द्र, दर्शन् न्याय -नव्य न्यायक अध्ययन, दियादि कलह,वा र्ता लेव,स्त्री एवं दास बिक्रय असहनीय कर भार अधिक उल्लेख एहि साहित्यिक कृतिमे कयल गेल अछि। रेणुकादेवीक मुसलमान आक्रान्ता द्वारा बलात्कारक परियास आ मिथिलाक धर्मशास्त्री द्वारा ओकरा अजाति बुझब, परंच विद्यापति द्वारा ओहि भागल जनिजात रेणुकाकेँ अपना घर में राखि मौसी बनाएब नीक वर्णन अछि। १४म् शताब्दिमे विद्यापति प्रगतिशील देखेलाह अछि। तैयो ई विद्यापति 'क आत्मकथा नइ भऽ कऽ शिवसिंह'क आत्मकथा मानल जायत। विद्यापति कऽ जीवन चरितमे ई कतुहुँ लिखल नइ य जे वो संस्कृत शिक्षा ग्रहण करबाक हेतु

सरिसबपाही अयलाह।से बात इतिहास सम्मत नहिं रहैत गोविन्द झा वर्णन धरि कयलन्हि,एकरा साँच नइ मानल जा सकैत अछि। लेखक स्वंय माण्डरवंश सँ सम्बन्ध रखैत छथि तेँ तत्कालीन मिथिलाक मात्र पाँजिबाला ब्राह्मण एवं शिक्षितकर्ण कायस्थक चर्च कयने छैथ। मिथिला'क अस्मिता किसान चेतना सँ जुड़ल ऐ जेकरा यात्रीजी उजागर कयलैन। विद्यापति'क आत्मकथामे मिथिलाक किसानक साक्षात्कार,ओकर सामाजिक-आर्थिक दशाक चर्च भुलहुँ सँ नइ भेल अछि। एतौका संस्कृति,धरोहर आ माटि पानिक दिग्दर्शन नहि कराबैत अछि। तेँ ई मथिलाक उपन्यास नइ ओईनवार वंशक विरूदावली वा शाहनामा कहल जा सकैछ। एहिवंशक पदाधिकारी द्वारा सर्वहारा आ किसान रुपन मड़र सँ पूर्ण लगान नहिं अदाय केने मंत्रीवर चन्द्राकर ओकरा हरीमे ठोकि पीठपर छौंकियाबै छइ। एकदिवसीय स्त्रीपूजा होइत अछि तँ दोसर दिस स्त्रीदासी कैँ बेचबाक परम्परा देखमे अबैछ। तेँ ई ऐतिहासिक उपन्यास नहिँ वरण ओइनवार शासकक ई तिवृति मात्र थीक। एहि पोथीके सुविज्ञ पाठक विद्यापतिक पाँति रचनावली बुझत। ❑

कजरी विशेष

उत्तर भारतमे विशेषत: बिहार आ नेपालक मिथिलांचलमे साउन मासक कजरी गीतक एकटा अलगे उच्छास होइत अछि। मधुरतम संगीत स्वर लहरिक छँटा बाधबोनमे सेहो कृषक आ कृषिश्रमिक अपन लगाएल धनखेतीक हरियरी देखि कऽ हर्षित होइत अछि। परञ्च चास लगाएल खेतमे बरखाक भरल पानिसँ आ बाढ़िक प्रवल प्रकोपसँ गृहस्थक मन व्यथित भऽ उठैत अछि। आनो आन तरहक कठीन समस्या उत्पन्न भेलासन्ता यथा- कोरोना संकट आदिपर रचनाकार कजरी गीतक तैयारी करैत गाबै छैथ। बरखाकालमे बिनु कजरी तर्जपर गढ़ल काव्य सेहो कम सोहनगर नहि। चोटीक विद्वान आ मधुबनी जिलाध्यक्ष,+2उच्चतर माध्यमिक शिक्षक संघ (वाटशन हाईस्कूल) केर श्री महा कान्त प्रसाद जीक रचनामे कतेक माधुर्यपूर्ण ओ लालित्य देखाइछ; से पाँतिक एक वानगी एहेन होइछ-

...मोन मयुर थिक-संग पावस अछि
मोन पुष्प थिक संग उन्मुक्त अकाश अछि
मोन उजास थिक -संग प्रियतमक वास अछि
मोन धराव थिक संग प्रियतम वास अछि
मोन अयना थिक संग जँ किनको अर्पण अछि।

कजरीक गप्प उठौने रही, ई मुख्यत: श्रृंगार रस प्रधान होइत अछि। ओना अइमे संयोग आ वियोग दुनू तरहक भाव बर्षा ऋतुमे नीक लगैत अछि। कुमारिमे साजबाजक संग नव गायिका जे आब अपन मीठकण्ठसँ कतेको मञ्चपर प्रस्तुति दैत ओडियो कैसेट धरि बना चुकल छथिन सुश्री मैथिली ठाकुर जिनक गायिकी पाँति अइ रूपेँ होइछ-

अरे रमा रिमझिम बरसे पनियां
झूले सईयां कनियाँ एहि हरी
की आरे रामा........।।

पुरान पारम्परिक लोक गीतक स्वरूप आब बदलल जाइत अछि। लोकगीत विधामे कजरीकेँ शास्त्रीय वा उप शास्त्रीय तरीकासँ सेहो मल्हार आ तिलक कामोद जकाँ गौल जाइ छइ। सोशल साइटपर कमतौलक जयन्ति कुमारीजीक कजरी तँ वरबस पाठककेँ आकर्षित करैत अछि। देखू एक अन्तरा-

...चासबास सभ डुबल छै रे
भरलै पोखैर धार
बाट घाट घिनेलही तू तँ
बरसि'क मूसलाधार
अछि नहि किछियो भावे रे!
रे बदरा, थम्हि जो आब नै बरिसै
लोक मन आजीज केलै रे।......

कजरी पुरातनकालसँ देहातसँ शहर धरिक लोक संगीत विधाकेँ उल्लासपूर्ण ढंगे गबैत चलि आबि रहल छइ। सावन केर सोंधी गमक तँ अदौसँ कजरी बिखैर रहल अछि, तेकर कायल कियो पारखी भऽ सकै छैथ। ओना हेंजमे मुसहर (महा दलित समुदाय) जन केर पचता धनरोपैन कऽ घुरतीखन जे कजरी उठबैत अछि तँ बुझू गामेपर अयलासन्ता गाराकेँ विश्राम दैत अछि, से बड़ सुहावन- मनभावन लगैत अछि मैथिली भाषामे कजरी।

❑❑❑
❑❑
❑

<u>Notes</u>

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....